# दिव्य दिनकर

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

एक निडर सच का दर्पण

पटना और रांची से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अकं : 172 पटना (बिहार) गुरुवार,24 अप्रैल 2025 पेज - 12 मूल्य: 1 R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168


## पाकिस्तान में बंद होगा भारतीय दूतावास, सिंधु जल समझौता रोका गया : विदेश मंत्रालय

**दिल्ली व्यूरो**

दिल्ली :प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में सीसीएस की बैठक समाप्त होने के बाद विदेश मंत्रालय मीडिया को संबोधित कर रहा है। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने कहा, सीसीएस ने कड़े शब्दों में हमले की आलोचना की है। दुनिया के कई देशों ने समर्थन जताया है और कड़े शब्दों में हमले की निंदा की है। बैठक में कई फैसले लिए गए हैं। पाकिस्तानियों का वीजा रद्द किया गया है। सिंधु जल समझौता रोका गया है। महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे कश्मीर में आतंकवादी हमले के बाद फंसे राज्य के पर्यटकों को वापस लाने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए श्रीनगर रवाना हुए। सीसीएस बैठक के बाद शाम सात बजे विदेश मंत्रालय की प्रेस कॉन्फ्रेंस होगी। उधर, कश्मीर के कुलग्राम में सुरक्षबलों का आतंकियों के खिलाफ अभियान जारी है। टीआरएफ के एक कमांडर की घेराबंदी की गई है। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकवादी हमले के बाद प्रधानमंत्री आवास पर सीसीएस की बैठक जारी है। इस बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस जयशंकर, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल मौजूद हैं। बैठक में बड़ा फैसला लिया जा सकता है। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर थोड़ी देर में सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीएस) की बैठक शुरू होगी। यह बैठक प्रधानमंत्री आवास पर होगी। बैठ की की अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। वह कुछ देर पहले ही श्रीनगर से दिल्ली पहुंचे। बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस जयशंकर, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल भी शामिल होंगे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित प्रधानमंत्री आवास पहुंच गए हैं। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा

ओली ने ट्वीट किया, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से बात की और पहलगाम आतंकवादी हमले में लोगों की मौत पर अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। नेपाली नागरिक की मौत पर उनकी हार्दिक संवेदना के लिए आभारी हूं।' पहलगाम आतंकी हमले पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा, 'यह घटना निंदनीय है। ये एक प्रकार से भारत को विभाजित करने का प्रयास था। ऐसे प्रयासों को हमें विफल करना चाहिए और ऐसे तत्वों को कुचल देना चाहिए। महाराष्ट्र के जिन 6 लोगों की (पहलगाम आतंकी हमले में) मृत्यु हुई है, प्रत्येक पीड़ित परिवार को 5 लाख रुपये देंगे।' जम्मू कश्मीर में हुए आतंकी हमले के मद्देनजर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का असम दौरा स्थगित कर दिया गया है। राष्ट्रपति मुर्मू को तय कार्यक्रम के अनुसार, गुरुवार की शाम को गुवाहाटी में आधिकारिक कार्यक्रमों में शामिल होना था। असम के राज्यपाल सचिवालय ने राष्ट्रपति का दौरा स्थगित होने की सूचना दी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, 'कुछ न्यूज चैनल्स और सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें चल रही हैं कि पहलगाम हमले में कई आईबी अधिकारी घायल हुए हैं, वे भ्रामक खबरें हैं। इसे मासूम पर्यटकों की मौत को न्यायोचित ठहराने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। सिर्फ एक आईबी अधिकारी की हत्या हुई है और वे भी छुट्टी पर थे और अपने परिवार के साथ घूमने गए हुए थे।' जम्मू-कश्मीर मुख्यमंत्री कार्यालय ने पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए मृतकों के परिवारों के लिए 10-10 लाख रुपये, गंभीर रूप से घायलों के लिए 2 लाख रुपये और मामूली रूप से घायलों के लिए 1 लाख रुपये की अनुग्रह राशि की घोषणा की है। मुख्यमंत्री कार्यालय ने एक बयान जारी कर कहा कि 'कल पहलगाम में हुए घृणित आतंकवादी हमले से गहरा सदमा लगा है और बहुत दुखी हूँ।

## लालू यादव ने बिहार को लालटेन युग में धकेला, तब यहां फिरौती ही धंधा हुआ करता था

**राजनीतिक संवाददाता द्वारा**

बेगूसरायः केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने बिहार के विकास को लेकर एक बार फिर आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव पर निशाना साधा है. उन्होंने कहा कि लालू यादव के शासनकाल में बिहार को पीछे धकेल दिया गया था और उस दौर में राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति बेहद खराब थी. ₹लालू यादव ने बिहार को लालटेन युग में पहुंचा दिया था. उस वक्त राज्य में सिर्फ फिरौती का उद्योग चल रहा था. 30 साल के युवाओं को शायद याद भी नहीं होगा कि बिजली नाम की कोई चीज नहीं होती थी.₹- गिरिराज सिंह, केंद्रीय मंत्री 'लालू यादव के पास नहीं बची नैतिकता' : बेगूसराय में पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि लालू यादव के पास अब इतना नैतिक आधार नहीं बचा है कि वे विकास पर बात कर सकें. गिरिराज सिंह ने कहा कि नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार ने बिहार में जितना विकास किया है, उसकी तुलना में लालू यादव कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं. गिरिराज सिंह की चुनौती : गिरिराज सिंह ने लालू यादव को खुलेआम बहस की चुनौती भी दी और कहा कि अगर लालू यादव को बिहार के विकास पर बहस करनी है तो भारतीय जनता पार्टी या एनडीए का कोई भी कार्यकर्ता गांधी मैदान हो या फ्रेजर रोड, कहीं भी बहस के लिए तैयार हैं. एनडीए काल और बिहार

में विकास : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की योजनाओं की चर्चा करते हुए गिरिराज सिंह ने कहा कि बिहार के बिना पूर्वांचल और पूर्वांचल के बिना देश का विकास अधूरा है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार को मखाना उद्योग, प्रोसेसिंग इंस्टिट्यूट और 17 नदियों पर पुल जैसी परियोजनाएं दी हैं. आज बेगूसराय से पटना की दूरी सिर्फ डेढ़ घंटे में तय हो रही है, जो पहले चार घंटे लगते थे. 'नीतीश और नरेंद्र मोदी का गठजोड़ बेमिसाल' : बिहार में हो रहे मेडिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विस्तार पर उन्होंने दावा किया कि क्या दरभंगा में कभी एम्स था? आज हर जिले में मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं. ये सब नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी की जोड़ी का कमाल है.

## पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर सपा ने फूंका प्रधानमंत्री का पुतला

### लाशों पर राजनीति करना संघ-भाजपा की पुरानी मानसिकता - पप्पू

**दिव्य दिनकर बिहार उप प्रभारी पवन कुमार चौधरी**

जमालपुर। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले से आक्रोशित समाजवादी पार्टी नगर इकाई ने प्रधानमंत्री व गृहमंत्री का पुतला फूंक अपने आक्रोश का इजहार किया। नगर अध्यक्ष अमर शक्ति के नेतृत्व में दर्जनों सपाई प्रदर्शन करते हुए जुबली वेल चौक पहुंचा। जहां सपा नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह के पुतले को आग में झोंका। इस दौरान प्रदर्शन कर रहे सपाई आतंकी हमले के सूत्रधार केंद्र सरकार मुदार्बाद, लाशों की राजनीति बंद करो, देश की आंतरिक सुरक्षा दुरुस्त करो, नरेंद्र मोदी हाय हाय, अमित शाह इस्तीफा दो आदि नारे लगा रहे थे। प्रदर्शन में मुख्य रूप से पार्टी के जिला अध्यक्ष पप्पू यादव एवं लोहिया वाहिनी के प्रदेश महासचिव रविकांत झा भी मौजूद थे। मौके पर सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव ने केंद्र सरकार पर बिफरते हुए कहा की यह हमला केंद्र सरकार की अकर्मण्यता का परिणाम है। और देश के अंतरिम सुरक्षा पर एक बड़ा सवाल खड़ा करता है। लाशों पर राजनीति करना संघी भाजपाइयों की पुरानी मानसिकता रही है। इस हमले के बाद वही घिनौना चेहरा एक बार फिर सामने आया है। श्री यादव ने कहा कि 370 धारा खत्म-आतंकी खत्म का दावा करने वाले गृह मंत्री को अविलंब इसकी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा देना चाहिए। लोहिया वाहिनी के प्रदेश महासचिव रविकां झा ने कहा कि यह हमला इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भाजपा सरकार को देश की सुरक्षा की कोई चिंता नहीं। कभी पुलवामा, कभी पहलगाम इसके उदाहरण है। और अब विधवा विलाप कर रही है। नगर अध्यक्ष अमर शक्ति ने पहलगाम में हुए आतंकी हमला में मृतक के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं कहा कि केंद्र सरकार जुमला से बाहर निकल आतंक के विरुद्ध ठोस कदम उठाए, अन्यथा इस देश की जनता उन्हें कभी माफ नहीं करेगी। मौके पर जिला मीडिया प्रभारी मनोज क्रांति, नगर उपाध्यक्ष डॉ सुधीर गुप्ता, वरिष्ठ नेता नकुल यादव, सत्यजीत पासवान, आशिष कुमार, चन्दन साहू, अशोक शर्मा, राजकुमार यादव, निरज चौरसिया, विरेंद्र दास, अमित कुमार, सोनू राम, सौरभ कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता शामिल थे।

## वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर दिल्ली में आयोजित परिचर्चा में मुंगेर विश्वविद्यालय के सीनेट सदस्य विक्की आनंद यादव ने रखा अपना पक्ष

### गांवों में चौपाल और कॉलेज में परिचर्चा कर ₹वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर हो आम बहस : विक्की आनंद

**दिव्य दिनकर**

मुंगेर। राजधानी दिल्ली स्थित डॉ अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित स्टूडेंट फॉर वन नेशन वन इलेक्शन का एकदिवसीय सम्मेलन में मुंगेर की ओर से प्रतिनिधित्व कर रहे मुंगेर विश्वविद्यालय के छात्र नेता सह सीनेट सदस्य विक्की आनंद यादव ने ₹वन नेशन वन इलेक्शन₹ को भारत के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक करार दिया। सम्मेलन में के।मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, भारत सरकार कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, खेल मंत्री मनसुख मांडविया, भाजपा के संगठन मंत्री सुनील बंसल, राज्य सभा सांसद सुरेंद्र नागर जी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत आरंभ से पहले पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गये पर्यटकों की आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखा तथा श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि बार-बार चुनाव होना भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। देश के सभी राजनीतिक दल हमेशा चुनाव में लगे रहते हैं।

हम जब केंद्रीय मंत्री बने तो सोचे खेत, किसान, गांवों के विकास के बारे में सोचेंगे। लेकिन लगातार चुनाव होने के वजह से वे पार्टी के कार्यकर्ता के नाते चुनाव में लग जाते हैं। ये समस्या सिर्फ भाजपा की नहीं बल्कि सभी राजनीतिक दलों की है। सभी दल चुनाव जितने के लिए शक्ति लगाते हैं। लगातार चुनाव इस समस्या से बचने के लिए एक देश एक चुनाव की योजना करना चाहिए। छात्र नेता बिक्की आंनद यादव ने कहा कि इस सम्मेलन में देश भर से 854 छात्र नेताओं ने भाग लिया। इस सम्मेलन के मंथन से निकलने वाली विचार व एक देश एक चुनाव के फायदे को देश की सभी जिलों, प्रखंडों व गांवों तक छात्र नेताओं के माध्यम से पहुंचाना है। बिक्की आंनद ने कार्यक्रम के दौरान कहा कि एक देश एक चुनाव की अवधारणा का उद्देश्य चुनावी प्रक्रिया में सुधार करना है। जिससे शासन में स्थिरता आए और सरकारी कामकाज में बाधा न पड़े। इससे चुनाव आयोग और राजनीतिक दलों के संसाधनों की भी बचत होगी और मतदाताओं को एक ही समय पर अपने मताधिकार का प्रयोग करने का अवसर मिलेगा। इस विषय पर गहराई से चर्चा करने के गांवों में चौपाल व महाविद्यालयों में परिचर्चा का आयोजन करना है। हमें यह सुनिश्चित करना है कि हमारी चर्चा रचनात्मक और सम्मानजनक हो। हमें एक दूसरे के विचारों को सुनना चाहिए और समझना है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने सम्मेलन में एक देश एक चुनाव के समर्थन और सुझाव के लिए में अपने विचारों को साझा को साझा करने लिए ओएनओई डॉट लाइव एआई चैट बोर्ड का उद्घाटन किया। सम्मेलन में दर्जनों छात्र नेताओं ने अपनी बात रखी।

# रजरप्पा में अवैध कोयला खनन के मुहानों से निकल रही भीषण आग से लोग परेशान

**जमीन से निकलती भीषण आग और काले धूएं का गुबार देख भुचुंगडीह गांव के लोग डरे हुए हैं। गांव के भविष्य पर संकट गहराता दिख रहा है। जिससे लोगों में रोष भी देखा जा रहा है। बताया जाता है यहां सुलगती भूमिगत आग को लेकर पूर्व में ही सीसीएल रजरप्पा प्रबंधन को सचेत किया गया था। बावजूद इसके कोई ठोस पहल नहीं हो सकी। बताया जाता है कि यहां पर दशकों पहले भूमिगत कोयले की खदान हुआ करती। जो काफी अरसे पहले बंद हो गई। संभावना है कि यहां किसी तरह सुलग उठी भूमिगत आग समय बीतने के साथ फैलती गई होगी। इधर, अवैध खनन से मुहानों की पतली होती कोयले की परत के कारण आग ने भीषण रूप अख्तियार कर लिया। स्थानीय लोगों की मानें तो क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अवैध रूप से खनन कर कोयला निकाला जाता है।**

विशेष प्रतिनिधि द्वारा

**रामगढ़ :** रामगढ़ जिले के रजरप्पा में एक बंद कोयला खदान में भीषण आग लगने की खबर है। आग के बाद इलाके में घना काला धुआं छा गया। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। स्थानीय लोगों ने दावा किया है कि जहरीले धुएं से इलाके में रहने वाले करीब 10,000 लोग प्रभावित हो सकते हैं। उन्होंने स्थानीय प्रशासन और 'सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल)' को इस स्थिति के लिए जिम्मेदार ठहराया तथा आरोप लगाया कि कुछ दिन पहले जब जमीन के नीचे मामूली आग लगी थी,तब उनकी शिकायतों पर कोई संज्ञान नहीं लिया गया था। जमीन से निकलती भीषण आग और काले धूएं का गुबार देख भुचुंगडीह गांव के लोग डरे हुए हैं। गांव के भविष्य पर संकट गहराता दिख रहा है। जिससे लोगों में रोष भी देखा जा रहा है। बताया जाता है यहां सुलगती भूमिगत आग को लेकर पूर्व में ही सीसीएल रजरप्पा प्रबंधन को सचेत किया गया था। बावजूद इसके कोई ठोस पहल नहीं हो सकी। बताया जाता है कि यहां पर दशकों पहले भूमिगत कोयले की खदान हुआ करती। जो काफी अरसे पहले बंद हो गई। संभावना है कि यहां किसी तरह सुलग उठी भूमिगत आग समय बीतने के साथ फैलती गई होगी। इधर, अवैध खनन से मुहानों की पतली होती कोयले की परत के कारण आग ने भीषण रूप अख्तियार कर लिया। स्थानीय लोगों की मानें तो क्षेत्र में बड़े पैमाने पर अवैध रूप से खनन कर कोयला निकाला जाता है। जो जिले की कई फैक्ट्रियों व ईंट भट्ठों में खपाया जाता है। साथ ही बाहर की मंडियों में भी भेजा जाता है। उपायुक्त चंदन कुमार ने बताया कि आग

बुझाने के लिए एक टीम मौके पर भेज दी गई है। उन्होंने बताया कि आग पर काबू पाने के लिए युद्ध स्तर पर काम करने के निर्देश दिए गए हैं,ताकि चितरपुर प्रखंड के घनी आबादी वाले भुचुंगडीह गांव तक पहुंचने से पहले उसे नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने कहा,''हम आग पर नजर रख रहे हैं। हमारे अधिकारी आग बुझाने का उपाय खोजने के लिए सीसीएल के खनन विशेषज्ञों से सलाह ले रहे हैं। भुचुंगडीह गांव के निवासी राजू महतो ने कहा कि अगर आग को तुरंत नहीं बुझाया गया तो ग्रामीणों को अपने घरों से भागना पड़ेगा। उन्होंने बताया कि गांव में करीब 10,000 लोग रहते हैं। एक अन्य ग्रामीण जीवन महतो ने बताया कि आग अभी गांव से महज 500 मीटर की दूरी पर है। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले ग्रामीणों ने भूमिगत आग देखी थी और स्थानीय अधिकारियों तथा सीसीएल को इसकी सूचना दी थी। उन्होंने आरोप लगाया,''लेकिन किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।'' रजरप्पा क्षेत्र के सीसीएल महाप्रबंधक कल्याणजी प्रसाद ने कहा,''हमने प्रारंभिक तौर पर मिट्टी और रेत डालकर आग को कम करने के लिए कदम उठाए हैं। अगर इसे नियंत्रित नहीं किया जा सका तो हम दूसरा तरीका खोजने की कोशिश करेंगे।

# विवेक दा के एनकाउंटर के साथ ही नक्सलियों के एक युग का अंत

**सोमवार तड़के शुरू हुई मुठभेड़ में दोनों ओर से भारी गोलीबारी हुई। अंततः सुरक्षाबल भारी पड़े और कुख्यात नक्सली प्रयाग मांझी मारा गया। मुठभेड़ के बाद फरार नक्सलियों की तलाश के लिए क्षेत्र में व्यापक सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। विवेक दा धनबाद जिले के टुंडी के मानियाडीह थाना क्षेत्र का रहने वाला था। बहुत कम उम्र में ही वह नक्सली संगठन में शामिल हो गया था। विवेक दा न सिर्फ झारखंड, बल्कि बिहार, ओड़िशा और छत्तीसगढ़ के नक्सली बेल्ट में भी वर्षों तक सक्रिय रहा।**

क्राइम संवाददाता द्वारा

**बोकारो :** एक करोड़ रुपये के इनामी नक्सली और भाकपा माओवादी के केंद्रीय कमेटी सदस्य प्रयाग मांझी उर्फ विवेक दा की मौत से झारखंड में नक्सल आंदोलन के एक युग का अंत हो गया। सोमवार सुबह बोकारो जिले के लुगू पहाड़ी में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में विवेक दा सहित आठ नक्सली मारे गए। यह झारखंड पुलिस की अब तक की सबसे बड़ी सफलता मानी जा रही है। आइए जानते हैं कौन हैं विवेक दा और कैसे हुआ नक्सलियों के एक युग का अंत... रविवार रात से मिली गुप्त सूचना के आधार पर सुरक्षाबलों ने इलाके को घेर लिया था। सोमवार तड़के शुरू हुई मुठभेड़ में दोनों ओर से भारी गोलीबारी हुई। अंततः सुरक्षाबल भारी पड़े और कुख्यात नक्सली प्रयाग मांझी मारा गया। मुठभेड़ के बाद फरार नक्सलियों की तलाश के लिए क्षेत्र में व्यापक सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। विवेक दा धनबाद जिले के टुंडी के मानियाडीह थाना क्षेत्र का रहने वाला था। बहुत कम उम्र में ही वह नक्सली संगठन में शामिल हो गया था। विवेक दा न सिर्फ झारखंड, बल्कि बिहार, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के नक्सली बेल्ट में भी वर्षों तक सक्रिय रहा।

गिरिडीह के पारसनाथ, बोकारो के लुगू और झुमरा पहाड़ उसके प्रभाव क्षेत्र में थे। अकेले गिरिडीह में ही उसके खिलाफ 50 से अधिक मामले दर्ज थे। संगठन में उसकी पहचान एक रणनीतिकार और सशस्त्र दस्ता प्रमुख के रूप में थी। सूत्रों के अनुसार, विवेक दा के पास एके-47, इंसास राइफल और भारी मात्रा में विस्फोटक था। उसके दस्ते में 50 से अधिक प्रशिक्षित नक्सली शामिल थे, जिनमें महिला माओवादी भी अलग-अलग इलाकों में सक्रिय थीं। उसकी तूती झारखंड के कई जिलों में बोलती थी और वह हमलों की रणनीति खुद तय करता था। प्रयाग मांझी की मौत को झारखंड पुलिस के लिए ऐतिहासिक सफलता माना जा रहा है। पहली बार राज्य में एक करोड़ रुपये का इनामी नक्सली ढेर किया गया है। इस कार्रवाई से गिरिडीह-बोकारो सहित उत्तरी छोटानागपुर क्षेत्र में नक्सल गतिविधियों की कमर टूट गई है। विवेक दा की मौत के साथ ही भाकपा माओवादी संगठन को बड़ा झटका लगा है। विवेक, अरविंद और साहेब राम मांझी सहित आठ नक्सलियों के मारे जाने से संगठन की ताकत में भारी गिरावट आई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मुठभेड़ के बाद बचे हुए नक्सलियों की गिरफ्तारी के लिए अभियान तेज कर दिया गया है।

## करणी सेना अध्यक्ष की हत्या के पीछे कौन?

क्राइम संवाददाता द्वारा

**जमशेदपुर :** जमशेदपुर के बालीगुमा में करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष विनय सिंह की हत्या से इलाके में तनाव का माहौल है। विनय उलीडीह थाना क्षेत्र के आस्था स्पेस टाउन में रहते थे। डिमना चौक पर उनकी टाइल्स की दुकानें हैं। हत्या के बाद काफी बवाल देखने को मिला। घटना से नाराज विनय सिंह के समर्थकों ने डिमना चौक के पास एनएच-33 को जाम कर दिया। इससे सड़क पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और यातायात ठप हो गया। पुलिस सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल कॉल डिटेल व अन्य सबूतों के आधार पर जांच कर रही है। जांच, पुलिस पूछताछ और तमाम जानकारियों के मुताबिक इस घटना के संबंध में अलग अलग खुलासे हो रहे हैं। विनय सिंह की हत्या का कारण गोविंदपुर के बिल्ला पाठक से करीबी होना बताया जा रहा है। जमशेदपुर पुलिस ने कहा कि झारखंड के जमशेदपुर में रविवार शाम करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष विनय सिंह का शव बरामद हुआ, उनके सिर पर गोली लगी थी और बाएं हाथ में पिस्तौल थी। कल सुबह से ही वे संपर्क में नहीं थे। शिकायत के बाद उनके मोबाइल लोकेशन का पता लगाया गया और शव बरामद किया गया। सभी संभावित एंगल से जांच की जा रही है। सूत्रों का कहना है कि एक महीने से विनय सिंह, बिल्ला पाठक के करीब थे और यह माना जा रहा है कि बिल्ला पाठक का प्रतिद्वंद्वी गैंग, जिसका सरगना माशूक मनीष है, इस घटना को अंजाम देने में शामिल हो सकता है।मौका-ए-वारदात पर कई लोग इस हत्याकांड में माशूक मनीष गिरोह के शामिल होने की बात कह रहे थे। सूत्रों का कहना है कि एक महीने से विनय सिंह की रेकी की जा रही थी और इसकी जानकारी विनय सिंह को भी थी।

## छत्तीसगढ़ एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम की कार्रवाई में दो अधिकारी गिरफ्तार

विशेष प्रतिनिधि द्वारा

**रायपुर :** छत्तीसगढ़ एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम ने सोमवार राज्य के दो बड़े शहरों में रेड की कार्रवाई की है. इन दोनों जिले में एसीबी की टीम ने कथित तौर पर रिश्वत मांगने और स्वीकार करने के आरोप में सरकारी अधिकारियों पर शिकंजा कसा है. दोनों अधिकारियों को सीजी एसीबी की टीम ने गिरफ्तार कर लिया है. दोनों की पहचान प्रवीण साहू और सुल्तान सिंह बंजारा के रूप में हुई है.दोनों अधिकारियों के बारे में जानकारीः एसीबी के अधिकारी ने बताया कि प्रवीण साहू छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड में सहायक अभियंता के पद पर तैनात थे, जबकि सुल्तान सिंह बंजारा कोरबा जिले के दुल्लापुर गांव में ग्राम राजस्व अधिकारी के पद पर कार्यरत थे.दोनों अधिकारियों पर गंभीर आरोपः प्रवीण साहू पर एक शिकायतकर्ता ने गंभीर आरोप लगाए हैं. शिकायतकर्ता से प्रवीण साहू ने वाणिज्यिक मीटर उपलब्ध कराने के लिए 25,000 रुपये की मांग की थी. जबकि सुल्तान सिंह बंजारा ने शिकायतकर्ता से उसकी तीन एकड़ जमीन को राजस्व रिकॉर्ड बुक में उसके नाम पर शामिल करने के लिए कथित तौर पर घूस की मांग की थी. बंजारा पर 25 हजार रुपये रिश्वत मांगने का आरोप था.एसीबी की तरफ से कहा गया है कि दोनों अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया है. दोनों एसीबी के बिछाए जाल में फंस गए. इन दोनों पर कथित घूसखोरी के आरोप में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत कार्रवाई की जा रही है. एसीबी राज्य में लगातार छापेमार कार्रवाई कर रही है. 15 अप्रैल को एसीबी ने गौरेला पेंड्रा मरवाही में कार्रवाई की थी.

# ईडी ने अलग-अलग शहरों में 573 करोड़ रुपए की संपत्तियां जब्त की

**ईडी ने 16 अप्रैल को दिल्ली, मुंबई, इंदौर, अहमदाबाद, चंडीगढ़, चेन्नई और संबलपुर में छापेमारी की। इस दौरान 3.29 करोड़ रुपए नकद भी जब्त किए गए। ईडी ने एक बयान में कहा कि तलाशी कार्रवाई के परिणामस्वरूप 3.29 करोड़ रुपए की नकदी जब्त की गई, 573 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की प्रतिभूतियों, बांड और डीमैट खातों पर रोक लगा दी गई। इसके अलावा विभिन्न दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड भी जब्त किए गए।**

विशेष संवाददाता द्वारा

**रायपुर :** ईडी ने महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप मामले में बड़ी कार्रवाई की है। पिछले हफ्ते छापेमारी कर 573 करोड़ रुपए की प्रतिभूतियां, बांड और डीमैट खाते जब्त किए। जांच में पता चला कि सट्टेबाजी से कमाए गए पैसे को विदेश भेजा गया और फिर उसे एफपीआई के नाम पर भारतीय शेयर बाजार में लगाया गया। यह कार्रवाई दिल्ली, मुंबई समेत कई शहरों में की गई। एजेंसी का कहना है कि इस मामले में कुछ लोगों ने मिलकर छोटे और मध्यम उद्योगों (एसएमई) के शेयरों की कीमत बढ़ाई, ताकि आम निवेशकों को धोखा दिया जा सके। ईडी ने 16 अप्रैल को दिल्ली, मुंबई, इंदौर, अहमदाबाद, चंडीगढ़, चेन्नई और संबलपुर में छापेमारी की। इस दौरान 3.29 करोड़ रुपए नकद भी जब्त किए गए। ईडी ने एक बयान में कहा कि तलाशी कार्रवाई के परिणामस्वरूप 3.29 करोड़ रुपए की नकदी जब्त की गई, 573 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की प्रतिभूतियों, बांड और डीमैट खातों पर रोक लगा दी

गई। इसके अलावा विभिन्न दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड भी जब्त किए गए। महादेव बेटिंग ऐप का मामला कुछ साल पहले सामने आया था। तब एजेंसी ने कहा था कि छत्तीसगढ़ के कुछ नेता और अफसर इस ऐप के अवैध काम और पैसे के लेनदेन में शामिल हैं। इस ऐप को सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल नाम के दो लोगों ने शुरू किया था। दोनों छत्तीसगढ़ के रहने वाले हैं। जांच एजेंसी ईडी का कहना है कि कुछ कंपनियों ने मिलकर एसएमई सेक्टर के शेयरों की कीमत बढ़ाई। ऐसा इसलिए किया गया ताकि आम निवेशकों को नुकसान हो। ईडी के अनुसार, कुछ लोग शेयरों की कीमत में हेरफेर करके गलत तरीके से पैसा कमा रहे थे। ईडी ने इस मामले में अब तक 13 लोगों को गिरफ्तार किया है। 74 आरोपियों के खिलाफ पांच आरोपपत्र भी दाखिल किए गए हैं। इसके अलावा, 3,002 करोड़ रुपए की संपत्ति भी जब्त की गई है। ईडी का अनुमान है कि इस मामले में लगभग 6,000 करोड़ रुपए का अपराध हुआ है। वहीं, ईडी इस मामले की गहराई से जांच कर रही है। एजेंसी यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि इस घोटाले में और कौन-कौन शामिल है और पैसे का इस्तेमाल कहां-कहां किया गया।

## संक्षिप्त समाचार

### वक्फ़ बोर्ड कानून के खिलाफ बंगाल में हुई घटना से पीड़ितों को संगठन ने किया मदद

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ : पिछले दिनों वक्फ़ बोर्ड को लेकर पश्चिम बंगाल के कई जिलों में एक विशेष समुदाय के द्वारा टारगेट करके हिंदुओं के घरों में हमला, दुकानों में लूटपाट, हत्या सहित अन्य घटनाओं को अंजाम दिया गया था, जिसको लेकर बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले से कई लोग आस पास के क्षेत्रों में पलायन किए हुए है। इसी को लेकर राष्ट्रीय संगठन रामभक्त सेवा दल की और से मंगलवार को दर्जनों पीड़ित परिवारों के बीच निःशुल्क खाने के सामग्री वितरण किया गया। इस बाबत संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रतिनिधि सनातनी सागर ने मीडिया को बताया कि बंगाल में घटित हिंसक घटना का संगठन पूरी तरीके से विरोध एवं निंदा करती है, उन्होंने कहा कि हमलोग आसपास के क्षेत्रों में घूम घूम कर पीड़ितों को चिन्हित करते हुए यथा संभव खाने पीने का सामग्री वितरण कर रहे है और यह कार्य निरंतर संगठन की और से चलता रहेगा। वही जिला अध्यक्ष रतन भगत ने बताया कि बहुत जल्द हमारी टीम बंगाल के धूलियान स्थित कई गांवों में जाकर पीड़ितों के बीच सामग्री का वितरण करेंगे। उन्होंने कहा कि संगठन हमेशा हर सनातनी भाइयों एवं बहनों के लिए एक ढाल के तरह खड़ा रहेगी। मौके पर प्रदेश अध्यक्ष राहुल सिंह, प्रदेश महामंत्री राम ठाकुर, जिला महामंत्री दुलाल सिंह सहित कई सदस्य मौजूद थे।

### उपायुक्त की अध्यक्षता में जिला सुरक्षा समिति की बैठक की गई

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार ने जिला सुरक्षा समिति की बैठक में निजी अंगरक्षक उपलब्ध कराने के लिए जिले में प्राप्त आवेदनों की जानकारी ली। प्राप्त आवेदनों पर निःशुल्क और सशुल्क निजी अंगरक्षक उपलब्ध कराने को लेकर चर्चा की गई। जिसके बाद कुछ आवेदनों को स्वीकृति प्रदान की गई। जिले में सुरक्षा समिति की ओर से प्राप्त आवेदनों के माध्यम से पूर्व में दिए गए अंगरक्षकों की भी समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। मौके पर पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार, उप विकास आयुक्त महेश कुमार संथालिया, अपर समाहर्ता जेम्स सुरीन, प्रभारी, सामान्य शाखा मोहनलाल मरांडी, जिला पंचायत राज पदाधिकारी प्रीतिलता मुर्मू, जिला स्थापना उप समाहर्ता मनीष कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी त्रिभुवन कुमार सिंह, मुख्यालय डीएसपी जितेन्द्र कुमार, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, पाकुड़ डीएन आजाद समेत अन्य उपस्थित थे।

### करों प्रखण्ड में मनाया गया बाबू कुँवर सिंह शौर्य दिवस, ग्रामवासियों ने पुष्पांजलि अर्पित कर लिया राष्ट्रसेवा का संकल्प

करों, देवघरः

वीर कुंवर सिंह स्मारक समिति के सौजन्य से करों प्रखण्ड के करोंग्राम स्थित बाबा धर्मराज चौक पर मंगलवार को बाबू कुँवर सिंह शौर्य दिवस उत्साह व श्रद्धा के साथ मनाया गया। सालतर, रानीडीह, विरेनगड़िया समेत आसपास के पंचायतों से बड़ी संख्या में लोग जुटे और 1857 के महान स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुँवर सिंह को स्मरण किया। समारोह के दौरान समाजसेवी चाहत कुमारी ने कहा, ह्बाबू कुँवर सिंह भारतीय स्वाधीनता संग्राम के ऐसे वीर थे जिनसे अंग्रेज थर-थर कांपते थे। उनका साहस आज भी प्रेरणा का स्रोत है। इसके बाद उपस्थित सभी लोगों ने क्रम से बाबू कुँवर सिंह की तस्वीर पर पुष्प माला अर्पित कर उनके आदर्शों पर चलने की शपथ ली। मंच पर शशिप्रकाश सिंह, विष्णु चौधरी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी हरि उरांव, इन्द्रजीत सिंह ह्यजगन्नाथह्न सहित कई गणमान्य मौजूद रहे। वक्ताओं ने वीर शहीद के बलिदान और देशभक्ति को रेखांकित करते हुए युवाओं से राष्ट्रसेवा में जुटने का आह्वान किया। समारोह के अंत में देशभक्ति गीतों व नारों से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो उठा।

### मांडर प्रखंड के सभी पंचायत भवन के प्रज्ञा केंद्र मे विवाह निबंधन की प्रक्रिया शुरू

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - मांडर प्रखंड के सभी पंचायत भवन के प्रज्ञा केंद्र मे विवाह निबंधन की प्रक्रिया सुरु कर दी गईं है प्रखंड प्रमुख फिलिप सहाय एक्का ने बताया की अब इसके लिए लोगो को कचहरी का चक्कर नही लगाना होगा आज मांडर प्रमुख कार्यालय मे पहला विवाह प्रमाण पत्र सरिता खलखो पति अनमोल नियोन एक्का को प्रमुख फिलिप सहाय एक्का सीताराम साहू और अंजनी ज्योति टोप्पो के हाथो द्वारा दिया गया,विवाह पंजीकरण के लिए आवश्यक दस्तावेज दूल्हे का आधार कार्ड, और पहचान पत्र, दुल्हन का आधार कार्ड और पहचान पत्र,दूल्हे एंव दुल्हन का पासपोर्ट साइज फोटो दूल्हे एंव दुल्हन का हस्ताक्षर, लेटर पेड पर मुखिया द्वारा प्रमाणित हस्ताक्षर एवं मुहर, तीन फोटो शादी का जोड़े का, 3 गवाह का आधार एंव पहचान पत्र, 3 गवाह का पासपोर्ट फोटो 3 गवाह का हस्ताक्षर आवश्यक होगा, विवाह निबंधन कराने के बाद कन्यादान हेतु बाल विकास कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है, मौके पर सीताराम साहू, अंजनी ज्योति टोप्पो, कृति कुमारी, प्रेम साहू, फिरोज अन्सारी मौजूद थे!

# कांग्रेस ने संगठन उत्सर्जन कार्यक्रम की आयोजित

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर जिला कांग्रेस कमिटी की विस्तारित बैठक देवघर के न्यू ग्रैंड होटल सभागार में जिलाध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश के अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में मुख्य रूप से कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव तथा जिला के पर्यवेक्षक अजय दूबे ने भाग लिया तथा जिलाध्यक्ष के साथ बैठक के विषयों पर विंदू वार समीक्षा की। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में गत दिनों कर्नाटक के बेलगाम में सीडब्लूसी की विस्तारित बैठक तथा अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में कांग्रेस अधिवेशन में लिए गए निर्णय के आलोक में दो पहलू संगठन सृजन तथा आंदोलन का कार्यान्वयन के लिए जिला नेताओं,पदाधिकारियों तथा प्रखंड व नगर अध्यक्षों एवं पर्यवेक्षकों के बीच रायसुमारी कर आवश्यक निर्णय लिया गया तथा आगे की रणनीति तय की गई।संगठन सृजन पर तीन माह की निर्धारित अवधि में प्रखंड, नगर,मंडल तथा पंचायत स्तर पर कमिटी को पुनर्गठित कर सशक्त बनाया जाएगा। वहीं आंदोलन तहत ₹संविधान बचाओ रैली₹ आयोजित की जाएगी। जिसके लिए प्रदेश से लेकर बुथ स्तर पर रैलियां आयोजित करने की अवधि निर्धारित की गई है। प्रदेश स्तरीय रैली राजधानी रांची में 3 मई को पुराने विधानसभा मैदान में निकाली जाएगी, जिसमें देवघर जिला से भारी संख्या में भाग लेंगें। वहीं 3 मई से 10 मई तक जिला स्तर पर,11 मई से 17 मई तक विधानसभा स्तर पर तथा 20 मई से 30 मई 2025 तक बुथ स्तर पर गांव तथा टोले के घर-

घर तक रैलियां निकाली जाएगी तथा जन संपर्क किया जाएगा। कार्यक्रम 20 अप्रैल 2025 को जारी अभियान कैलेंडर के अनुसार पूरे देश में मिशन मोड पर कार्यक्रम चलाया जाएगा जो खास कर भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा संविधान, लोकतांत्रिक संस्थाओं और सामाजिक न्याय पर निरंतर हमले के खिलाफ एक सामूहक राजनीतिक प्रतिरोध के तहत किया जाएगा। अभियान को समयबद्ध ,समन्वित और जन केंद्रित तरीके से लागू करते हुए सफल बनाया जाएगा। देश में आर्थिक संकट,बेरोजगारी, मुद्रास्फीति किसान संकट और आवाजों के दमन पर ध्यान केंद्रित करते हुए युवाओं, महिलाओं,अल्पसंख्यकों किसानों और श्रमिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। बैठक में कश्मीर के पहलगांव आतंकी हमले पर कड़ी निंदा की तथा इस कायराना एवं अमानवीय हमले में सभी मृतकों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट किया तथा उनकी आत्मा के शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण रखा। साथ ही सभी घायल जल्द स्वस्थ्य होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया। कांग्रेस नेताओं ने बैठक में पूरी एकजुटता के साथ कहा कि सरकार आतंकवादियों के खिलाफ ठोस कदम उठाऐं, कांग्रेस सरकार के हर निर्णय के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। बैठक में मुख्य रूप से जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष डॉ मुन्नम संजय, प्रदेश सचिव फैयाज केशर,शबाना खातून,राजेंद्र दास,अवधेश प्रजापति, जिला महासचिव-सह-प्रवक्ता दिनेश कुमार मंडल, नगर अध्यक्ष रवि केसरी,प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप नटराज,संजीव चौधरी, गुलाब यादव, हेमंत चौधरी,उमेश रजक, सिराज अंसारी, सोसल मीडिया प्रभारी अमित पांडेय, जिला पदाधिकारी रवि गुप्ता,बैनी चौबे, मकसूद आलम, किशोर ठाकुर, महेश मणि द्वारी, नित्यानंद सेवक,सुधीर देव,गणेश दास, सौरभ दास, राजेश बरनवाल, इम्तियाज शेख, मणिकांत यादव, ओम प्रकाश यादव, बासुकी पंडित,विकास राउत,अश्विनी मंडल, कुमार बाबा,दशरथ यादव,श्रीकांत यादव,चंद्र किशोर दास,पंकज कुमार,सूरज सिंह, सदाशिव राणा,नारायण यादव, किशोर रवानी,अटल मिश्रा सयूब अंसारी आदि मंडल अध्यक्ष,सेवा दल तथा कांग्रेस के नेता पदाधिकारी ने भाग लिया।

# प्रेमिका को धोखा देकर प्रेमी ने की दूसरी शादी,गिरफ्तार

## प्रेमिका ने की शिकायत, कहा- शादी कर दो वर्ष बनाए शारीरिक संबंध

**रिसेप्शन के दौरान आ गई पुलिस,शादी वाले गेस्ट हाउस में मची अफरातफरी**

**दूल्हे को रिसेप्शन से खींचकर ले गई पुलिस, प्रेमिका की बहादुरी की हो रही तारीफ**

विकास कुमार यादव

हंटरगंज/चतराः- हंटरगंज में अपनी प्रेमिका को धोखा देकर दूसरी युवती से शादी करने वाले युवक को हंटरगंज थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। प्रेमिका ने मंगलवार को इस-ाकी शिकायत हंटरगंज थाने में की थी। युवक पर शादी कर दो साल शारीरिक संबध बनाने का आरोप लगाया था।ि-शकायत के आलोक में हंटरगंज थाना प्रभारी प्रभात कुमार दल बल के साथ युवक के घर पहुंचे जहां रंगारंग कार्यक्रम रिसेप्शन पार्टी का आयोजन हुआ था पुलिस को घर पर पहुंचते ही शादी वाले गेस्ट हाउस में अफरातफरी मच गई। इधर थाना प्रभारी ने तत्परता दिखाते हुए दूल्हे को रिसेप्शन से खींच कर हंटरगंज थाने ले आई। राजस्थान के अजमेर जिला के आदर्श नगर थाना क्षेत्र अन्तर्गत मखुरा हटूंडी रोड़ जोधपुर की रहने वाली युवती का हंटरगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत गोसाईड-ीह निवासी युवक चंदन कुमार से दो साल से प्रेम प्रसंग चल रहा था। प्रेमिका का आरोप है कि चन्दन ने सितम्बर 2023 को अजमेर के एक मंदिर में मेरे साथ शादी की और उस-ाका शारीरिक शोषण लगभग दो साल तक किया इस दौरान नवंबर 2023 में गर्भपात करवाया। उसके बाद युवक 6 अप्रैल 2025 को मुझसे यह बोलकर दिल्ली आया था की कुछ दिन के लिए भैया पास जा रहा हूं . उसके बाद कुछ दिन के घर जाऊंगा मेरे रिश्तेदार की शादी है। जब मैं 20 अप्रैल को उसकी भतीजी के इंस्टाग्राम आईडी पर देखा की चन्दन दूसरी लड़की से शादी रचा ली है मेरे पैरों तले जमीन घिसक गई। हैरत की बात है कि अभी तक प्रेमिका के लिए जीने मरने की कसम खाने वाला प्रेमी भी अपने परिजनों के पक्ष में चला गया और दूसरी शादी रचा ली । युवक चन्दन ने प्रेमिका से चोरी छिपे दूसरी युवती से 20 अप्रैल को बिहार के गया जिला के बाराचट्टी थाना क्षेत्र अंतर्गत

लय गांव में शादी रचा ली। जब प्रेमिका को इसकी जानकारी लगी तो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। प्यार में धोखा मिलने के बाद प्रेमिका आनन - फानन में राजस्थान से हंटरगंज थाने पहुंची जहां मामले की शिकायत पुलिस से की। हंटरगंज पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज की। रिपोर्ट दर्ज करने के बाद हंटरगंज थाना पुलिस उसकी धरपकड़ में लग गई। हंटरगंज थाना प्रभारी प्रभात कुमार दल बल के साथ युवक के घर पहुंचे जहां रंगारंग रिसेप्शन पार्टी से पुलिस ने आरोपी प्रेमी को गिरफ्तार किया। मेडिकल परीक्षण कराने के बाद पुलिस ने उसे जेल भेज दिया। हंटरगंज थाना प्रभारी प्रभात कुमार ने बताया कि आरोपी भागने की फिराक में था। उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। प्रेमी की गिरफ्तारी न होने तक युवती काटती रही थाना की चक्कर प्रेमिका की शिकायत के बाद पुलिस ने तुरंत आरोपी युवक चन्दन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया। शिकायत के बाद से ही प्रेमिका हंटरगंज थाना में जमी थी। प्रेमी के गिरफ्तार कर जेल भेजे जाने के बाद वह चैन से बैठी। बुधवार को आरोपी चन्दन को जेल भेजे जाने के दौरान युवती चतरा कोर्ट में ही मौजूद रही। *इधर इस संबध में आरोपी के मां उर्मिला देवी ने बताई की इस संबध में हमसभी परिजन को कोई जानकारी नहीं थी जब अचानक पुलिस मेरे घर और लड़की थाना पहुंची तब हमलोगो को इसकी जानकारी हुई वही आगे उन्होंने बताया हमलोग पर जो भी युवती के द्वारा आरोप लगाया जा रहा है हमसभी परिवार को इसके संबध में कोई जानकारी नहीं है*।

# डीएवी शिक्षा दीप जयप्रकाश नगर विद्यालय मे शपथ ग्रहण समारोह,

## विद्यार्थियों ने ली कमांडर,मॉनिटर,हेड बॉय एवं हेड गर्ल पद की शपथ ग्रहण

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची - डीएवी शिक्षा दीप जयप्रकाश नगर विद्यालय मे बाल सांसद का गठन हुआ।इस मौके पर मुख्यअतिथि छात्र क्लब ग्रुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष शि-ावकिशोर शर्मा एवं डीएवी शिक्षा दीप विद्यालय के निदेशक शिवनंदन पाठक के उपस्थिति मे हेड बॉय मनीष कुमार हेड गर्ल सोनम कुमारी, कमांडर अंकिता कुमारी,त्रिशा तिर्की,लवली कुमारी,आरोही कुमारी एवं मॉनिटर श्रेया सुमन,पीयूष रंजन,आरोही कुमारी,निराली कुमारी सहित 36 बच्चों ने शपथ ग्रहण ली। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य आलोक कुमार ने कहा बाल सांसद के गठन का मुख्य उद्देश्य है विद्यालय मे अनुशासित रहना,स्कूल के नियम को कायम रखनासाथ ही शैक्षणिक,शांतिपुर्ण व्यवस्था मे सहयोग करना।अपने

संबोधन में शिव किशोर शर्मा ने बाल सांसद मे चुने गए सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना किए वही शिवनंदन पाठक ने।कहा शपथ ग्रहण के बाद सभी बच्चे काफी खुश नजर और अपने आप को गौरवनित महसूस कर रहे थे।ये बच्चे एक दिन जरूर डॉक्टर,इंजीनियर,वैज्ञानिक राजनेता बनकर देश की सेवा करेंगे जिससे उनके माता-पिता के साथ-साथ विद्यालय का नाम भी रौशन होगा।धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विद्यालय की संस्थापिका नीलम देवी ने कहा प्राचार्य और शिक्ष-ाकों के मार्गदर्शन में स्कूल दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है।सभी बच्चें मेहनत के साथ पढ़ाई करें,निजी तथा सरकारी क्षेत्रों के विभिन्न महत्वपूर्ण पद प्राप्त करें मेरी शुभकामनाएं सभी बच्चों के साथ है। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय परिवार के सभी शिक्षक,शिक्षिकाएं एवं कर्मचारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### जिले भर में ओ0पी0डी सेवा पूरी तरह ठप

**सदर अस्पताल के चिकित्सक के साथ मरीज के परिजनों ने की थी मार पीट**

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर : सदर अस्पताल के चिकित्सक पर उनके क्लीनिक पर मरीज के परिजनों द्वारा उनके साथ बेरहमी से मार पीट की गई थी जिसके विरोध में आज से देवघर जिला में सभी सरकारी एवं गैर सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में ओ पी डी सेवा पूर्णतः ठप कर दी गई है। सभी चिकित्सको द्वारा कार्य बहिष्कार किया गया और सदर अस्पताल के सभागार में सभी लोग एकत्रित हो कर दिन भर बैठे रहे,आई एम ए के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह जिला आई एम ए की अध्यक्ष डॉ धन्वंतरि तिवारी सर और सिविल सर्जन सह झासा के संरक्षक डॉ जुगल किशोर चौधरी सर के नेतृत्व में कार्य बहिष्कार किया गया, जिसमें जिला झासा सचिव डॉ प्रभात रंजन,आई एम ए सचिव डॉ गौरी शंकर के साथ साथ दोनों संगठनों के सभी लोगो द्वारा कार्य बहिष्कार को सफल बनाया गया। वही आई एम ए के राज्य सचिव डॉ प्रदीप सिंह बॉस और अध्यक्ष डॉ अरुण कुमार सिंह सर लगातार जिला के उपायुक्त से संपर्क में रहे और उन लोगों द्वार जिला प्रशासन पर दबाव दिया गया कि जल्द गिरफ्तारी हो, जबकि पुलिस अधीक्षक से संपर्क करने का उन लोगों द्वारा प्रयास किया गया पर वे फोन नहीं उठाए। जब तक गिरफ्तारी नहीं हो जाती तब तक कार्य बहिष्कार जारी रहेगा। आज तो देवघर जिले का कार्य बहिष्कार सफल रहा कल भी हमलोग जारी रखेंगे,परंतु मेरा मानना है कि अगर कल तक भी गिरफ्तारी नहीं होती है तो राज्य स्तरीय कार्य बहिष्कार की तैयारी हमें कर लेनी होगी, इस पूरे प्रकरण में मै खुद भी लगातार राज्य आई एम ए और राज्य झासा नेतृत्व के संपर्क में रहा, झासा अध्यक्ष और सचिव से बात होती रही है।

# सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पलोजोरी में रिव्यू मीटिंग आयोजित

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर. NCD स्क्रीनिंग एवं फॉलोअप का स्टेटस एवं monitoring करने हेतु डॉ देवजीत सरकार स्टेट NCD कंसल्टेंट, WHO एवं जिला एन.सी. डी कोषांग के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पालोजोरी में रिव्यु मीटिंग रखा गया । सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पालोजोरी के सभी स्वास्थ्य उपकेंद्र में NCD स्क्रीनिंग एवं फॉलोअप से संबंधित डाटा का ऑनलाइन एंट्री का समीक्षात्मक बैठक किया गया तथा साथ ही देवघर जिला में NCD स्क्रीनिंग एवं फॉलोअप का ऑनलाइन एंट्री को बेहतर करने एवं वित्तीय वर्ष

2025 तक शत प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति हेतु चर्चा की गई । एन. सी. डी. से संबंधित स्क्रीनिंग सभी आम , स्वास्थ्य उपकेंद्र, पीएचसी इत्यादि में किया जाना है। NCD Screening हेतु लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उक्त लक्ष्य को प्रखण्ड बार जनसंख्या के आधार पर, वार्षिक, मासिक एवं 75/25 के अनुसार निर्धारित किया गया है । उक्त हेतु सभी आयुष्मान आरोग्य मंदिर NCD Clinic एवं अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं में सभी CHOS/ समी स्वास्थ्य कर्मियों को अपने स्तर से भागीदारी सुनिश्चित किया जाना है , ताकि 30 वर्ष से अधिक आयु के सभी व्यक्तियों का Population Based एवं Opportunistic Screening को बढ़ाया जा सके। उक्त समीक्षात्मक बैठक में रवि कुमार सिन्हा, एफ. एल. सी., रवि चंद्र मुर्मु डीपीए, अभिषेक कुमार लाल, डी-ईओ एन सी डी कोषांग, देवघर, आशुतोष कुमार, बी०डी०एम०, प्रवीण कुमार सिन्हा, बाम, सुजंती कुमारी, स्नेहा कुमारी, सावित्री तिग्गा, अर्पणा कुजूर, बबिता कुमारी, मुन्नी कुमारी, इत्यादि उपस्थित रहे।

# भाजपा ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में वीर कुंवर सिंह चौक से टावर चौक तक निकाला मसाल जुलुस

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

भारतीय जनता पार्टी देवघर जिला की ओर से पहलगाम में हुए कायराना मैं आतंकी हमले के विरोध वीर कुंवर सिंह चौक से टावर चौक तक विशाल मसाल जुलूस निकालकर पाकिस्तान के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया साथ ही साथ पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए गए जिस प्रकार धर्म पूछ कर निर्दोष पर्यटकों की हत्या की गई वह काफी चिंताजनक विषय है सभी कार्यकताओं में पाकिस्तान के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया गया और कहां गया पाकिस्तान संभल जाओ अब वह भारत नहीं है तुमने जितने निदोर्षों का खून बहाया है जितने निर्दोष की हत्या की है एक-एक हत्या का बदला भारत भारत लेगा हम पाकिस्तान को बतला देना चाहते तुम संभल जाओ हमारे निर्दोष पर्यटकों की कुबार्नी व्यर्थ नहीं जाएगी एक-एक का बदला भारत लेगा बहुत शर्म की बात है धर्म पूछ कर हत्या करना इस विशाल प्रदर्शन में मुख्य रूप से उपस्थित संतोष उपाध्याय अधीर चंद्र भैया विशाखा सिंह, सरिता बरनवाल ,उमा गुप्ता।रंजीत, ईश्वर राय, लखन,रितेश केशरी, अंश देव राजपूत, विनय चंद्रवंशी, आशीष, आशीष दुबे, बमबम दुबे, सोनधारी झा, राजीव रंजन सिंह, आशीष झा, अभय आनंद झा, धनंजय खवाड़े, रूपा केशरी , सौरव पाठक , चिरंजीव मिश्रा। एवं सैकड़ो कार्यकर्ता मुख्य रूप से उपस्थित थे

## संक्षिप्त समाचार

### बिजली के करंट की चपेट में आकर एक युवक की मौत

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - थाना क्षेत्र के बोंडो गांव में बुधवार को हाईटेंशन बिजली के करंट की चपेट में आकर पश्चिमी सिंहभूम के एक मजदूर की मौत हो गयी. मृतक की पहचान हाट गम्हरिया के अमाड़ीया टोली निवासी बड़कुंवर कोड़ा 30 वर्ष के रूप में की गयी है. घटना करीब दिन के बारह बजे की है. बताया जा रहा है कि हटिया से लोहरदगा गये दो लाख बीस हजार वोल्ट के तार के नीचे बड़कुंवर कोड़ा सहित अन्य मजदूर बांस की छंटाई कर रहे थे. इसी क्रम में तेज हवा के कारण बांस करंट प्रवाहित हाई वोल्टेज तार के संपर्क में आ गया और करंट से जलकर बड़कुंवर कोड़ा की मौके पर ही मौत हो गयी. हाई वोल्टेज करंट से बांस के झुंड में भी आग लग गया था. जिसके चलते काफी देर के बाद बड़कुंवर कोड़ा के जले हुए शव को लेकर उसके साथी रेफरल अस्पताल लेकर पहुंचे थे. सूचना मिलने पर मांडर पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया है!

### सैकड़ो नौजवान के द्वारा कैंडल मार्च आयोजित कर पहलगाम के पर्यटकों को दिया गया श्रद्धांजलि

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज शाम मोहनपुरहाट में जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा सत्ताईस पर्यटकों को धर्म पूछ पूछ कर गोलियों से हत्या कर दी गई इस बाबत हम लोग मोहनपुर हाट में सभी पर्यटकों को श्रद्धांजलि कैंडल मार्च निकाला गया एवं दो मिनट का मौन व्रत कर सैकड़ो युवाओं द्वारा आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि अर्पित किया गया साथ ही कैंडल मार्च शिव मंदिर से मोहनपुर हॉट होते हुए पदयात्रा को डॉ भीमराव अंबेडकर प्रतिमा के पास विराम दिया गया पदयात्रा को नेतृत्व कर रहे अमन गुप्ता अभिषेक ठाकुर देवनारायण दास अजय झा शिवम कुमार झुनझुन झा चंदन रजक गौतम रावत रुपेश चौधरी सोनू सिंह शिव कुमार सुरज शोरेण राकी झा भोला गुप्ता राजेन्द्र साह सुनील मंडल संदीप कुमार ब्रह्म देव कुमार संतोष कापरी रोहन ननदु कुमार संजीव कुमार मनटु कापरी राहुल कापरी रामलखन कापरी रनधीर यादव सैकड़ों युवा के द्वारा कैंडल मार्च में श्लोगन के साथ श्रद्धांजलि अर्पित किया गया

### पहलगाम में आतंकवादी हमले में मारे गए भारतीय नागरिकों को पाकुड़ कांग्रेसियों ने दि श्रद्धांजलि

रिपोर्ट अविनाश मंडल

पाकुड़:भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी हमले में मारे गए निर्दोष भारतीय नागरिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए कैंडल मार्च का आयोजन किया। आपको बता दे पहलगाम में मंगलवार को एक आतंकी हमला हुआ, जिसमें 2 दर्जन से अधिक नागरिक मारे गए। इस हमले में हमास के हमले की तरह ही नागरिकों पर अंधाधुंध फायरिंग की गई। हमलावरों ने पहलगाम के एक लोकप्रिय टूरिस्ट स्पॉट पर हमला किया और लोगों की धार्मिक पहचान की पुष्टि करने के बाद उन्हें निशाना बनाया। जिससे पाकुड़ कांग्रेस ऐसी घटना को लेकर गंभीर और शोक मे है, जिसको लेकर मारे गए निर्दोष व्यक्तियों के लिए बुधवार को पाकुड़ युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष बिलाल शेख के नेतृत्व में जिला कांग्रेस भवन के समक्ष कैंडल मार्च निकाला गया, जिसमें मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई मौके पर सैकड़ो युवा कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे.

### आतंकी हमले के विरोध में युवा कांग्रेस का कैंडल मार्च, पाकिस्तान का झंडा जलाकर जताया आक्रोश

**देवघर।** कश्मीर के कहलगांव में हुए आतंकी हमले में निर्दोष पर्यटकों की हत्या के विरोध में युवा कांग्रेस देवघर जिला द्वारा बुधवार की शाम को कैंडल मार्च निकाला गया। यह मार्च युवा कांग्रेस के जिला अध्यक्ष कुमार राज उर्फ राहुल राज सिंह के नेतृत्व में निकाला गया, जिसमें हमले में मारे गए मासूमों को श्रद्धांजलि दी गई और उनकी आत्मा की शांति के लिए मौन रखा गया। मार्च के दौरान कार्यकताओं ने पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए और आतंकी घटनाओं के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की। कार्यकताओं ने कहा कि यह हमला भारत की आत्मा पर वार है, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकताओं ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से इस्तीफे की मांग की और सरकार पर सुरक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल उठाए। इस विरोध के दौरान पाकिस्तान के झंडे को भी आग के हवाले कर युवाओं ने अपना गुस्सा जाहिर किया। युवा कांग्रेस नेताओं ने कहा कि इस हमले के पीछे जो भी दोषी हैं, उन पर सरकार को जल्द से जल्द कठोर कार्रवाई करनी चाहिए और आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। इस प्रदर्शन में जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष डॉ. मुन्नम संजय, कांग्रेस जिला अध्यक्ष प्रो. उदय प्रकाश, प्रदेश महासचिव आदित्य सिरोलिया, गोपाल गौतम, पंद्रह सूत्री सदस्य आफताब आलम, उपाध्यक्ष चंदन कुमार, विनोदमणि पासवान, अरबाज अंसारी, राजकमल यादव, लालन यादव, दिवाकर राज, प्रीतम भारद्वाज, सूरज सिंह, रवि वर्मा, मुकेश बरनवाल, आलोक कुमार, प्रिंस कुमार, पीयूष पाठक, रोहित राज, पवन कुमार राउत, आजाद चौहान सहित सैकड़ों कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी शामिल रहे।

# गोह में धूमधाम से मनाई गई अम्बेडकर जयन्ती, समारोह में शिक्षक का विवादित बयान बना चर्चा का विषय

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह( औरंगाबाद) गोह प्रखंड के हाई स्कूल खेल मैदान में भारतीय संविधान निमार्ता, भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित विशाल समारोह में समाज के विभिन्न वर्गों, जनप्रतिनिधियों और अंबेडकरवादी आंदोलनों से जुड़े प्रमुख नेताओं ने भाग लिया और डॉ. अंबेडकर के विचारों को समाज में फैलाने का आह्वान किया।इस दौरान गोह में पिछले दिन असमाजिक तत्वों द्वारा डॉ अम्बेडकर की प्रतिमा को तोड़े जाने पर निंदा की गई साथ ही प्रशासन से करवाई की मांग की गई। कार्यक्रम के दौरान सेवा निवृत्त शिक्षक शिव शंकर राम ने अपने संबोधन में हिन्दू धर्म को ₹घटिया धर्म₹ कहकर एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया। उन्होंने कहा, ₹डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों को अपनाकर ही समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। उनके इस बयान पर मंच पर और श्रोताओं में मिली-जुली प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं। स्थाई निवेदक देवरंजन दास अंबेडकर ने कहा कि ₹डॉ. अंबेडकर के विचारों को जन-जन तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य है। आयोजन समिति के अध्यक्ष नागेश्वर प्रसाद सिंह ने कहा कि ₹जयन्ती का उद्देश्य बाबा साहब के विचारों का प्रचार-प्रसार और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना है। वही समाजसेवी और अंबेडकरवादी विचारक डॉ. आर. यू. कुमार ने कहा कि ₹आज भी समाज में समानता की कमी है। जब तक बाबा साहब के विचारों को हम अपने व्यवहार में नहीं उतारते, तब तक वास्तविक सामाजिक न्याय संभव नहीं है।₹ उन्होंने संविधान को भारतीय लोकतंत्र की आत्मा बताया और युवाओं से आह्वान किया कि वे डॉ. अंबेडकर के विचारों का गहराई से अध्ययन करें। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के अरवल जिलाध्यक्ष मनोज सिंह यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि डॉ. अंबेडकर का आंदोलन आज भी प्रासंगिक है। जब तक दलितों, पिछड़ों और वंचित वर्गों को उनका हक नहीं मिलेगा, तब तक यह आंदोलन चलता रहेगा। उन्होंने युवाओं से राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की। जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि मो. एक लाख खान ने कहा कि ₹डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज को न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व का रास्ता दिखाया। आज जरूरत है कि हम उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज में फैली असमानता और भेदभाव को जड़ से समाप्त करें। कार्यक्रम का संचालन रामजी पासवान ने किया और अध्यक्षता नागेश्वर प्रसाद ने। कार्यक्रम में डॉ. आर. यू. कुमार, बसपा जिलाध्यक्ष मनोज सिंह यादव, जिला परिषद प्रतिनिधि मो. एक लाख खान सहित अन्य कई नेताओं ने भाग लिया। समारोह के दौरान संविधान की महत्ता, सामाजिक समानता और अंबेडकरवादी आंदोलन की दिशा पर भी विस्तार से चर्चा हुई।

## मठिया गांव में गोवर्धन योजना के तहत निर्मित गोबर गैस प्लांट का निरीक्षण, 8 परिवारों को मिल रहा स्वच्छ ईंधन का लाभ

**साहिबगंज** :झारखंडः स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत संचालित गोवर्धन योजना (GOBARDhan Yojana) के तहत मठिया गांव में निर्मित गोबर गैस प्लांट का निरीक्षण उपयुक्त हेमंत सती द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि इस संयंत्र से गांव के 8 परिवारों को स्वच्छ और टिकाऊ ईंधन की सुविधा प्राप्त हो रही है। इससे न केवल उनके रसोई संबंधी खर्चों में कमी आई है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दर्ज किया गया है।स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि गोबर गैस के उपयोग से उन्हें लकड़ी और कोयले जैसे पारंपरिक और प्रदूषणकारी ईंधनों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। इसके चलते धुएं से होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं में कमी आई है और महिलाओं को खाना पकाने में भी पहले की तुलना में कम समय लग रहा है।निरीक्षण के दौरान उपयुक्त हेमंत सती ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस प्रकार के सफल मॉडल को अन्य गांवों में भी लागू किया जाए, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने कहा कि गोवर्धन योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के साथ-साथ पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी बेहद प्रभावी सिद्ध हो रही है।यह पहल सतत ग्रामीण विकास, स्वच्छ ऊर्जा के प्रचार-प्रसार और हरित झारखंड की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ किए गए स्वच्छ भारत मिशन और सरकार की हरित ऊर्जा नीति को धरातल पर उतारने का प्रभावशाली उदाहरण है।

## वैदिक मंत्र उच्चारण करते हुए कलश के जल से भगवान बलभद्र की प्रतिमा का स्नान करा श्रृंगार पुजन कि गई.

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़;शिव शीतला मंदिर प्रांगण में चल रहे । ब्याहुत समाज के कुल देवता भगवान बलभद्र की प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान के दूसरे दिन बुधवार को शीतला मंदिर छठ पोखरा से कलश में जल भरकर महिलाओं ने मंदिर परिक्रमा की , तत्पश्चात प्रतिमा का शुद्धिकरण को लेकर वैदिक मंत्र उच्चारण करते हुए कलश के जल से भगवान बलभद्र की प्रतिमा का स्नान आदि कराकर श्रृंगार पुजन किया गया । पूरे दिन पूजा अर्चना चलती रही लोग आते जाते रहे ।शिव शीतला मंदिर के आसपास वैदिक मंत्र उच्चारण की ध्वनि से क्षेत्र भक्तिमय हो गया । दोपहर बाद हवन हुआ । सांयकाल में भगवान बलभद्र को 56 प्रकार का भोग लगाया गया और महाआरती हुआ। आरती में समाज सैकड़ों सदस्य महाआरती में शामिल हुए। महा आरती के बाद विशाल भंडारा का आयोजन किया गया जिसमें लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और अपनी भागीदारी निभाई । भक्त अपने-अपने तरीके से अपने कुल देवता की सेवा कर दरबार में हाजिर होकर उपस्थिति दर्ज कराने में जुटे थे। मौके पर ब्याहुत समाज के अध्यक्ष अशोक भगत, सचिव अशोक कुमार भगत जगदीश भगत मुन्ना भगत , दिलीप भगत,राजेन्द्र भगत,राजीव भगत काली शंकर भगत,राजा भगत, अभिषेक भगत,अमर भगत, सन्नी भगत, कैलाश भगत गौरीशंकर भगत,तारकेश्वर भगत,अमन भगत, संजय भगत बद्री भगत शिवानंद भगत विनय भगत व समाज की महिला अध्यक्ष रश्मि भगत के अलावा लेना भगत जुगनू भगत रीना भगत मधुर माला देवी सरिता भगत माला देवी, लीला भगत के अलावा अन्य मौजूद थे ।

## अब समय आ गया है पाक जिहादी को कठोर जवाब दे भारत,विहिप

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के विभाग सह मंत्री विक्रम सिंह वं जिला संयोजक अभिषेक मिश्रा ने संयुक्त बयान मे कहां जम्मू कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को हुई भीषण आतंकी घटना की निंदा करते हुए कहा है कि अब समय आ गया है कि इस्लामिक जिहादी पाकिस्तान व उसके कश्मीरी स्लीपर सेल के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही सुनिश्चित कर घाटी में पुनः सिर उठाने का दुस्साहस करने वाले मजहबी आतंकवाद का समूल नाश हो। उन्होंने कहा है कि कश्मीर घाटी के पहलगाम में जिस प्रकार यात्रियों के पेंट उतारकर, कलमा पूछ कर और आईडी चेक कर, जब यह सुनिश्चित हो गया कि वे मुस्लिम नहीं है, उनका नरसंहार किया गया, घोर निंदनीय है। इस अमानवीय घटना पर संपूर्ण देश स्तब्ध व आक्रोशित है। यह साफ दिखाई दे रहा है कि 1990 के आतंकवाद के दिनों की वापसी का दुस्साहस हो रहा है। कश्मीर घाटी में आतंकवादियों के स्लीपर सेल आज भी मौजूद हैं जो पाकिस्तान के इशारे पर कभी भी आतंकवाद के इन घृणित घटनाओं को करने के लिए तत्पर रहते हैं। उन्होंने स्मरण कराया कि कुछ दिन पूर्व ही एक सांसद ने कहा था कि कश्मीर में जो यात्री या पर्यटक आ रहे हैं या जमीन खरीद रहे हैं वे यहां सांस्कृतिक अतिक्रमण कर रहे हैं।उसके कुछ दिन के बाद ही, पाकिस्तान के सेना अध्यक्ष ने कहा कि था हमारे सामने कश्मीर को वापस लेना ही एक मात्र एजेंडा रह गया है। अपने उसे एजेंडे की पूर्ति के लिए ही शायद उसने यहां जिहादी आतंकवादी हमला कराया! विहिप नेता ने यह भी कहा कि यह कोई सामान्य आतंकवादी घटना नहीं अपितु, पाकिस्तान का भारत के विरुद्ध खुले युद्ध की घोषणा है। इसका जवाब भारत सरकार को उतनी ही शक्ति से देना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आतंकवाद के दिन दुबारा लौटने का और पाकिस्तान का कोई नेता या सैन्य अधिकारी इस तरह के शब्द बोलने की दुस्साहस ना कर सके। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि आतंकवादी का कोई धर्म नहीं होता लेकिन उसका मजहब अवश्य होता है, यह साफ दिखाई देता है। उन्होंने यह भी कहा कि जब भारत के मुस्लिम नेता इस निर्मम नरसंहार पर क्यों चुप्पी साधे हैं? वे वक्फ एक्ट का झूठा डर दिखाकर तो पूरे देश में अफरा तफरी मचा सकते हैं लेकिन, कश्मीर घाटी में मारे गए इन मासूम हिंदू यात्रियों की हत्या के विरोध में सड़क पर उतरने का साहस नहीं कर सकते! यह स्थिति अच्छी नहीं है ।इसको स्वीकार नहीं किया जा सकता। पूरा देश इस समय गुस्से में है। इस पर त्वरित कार्यवाही होनी चाहिए अन्यथा यह आक्रोश और बढ़ सकता है। घटना पर आक्रोष व्यक्त करने हेतु विश्व हिन्दू परिषद सभी हिंदुओं से आह्वान किया कि आप कोई भी समान वस्तु हिंदू दुकान से ही खरीदे और वस्तु खरीदने के पहले दुकानदार की पहचान कर ले। साथ ही सभी लोग से अपील किया कि हमारा जाती हिंदू है हम न बाटे कश्मीर में जाति नहीं हिंदू देखकर हत्या किया गया है। उन्होंने बताया कि केंद्र एवं प्रांत के दिशा निर्देश के अनुसार 25 तारीख को पूरे भारत में बजरंग दल के बैनर तले राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

## पहलगाम आतंकी हमले पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध करते हुए कैंडल मार्च निकाला

रिपोर्ट अविनाश मंडल

पाकुड़: जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों और स्थानीय लोगों पर हुए आतंकी हमले के विरोध में आज पाकुड़ नगर में अंबेडकर चौक से गांधी चौक तक कैंडल मार्च निकाला गया। इस हमले में शहीद हुए देशवासियों की याद में भारतीय जनता पार्टी ने सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। गांधी चौक पहुंचकर कार्यकत्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित किया। जिला अध्यक्ष अमृत पाण्डेय ने कहा कि देश आज सुरक्षित हाथों में हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस हमले को लेकर बेहद गंभीर हैं। उन्होंने अपनी विदेश यात्रा बीच में रोकर स्वदेश आ गए हैं।इस हमले से मानवता को बड़ा आघात पहुंचा है। लोगों का धर्म पूछकर गोली मारना साफ दशार्ता है कि इस हमले में पाकिस्तान का हाथ है। दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। आतंक के खिलाफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जीरो टॉलरेंस नीति है। आर्तकियों को मुंहतोड़ और जोरदार तरीके से जवाब दिया जाएगा। आतंक के खिलाफ पूरा देश एकजुट है। पर्दे के पीछे छिपे लोगों ने नहीं बख्शा जाएगा। इस हमले के मास्टरमाइंड को भी नहीं बचेंगे। ऐसा जवाब मिलेगा कि पूरी दुनिया देखेगी। उन्होंने कहा कि इस कायराना और अमानवीय कृत्य में कई निर्दोष लोगों की जान गई है। हम सभी दिवंगतों की पुण्यात्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित

करते हैं। इस घृणित कृत्य में अपने प्रियजनों को खोने वाले सभी शोकाकुल परिवारों के प्रति गहरी संवेदना हैं । आतंकवाद के खिलाफ हमारा देश एकजुट है, आतंकवादियों की जम्मू-कश्मीर को अशांत करने की कोई भी साजिश कभी कामयाब नहीं होगी और इस कुकृत्य का मुँहतोड़ जवाब आर्तकियों को अवश्य मिलेगा। इस कार्यक्रम में पजिला महामंत्री रूपेश भगत,नगर अध्यक्ष सोहन मंडल, सपन दुबे, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष दीपक साह आई टी जिला संयोजक पार्थ रक्षित, अनामिका कुमारी, मोहन सरकार, अजा मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष अजीत रविदास, मनोरंजन सरकार, त्रिलोचन दास हिसाबी राय, सुशील साह, पवन भगत, दुलाल सिंह, अरुण सरदार, संजीव साह सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

## क्षत्रिय महासभा ने वीर कुंवर सिंह विजयोत्सव पर माल्यार्पण उनकी वीरता को नमन किया

रिपोर्ट अविनाश मंडल

पाकुड़। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक और अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिला देने वाले वीर कुंवर सिंह की वीरता और बलिदान को याद करते हुए अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा पाकुड़ जिला इकाई द्वारा विजयोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बाबू वीर कुंवर सिंह की भव्य प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें कोटि-कोटि उनकी वीरता और बलिदान को याद किया गया । कार्यक्रम में शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे, जिनमें हृदय नारायण सिंह, ललन सिंह, राजा सिंह, उज्जवल सिंह, जय नारायण ओझा, हरेंद्र सिंह, चंदन सिंह, रवि सिंह, आदित्य सिंह, सनी सिंह, विशाल सिंह, अरविंद सिंह, बबलू सिंह, राजकुमार सिंह, दिलीप सिंह, उमेश सिंह सहित अन्य क्षत्रिय महासभा के सदस्य मौजूद रहे। सभी ने एक स्वर में वीर कुंवर सिंह के शौर्य और बलिदान की सराहना की। इस अवसर पर पूर्व जिला परिषद सदस्य बाबू धन मुर्मू, भाजपा नेता हिसाबी राय, अनुग्रहित प्रसाद शाह और युवा नेता प्रसन्ना मिश्रा ने भी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर बाबू वीर कुंवर सिंह की वीरता को नमन किया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने वीर कुंवर सिंह को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक बताते हुए कहा कि 80 वर्ष की आयु में जिस तरह से उन्होंने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी, वह भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। कार्यक्रम को सफल बनाने में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा पाकुड़ इकाई की अहम भूमिका रही।

## गुप्त सूचना पर छापामारी कर पान की गुमटी से मिला भारी मात्रा में गांजा तस्कर गिरफ्तार

रिपोर्ट अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ बुधवार को गुप्त सूचना के आधार पर जिला प्रशासन द्वारा बड़ी कार्रवाई की गई हैं, आपको बता दे की कार्यपालक दंडाधिकारी, पाकुड़ की उपस्थिति में जिदातो मिशन गेट स्थित एक पान की गुमटी में छापेमारी कर तलाशी ली गई, तलाशी के दौरान गुमटी से भारी मात्रा में गांजा बरामद हुआ, जिसे विधिसम्मत तरीके से जब्त कर लिया गया। छापेमारी के दौरान गांजा के अवैध क्रय-विक्रय एवं भंडारण के आरोप में गुमटी के मालिक अरविंद कुमार यादव, पिता- स्वर्गीय हिरालाल यादव, निवासी- बलिहारपुर, थाना- नगर, जिला- पाकुड़ को मौके से गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार अरविंद कुमार यादव लंबे समय से इस अवैध धंधे में लिप्त था और गांजा की तस्करी के नेटवर्क का अहम हिस्सा माना जा रहा है। पुलिस द्वारा इस मामले में आगे की कार्रवाई जारी है। जब्त किए गए मादक पदार्थों को जांच के लिए भेजा गया है और अभियुक्त से पूछताछ कर अन्य संलिप्त व्यक्तियों की पहचान करने की कोशिश की जा रही है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि मादक पदार्थों के खिलाफ यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

### वीर कुंवर सिंह की 169वा विजयोत्सव समारोह मनाया गया

**साहिबगंज** : शहर के टाउन हॉल परिसर में बुधवार को वीर कुंवर सिंह मंच , साहिबगंज की ओर से बाबू वीर कुंवर सिंह की 169 वा विजयोत्सव समारोह बड़े ही धूमधाम से मनाई गई। मुख्य अतिथि नगर परिषद प्रशासक अभिषेक कुमार सिंह सहित डॉ विजय कुमार, संयोजक राजेश्व सिंह डॉ सुमित कुमार, गणेश तिवारी, चंदेश्वरी प्र सिन्हा अध्यक्ष डॉ रणजीत कुमार सिंह सचिव संतोष सिंह जय प्रकाश सिन्हा अनवर अली अन्य ने प्रतिमा पर माल्यार्पण करके व दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वही उन्होंने कहा कि अस्सी वर्षों की हड्डी में जागा जोश पुराना था। सब कहते हैं कुंवर सिंह भी बड़ा वीर मदार्ना था। उदारता साहस व शौर्य के परम प्रतीक, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महायोद्धा राष्ट्र के शान बाबु वीर कुंवर सिंह थे। वही कार्यक्रम में मंच के सदस्यों व स्कूल कॉलेज के छात्रों ने वीर कुंवर सिंह के जीवनी के बारे में बताया। वही जम्मू कश्मीर पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी शब्दों में निंदा किया और घायल लोगों के अच्छे स्वास्थ्य व दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्राथना किए। मौके पर मंच के नरेश सिंह , जवाहर सिंह, ललन सिंह, बच्चन सिंह, मदन सिंह , अनिल सिंह, अरविंद सिंह , अनूप कुमार सिंह, रंजन सिंह, मुकेश सिंह, रविंद्र कुमार सिंह, मदन सिंह, बच्चन सिंह , आफताब आलम, मुनीम पांडे, तीनपहाड़ काजी गांव के प्रवीर सिंह, राजा सिंह , बिट्टू सिंह , अमरनाथ सिंह ,छात्रा सुप्रिया सहित दर्जनों वीर कुंवर सिंह मंच के सदस्य अन्य थे।

### सरस्वती शिशु उच्च माध्यमिक विद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी वीर कुंवर सिंह जयंती उत्साहपूर्वक मनाई गई

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के अदरी नदी स्थित सूर्य मंदिर के नजदीक सरस्वती शिशु उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में बिहार के महान स्वतंत्रता सेनानी बाबू वीर कुंवर सिंह जयंती उत्साहपूर्वक मनाई गई। बताते चलें कि सरस्वती शिशु उच्च माध्यमिक विद्यालय में दिनांक 23/04/25 को स्वतंत्रता सेनानी तथा बिहार के निवासी तथा महान स्वतंत्रता सेनानी बाबू वीर कुंवर सिंह की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस कार्यक्रम का उद्घाटन विद्यालय के प्रधानचार्य श्रीमान नीरज कुमार कौशिक एव श्री राकेश पाण्डेय श्री सुरेश प्रसाद मेहता के द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया गया,और कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया,आगे इस कार्यक्रम में बाबू वीर कुंवर सिंह के जीवन एवं कृतित्व को वास्तविक जीवन मे उतारने के लिए प्रधानाचार्य नीरज कौशिक ने भैया - बहन को प्रेरित किया और इनके द्वारा किए गए कार्य के प्रति संकल्पित होने का सुझाव दिया,इस कार्यक्रम के अवसर पर बहन आदिती कुमारी का प्रेरणादायी और ओजस्वी वाणी से श्रोता मनमुग्ध हो गए। आचार्य श्री चन्दशेखर सिंह एवं रामकिंकर चौधरी ने अपने विचार व्यक्त किए और मीडिया प्रभारी रविरंजन कुमार सहित कई छात्र छात्राए उपस्थित थे।

## संक्षिप्त समाचार

### जिला दंडाधिकारी की अध्यक्षता में उत्प्रवाह, अनाबद्ध निधि, आकांक्षी मद एवं नीति आयोग योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक आयोजित

**साहिबगंजः** जिला दंडाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में DMFT, अनाबद्ध निधि, आकांक्षी मद, नीति आयोग आदि मद के अंतर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में DMFT, अनाबद्ध निधि, आकांक्षी मद, नीति आयोग आदि मद के तहत संचालित योजनाओं एवं वित्तीय वर्ष 2024-2025 की प्रगति की जानकारी ली गई तथा संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।बैठक के दौरान कार्यपालक अभियंता (NREP), ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, असैनिक शल्य चिकित्सा, भवन प्रमंडल, समेकित जनजातीय विकास अभिकरण एवं नगर परिषद के अंतर्गत संचालित योजनाओं की विस्तार से समीक्षा की गई। उपायुक्त ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि कार्यों को समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए एवं गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए। समीक्षा के क्रम में सदर अस्पताल में पेइंग वार्ड निर्माण, प्रखंड स्तरीय पुस्तकालय का कार्य, संध्या महाविद्यालय के समीप महिला शौचालय , मध्य विद्यालय सकरीगली, बरहेट में छह अतिरिक्त कक्षा का निर्माण, बाल गृह भवन की मरम्मती कार्य, राजमहल प्रखंड अंतर्गत छोटा हरीशचंद्रपुर में विश्राम गृह का निर्माण, स-हेबगंज जिला में वेस्ट वंडर पार्क निर्माण, PVTGS समुदाय परिवारों को रोजगार के अवसर प्रदान हेतु मशरूम उत्पादन, जिला स्तरीय खेल उपकरण उपलब्धता, मुख्यमंत्री रख-रखाव योजना की प्रगति की विस्तृत जानकारी ली गई।बोरियो प्रखंड के बांझी, बंदरकोला, चांदवासी में स्थित एसटी/एससी आवासीय बालक उच्च विद्यालय में पीवीटीजी छात्रों के लिए मॉड्यूलर किचन सह डाइनिंग हॉल के उन्नयन की समीक्षा की गई।बैठक में प्रबंधकीय समिति के तहत कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किए गए, जिनमें कल्याण विभाग के प्रत्येक आवासीय विद्यालय में दो शिक्षकों की नियुक्ति, मॉडल किचन के लिए सामग्री की उपलब्धता एवं अन्य व्यवस्थाओं का प्रस्ताव शामिल है।

### पहलगाम आतंकी हमले के खिलाफ देश भर में भयंकर आक्रोश - डॉ सुरेश पासवान

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- बिहार सरकार के पूर्व मंत्री एवं राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉक्टर सुरेश पासवान ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा है कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में दर्जनों बेगुनाह पर्यटकों को गेलियों से छलनी कर मौत के घाट उतार दिया गया जो देश के लिए गंभीर चिंता का विषय है।इस घटना ने एक बार फिर से मानवता एवं पुरे देश को झकझोर कर रख दिया है।इस हमले की जितनी भी निंदा की जाए वह कम होगा,मैं शोंक सम्पत परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। इस वीभत्स हमले के बाद देश भर में आक्रोश का माहौल है,इस आतंकी हमले के खिलाफ पुरा देश एकजुट है ।इस हमले ने एक बार फिर जम्मू कश्मीर की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिये हैं। डॉ पास-ावान ने कहा है कि देश और प्रदेश में बढ़ते जातीय एवं धार्मिक आतंक को रोकने के लिए सरकार को कठोर कानून बनाना चाहिए साथ ही इस तरह के आतंकी कृत्यों में शामिल व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चा-हए।इस समय हमें अपने राजनीतिक मतभेदों को भुलाकर एकजुट होकर आतंकवाद और धार्मिक हिंसा फैलाने वालों के खिलाफ दृढ़ता से लड़ना होगा ताकि दुश्मन को भी पता चल सके कि आतंकवाद के विरूद्ध पुरा देश एकजुट होकर लड़ने को तैयार है।

### पहलगाम घटना पर साहित्यकारों ने शोक व्यक्त किया

**मृतकों में औरंगाबाद के साहित्यकार डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा के रिश्तेदार**

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय स्थित महाराणा प्रताप चौक के समीप अवस्थित सिद्ध पीठ के पास जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन परिवार एवं समकालीन जवाबदेही परिवार के संयुक्त तत्वावधान में 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर 26 पर्यटकों को नृशंस हत्या के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया गया।आतंकवादियों के खिलाफ कड़ी का-र्रवाई की मांग की गई।सभी मृतकों के सम्मान में 2 मिनट का मौन रखा गया एवं उनके आत्मा के शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। मृतकों में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं समकालीन जवाबदेही पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा के भगीना के पुत्र मनीष रंजन भी शामिल है। मनीष रंजन आईबी के अधिकारी थे और हैदराबाद में पदस्थापित थे। इधर छुट्टी लेकर वे कश्मीर घूमने गए थे। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह के अध्यक्षता में आयोजित शोकसभ में सभी साहित्यकारों,बुद्धिजीवियों ने अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि घटना दर्दनाक है।घटना से सभी लोग आहत एवं मर्माहत हैं। कवि लव कुश प्रसाद सिंह, प्रोफेसर रामविलास सिंह, इंजीनियर बलराम सिंह, शिक्षक नेता राम भजन सिंह,पूर्व प्रधानाध्यापक राम सुरेश सिंह,अशोक कुमार सिंह,अर्जुन सिंह,प्रोफेसर शिवपूजन सिंह,अलख देव सिंह, सेवानिवृत्त अधिकारी हरेंद्र सिंह,आशुतोष रंजन चंदन पाठक,सुरेश विद्यार्थी सहित अन्य उपस्थित थे।

### कम समय में होंगे अनुसंधान पूरा किया जाए - विनय कुमार

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- पुलिस अधीक्ष-ाक के निदेर्शानुसार जिले के पुलिस अनुसंधानकर्ता का माननीय सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली द्वारा अनेश कुमार मामला एवं इससे सम्बन्धित अन्य मामलों में दिये गये दिशानिर्देश के आलोक में जिला अभियोजन कार्यालय औरंगाबाद के तत्वावधान में योजना भवन सभागार में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विनय कुमार अनुमंडलीय अभियोजन पदाधिकारी दाउदनगर द्वारा विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया, जिला अभियोजन पदाधिकारी दीपक कुमार सिन्हा और अनुमंडलीय अभियोजन पदाधिकारी संजय कुमार सिंह ने अनुसंधानकर्ता के प्रश्नों और समस्याओं का समाधान किया, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि इस कार्यक्रम में यह भी बताया गया कि कंप्यूटराइज्ड अनुसंधान से अनुसंधान के समय में बचत होगी, प्राथमिकी अनुसंधान कम्प्यूटरिकृत रहेंगे, साक्ष्य लैपटॉप में संग्रहीत रहेंगे, आरोपपत्र ओनलाइन दाखिल होंगे, अनुसंधान डेटा रिकॉर्ड होगा, स्टोर होगा, साझा होगा, न्यायधीश ओनलाइन अनुसंधान देख कर जमानत याचिका पर आसानी से निर्णय लें सकेंगे, संज्ञान लेने विलम्ब नहीं होगी, जिससे पेपरलेस अनुसंधान और भारतीय न्याय संहिता का उद्देश्य सफल होंगे।

# शौर्य दिवस पर पटना में गूँजा 'जय सांगा' का उद्घोष

## भारतीय वायुसेना की सूर्यकिरण व आकाशगंगा टीम द्वारा ऐतिहासिक प्रदर्शन

- राजीव प्रताप रूडी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे
- पहलगाम आतंकी हमले की तीव्र निंदा, शहीदों को श्रद्धांजलि
- कार्यक्रम में बिहार सरकार के मंत्री और कई वर्तमान व पूर्व विधायक उपस्थित थे।
- प्रमुख राजनेताओं और सामाजिक प्रतिनिधियों के साथ राज्य भर से क्षत्रिय समाज के हजारों गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।
- वीर कुँवर सिंह विजयोत्सव समिति द्वारा बापू सभागार में भव्य आयोजन
- राजीव प्रताप रूडी का भावुक संबोधनः ₹यह शुरूआत है, अंत नहीं₹
- 'जय सांगा' नारे से क्षत्रिय समाज की नई पहचान की घोषणा
- सांसद नियंत्रण कक्ष को 24 घंटे सहायता केंद्र के रूप में समर्पित करने की घोषणा

**बिहार के कोने-कोने में क्षत्रिय समाज के संगठन का संकल्प**

**पटना,।** बाबू वीर कुँवर सिंह शौर्य दिवस के अवसर पर आज राजधानी पटना के बापू सभागार में शौर्य, स्वाभिमान और संगठन की त्रिधारा फूट पड़ी। क्षत्रिय समाज द्वारा आयोजित इस विराट समारोह में सारण सांसद सह पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रूडी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि यह भीड़ नहीं, यह चेतना है; यह सभा नहीं, यह उद्घोष है। राजीव प्रताप रूडी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे, जिनके प्रयासों से भारतीय वायुसेना के सूर्यकिरण और आकाशगंगा टीम के लड़ाकू विमानों ने गगनभेदी गर्जना के साथ बाबू वीर कुँवर सिंह को आकाश से ऐतिहासिक सलामी अर्पित की। कार्यक्रम में बिहार सरकार के मंत्री सुमित सिंह, पूर्व मंत्री नीरज कुमार सिंह बबलू , विधायक राजेश सिंह, विधायक कु. श्रेयसी सिंह, पूर्व विधायक स्वर्णा सिंह और विनय कुमार सिंह, भाजपा नेता संजय सिंह टाइगर जदयू नेता अजय सिंह (सिवान), निवेदिता सिंह, चंद्र विजय सिंह, बिट्टू सिंह, व्यास सिंह, रितेश सिंह, गोपाल शरण सिंह, यशवंत सिंह, मनोरंजं सिंह, मनोज सिंह, बाबू वीर कुँवर सिंह शौर्य दिवस आयोजन समिति के संरक्षक पद्मश्री डॉ. आर.एन. सिंह तथा संयोजक ब्रजेश सिंह सहित राज्य के विभिन्न जिलों से पधारे क्षत्रिय समाज के हजारों गणमान्य जन उपस्थित थे। इससे पूर्व गंगा तट पर भारतीय वायुसेना की सूर्यकिरण और आकाशगंगा टीमों ने अद्भुत और अविस्मरणीय प्रदर्शन कर आकाश में शौर्य की अमिट छाप छोड़ी। जब भारतीय सैनिक 20,000 फीट की ऊँचाई से तिरंगा लेकर उतरे और वीर बाबू कुँवर सिंह की छवि आकाश में लहराई, तो लगा जैसे इतिहास पुनः सजीव हो उठा है। रूडी ने अपने भावनात्मक संबोधन की श-रूआत पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए की और कहा कि भारत की धरती पर कायरता का कोई स्थान नहीं। वीरों की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। उन्होंने मंच से उद्घोष किया कि अब क्षत्रिय समाज अपनी पहचान, गरिमा और सम्मान की पुनर्स्थापना के लिए एकजुट होगा। ल रूडी ने कहा कि ₹जय श्रीराम₹ और ₹जय भवानी₹ के साथ अब नया उद्घोष होगा 'जय सांगा!' यह केवल नारा नहीं, बल्कि नवचेतना का सिंहनाद है। रूडी ने कहा कि बिहार के हर गाँव में एक पीपल, एक मिट्टी का ढेर, एक धागा और एक संकल्प जन्म लेता है, जो कालांतर में मंदिर बनता है – ठीक वैसे ही अब समाज को भी अपनी पहचान की नींव रखनी है। उन्होंने भावपूर्ण शब्दों में कहा कि हम सीढ़ी हैं, लोग चढ़ते हैं और लात मार देते हैं। अब नहीं। अब हम उस अगली पीढ़ी के लिए पुल बनेंगे, जिन्हें मंज़िल तक जाना है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि अब से सांसद नियंत्रण कक्ष बिहार के क्षत्रिय समाज के लिए 24 घंटे सहायता केंद्र के रूप में कार्य करेगा। किसी भी संकट, आपदा या जरूरत के समय समाज को अकेला नहीं छोड़ा जाएगा। डॉ. आर.एन. सिंह के अध्यक्षता में आयोजित इस भव्य समारोह में प्रदेश भर से आए युवाओं, महिलाओं और समाज के वरिष्ठ जनों ने अभूतपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया। रूडी ने इसे 1999 में दिल्ली के आयोजन की पुनरावृत्ति बताया, जब अटल बिहारी वाजपेयी जी ने मंच से आशीर्वाद दिया था। अपने ओजस्वी अंदाज में रूडी ने सभा का आह्वान करते हुए कहा कि अब मांगने का नहीं, दिशा देने का समय है। अब मौन रहने का नहीं, जय सांगा के स्वर में समाज को पुकारने का वक्त है। कार्यक्रम का समापन वीर बाबू कुँवर सिंह, महाराणा प्रताप और राणा सांगा के जयघोष के साथ हुआ। शौर्य का यह महायज्ञ पटना की धरती पर क्षत्रिय चेतना के नवप्रभात का प्रतीक बन गया।

# एनटीपीसी नबीनगर द्वारा निर्मित स्वास्थ्य केंद्र का उद्घघाटन जिला पदाधिकारी ने किया

## एनटीपीसी नबीनगर ने किया अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद- एनटीपीसी नबीनगर द्वारा निर्मित अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घघाटन जिला पदाधिकारी श्री श्रीकांत शास्त्री ने किया। बताते चलें कि नबीनगर प्रखंड के अंकोरहा में स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण एनटीपीसी नबीनगर ने अपने सामुदायिक विकास कार्यक्रम के तहत करवाया है। इस लोकार्पण कार्यक्रम में पॉवर प्लांट के प्रयोजना प्रमुख एवं कार्यकारी निर्देशक श्री एल के बेहेरा एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी, औरंगाबाद डॉ विनोद कुमार सिन्हा भी उपस्तिथ रहे। उद्घाटन के बाद औरंगाबाद जिलाधिकारी श्री श्रीकांत शास्त्री ने श्री एल. के. बेहेरा एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ विनोद कुमार सिन्हा के साथ भवन का निरीक्षण किया और आशा व्यक्त की कि यह भवन ग्रामीणों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। सारी जरुरी सुविधाओं से युक्त इस नवनिर्मित भवन को एनटीपीसी नबीनगर ने बिहार स-रकार को सौंप दिया है, जहां अब अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, अंकोरहा का संचालन किया जाएगा। इस नए स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण एनटीपीसी नबीनगर द्वारा ग्रामीण समुदायों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया है। उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी नबीनगर अपने सामुदायिक विकास कार्यक्रम एवं नैगम सामाजिक दायित्व (उरफ) के तहत परियोजना से सटे क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधारभूत संरचना के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रही है।

### एक-एक आतंकी का अंत जरूरी है चाणक्य परिषद

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष एवं चाणक्य परिषद के अध्यक्ष रामानुज पाण्डेय ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कड़े शब्दों में पहलगाम में हुए आतंकी हमले की निंदा की है आतंकियों ने मात्र 28 लोगों की नृशंस हत्या नहीं किया है बल्कि संपूर्ण भारत के सीने को छलनी करने का काम किया है एक-एक आतंकी को चुन-चुन कर उन्हें मौत की सजा देने की जरूरत है कश्मीर के अंदर एक बार शांति का माहौल स्थापित हो रहा था आतंकियों ने फिर से कश्मीर की घाटी को सुलगाने का काम किया है देश के गृहमंत्री ने घटना के तुरंत बाद कश्मीर जाकर और इस घटना से जुड़े आतंकियों के ऊपर कठोर कार्रवाई करने के लिए जो निर्णय लिया है उसकी हम सराहना करते हैं देश के माननीय प्रधानमंत्री ने विदेशी दौरे को रद्द कर देश में हुए इस घटना के लिए दौरा रद्द कर वापस देश में आकर और इस घटना की जानकारी लिए और कार्रवाई के लिए तत्पर हैं यह देश के लिए संतोष का विषय है लेकिन जिस प्रकार से आतंकियों ने कायराना हरकत किया है वह देश के लिए चिंता का विषय है लोगों का नाम और धर्म पूछ कर लोगों की हत्याएं किया जाना यह न सिर्फ मानवता के खिलाफ है बल्कि इस देश के लिए चुनौती का विषय है और इस चुनौती को स्वीकार करते हुए देश की सरकार तत्काल आतंकियों के खिलाफ और वैसे सारे संगठनों के खिलाफ जो धर्म के आधार पर देश के अंदर मानवता की हत्या कर रहे हैं और अत्याचार कर रहे हैं उनके विरुद्ध कठोर से कठोर कार्रवाई किया जाना चाहिए और देश में यह वातावरण बनाने की जरूरत है कि देश का एक नागरिक भी कहीं आए और जाए तो उसके साथ कोई अनहोनी नहीं होनी चाहिए इस घटना में औरंगाबाद जिले के चर्चित साहित्यकार डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र जी के भांजे के सुपुत्र मनीष रंजन जो आईबी में अधिकारी थे उनकी भी हत्या हुई है और साथ में और 27 लोगों की जो हत्या हुई है उसमें कई ऐसे लोग थे जिनकी हाल में शादी हुई थी सैलानी जो कश्मीर जाते हैं वह वहां के लोगों को रोजगार देते हैं लेकिन आतंकवादियों ने कश्मीर को फिर से एक बार अशांत करके देश के सामने और कश्मीर के साथ के लोगों के सामने चुनौती खड़ा किया है जिसकी हम सभी निंदा करते हैं इस घटना से संपूर्ण देश मर्माहत है संपूर्ण दुनिया स्तब्ध है और हम मांग करते हैं कि देश के अंदर आतंकवादियों को खत्म तो किया ही जाए पाकिस्तान जो आतंकवादियों को प्रश्रय देता है और भारत में आतंकवादी घटनाएं लगातार करवा रहा है अब समय आ गया है कि पाक अधिकृत कश्मीर को भारत के कब्जे में भारत की सुरक्षा के लिए लिया जाना आवश्यक है इसलिए भारत सरकार तत्काल पाक अधिकृत कश्मीर के लिए कार्रवाई सुनिश्चित करें।

# कायर पाकिस्तानी पिट्ठुओं को बक्सा नहीं जाए , भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य गोपाल शरण सिंह

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्य समिति सदस्य गोपाल शरण सिंह ने एक प्रेस नोट ब्यान जारी करते हुए बताया कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने सैलानियों पर हमला करके अपने ही हाथों अपना कब्र खोदने का काम किया है,यह भूल रहे हैं कि अभी देश में आतंकवादियों को बिरयानी खिलाने वाली सरकार नहीं है बल्कि उन्हें उन्हीं के भाषा में उनके घर में घुसकर जवाब देने वाली सरकार है ,कश्मीर को फिर से संसार का जन्नत बनाने का काम केंद्र की एनडीए सरकार माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी कर रहे थे , माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी के द्वार शांति स्थापित हो रही है धारा 370 हटाकर कश्मीर को देश के मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया गया वहां सब कुछ सामान्य हो रहा है लेकिन यह पाकिस्तान को और अलगाव-वादियों को पसंद नहीं है जम्मू कश्मीर में जब से चुनाव संपन्न हुआ है उस-के बाद स्थानीय नेता पाकिस्तान के समर्थन में राग अलाप रहे थे और उसी भाषा में पाकिस्तानी नेता और से उनके सेवा के अधिकारी भी बयान बाजी कर रहे थे भारत की नजर हर एक गतिविधियों पर है लेकिन आज के बदली हुई परिस्थिति में आतंकवादी भी कम प्रशिक्षण प्राप्त करके नहीं आते थोड़ी सी भी चूक होती नहीं कि वह अपने घटना का अंजाम देने में सफल हो जाते हैं क्योंकि पहलगाम में सैलानी लगातार आ रहे थे जा रहे थे कश्मीर के लगभग हर पर्यटन स्थलों पर सैलानियों का आने-जाने का क्रम जारी था स्वाभाविक है , जब शांतिपूर्ण ढंग से सब जगह सब कुछ चल रहा है तो लगता है कि परिस्थितियां सामान्य हो गई है,और यह आतंकवादी इन्हीं सामान्य प-रस्थितियों का इंतजार करते हैं और उन्होंने स्थानीय लोगों और को सैलानियों को धोखा देने में सफल हुए और भारतीय सेना के भेष में घुसकर उन्होंने इस कायरतापूर्ण घटना को अंजाम देने का काम किया है पहली बार है देश के इतिहास में की जम्मू कश्मीर में आतंकवादी घटना हुई और देश के गृहमंत्री कुछ ही घंटे में वहां पहुंच गए देश के प्रधानमंत्री विदेश का दौरा छोड़कर के वापस लौट गए और नहीं देश में बड़ी-बड़ी घटनाएं घटती थी और देश का प्रधानमंत्री विदेश का दौरा पूरा कर के ही आते थे,इस घटना का सबसे दुखद विषय है जाति धर्म पूछ कर लोगों की हत्या किया जाना यह देशवासियों और खास कर हिंदुओं को उद्वेलित करता है लेकिन यह मोदी सरकार है और अमित शाह गृह मंत्री हैं आतंकवादियों को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, सारा देश मारे गए सैलानियों के परिजनों के प्रति पूरी सहानुभूति रखता है और उनके इस घटना से पूरा देश और हम सभी दुखी हैं।

# 10 मई को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर जिला जज ने सभी न्यायिक पदाधिकारियों के साथ किया समीक्षा बैठक

## लोग अपने सुलहनीय वादों का राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से कराये निस्तारण- जिला जज

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष श्री राज कुमार द्वारा आगामी 10 मई को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत की तैयारियों को लेकर अपने प्रकोष्ठ में सभी न्यायिक पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक किया तथा इस हेतु सभी न्यायालय द्वारा किये गये तैयारियों को लेकर अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त किया। जिला जज ने समीक्षा के दौरान अबतक विभिन्न न्यायालयों के द्वारा निर्गत नोटिस और उससे सम्बन्धित तामिला की जानकारी प्राप्त की एवं पक्षकारो के साथ आयोजित होने वाले प्री-कान्सेलिंग प्रक्रिया के सम्बन्ध में अबतक किये गये कार्यो की समीक्षा किया। जिला जज ने दिनांक 10-05-2025 को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत की तैयारियों को लेकर कई महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश सभी न्यायिक पदाधिकारियों को दिया। उनके द्वारा कहा गया कि अबतक जितने भी चिन्हित वाद न्यायालय में किये गये हैं और नोटिस निर्गत हुआ है उसकी तामिला की अद्यतन अवस्था की जानकारी यथाशिघ्र प्राप्त करें एवं अधिक से अधिक पक्षकारो के साथ प्री-कॉन्सेलिंग की प्रक्रिया सम्बन्धित न्यायालयो के साथ सामान्जस स्थापित कर करें। प्री-कॉन्सेलिंग प्रक्रिया के दौरान पक्षकारो के बीच सौहाद्रपूर्ण वातावरण रखें ताकि उन्हें अपने वाद को राष्ट्रीय लोक अदालत में निष्पादन कराने में खुशी का भाव उत्पन्न हो और उनके माध्यम से आम जनमानस भी अपने-अपने वाद राष्ट्रीय लोक अदालत में निस्तारण हेतु प्रेरित हो सके। उनके द्वारा यह भी निर्देश दिया गया की लोक अदालत के अंतर्गत आने वाले बिभिन्न विभागों खास कर खनन विभाग, वन विभाग, माप तौल, बैंक इत्यादि से सामंजस्य स्थापित कर उन्हें अधिक से अधिक वाद निस्तारण हेतु पक्षकारों से सम्पर्क और प्रेरित करने का निर्देश दिया गयो उनके द्वारा यह भी निर्देश दिया गया कि राष्ट्रीय लोक अदालत का प्रचार-प्रसार ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में हो रहा है और इसमें और गति लाया जाना आवश्यक है जिसके लिए आवश्यक कदम उठाये। जिला जज ने कहा कि आज की समय में सोशल मिडिया, प्रेस, तथा अन्य मिडिया का प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका रहता है जिसके लिए आवश्यक सहयोग लें एवं उनके द्वारा मीडिया बन्धुओं से भी यह अपील किया गया है कि लोगो का लाभ एवं वादमुक्त समाज निर्माण हेतु मीडिया की भूमिका की सराहना करते हुए कहा गया कि इस-की भूमिका बेहद ही महत्वपूर्ण है अतः वे भी अपने-अपने स्तर से जितना हो सके लोगो को राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से अपने वादों का निस्तारण हेतु जागरूक करें साथ ही जिले के आम जनों से भी अपील किया है कि वे ज्यादा-से ज्यादा अपने वादों का निस्तारण करायें अगर किसी तरह की समस्या उत्पन्न होती हो तो जिला विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यालय अथवा जिला विधिक सेवा प्राधिकार से सोसल मीडिया अथवा किसी भी स्तर से सम्पर्क स्थापित करें। जिला जज ने पिछले राष्ट्रीय लोक अदालत में निष्पादित हुए वादों की चर्चा करते हुए कहा गया कि प्रत्येक न्यायालय का यह परम दायित्व होना चाहिए कि अपने-अपने न्यायालय से सम्बन्धित पूर्व में निष्पादित वादों से अधिक वादों का निष्पादन दिनांक 10-05-2025 को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत में करायें और इसके लिए सभी सम्बन्धित स्टेकहोल्डर का सहयोग प्राप्त करें। इस समीक्षा बैठक में जिला विधिक सेवा प्राधिकार के प्रभारी सचिव डा0 दीवान फहद खान, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री विश्व विभूति गुप्ता, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्रीमति आनन्दिता सिंह जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री अशोक कुमार गुप्ता जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री लक्ष्मीकान्त मिश्रा, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री निशित दयाल, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री कन्हैया लाल यादव, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री आनन्द भूषण, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री उमेश प्रसाद, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री मनीष कुमार जायसवाल, जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश श्री पंकज पाण्डेय, मुख्य न्यायिक दण्दाधिकारी श्री लाल बिहारी पासवान, अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी श्री संदीप कुमार सिंह, प्रदीप चन्द्रा के साथ-साथ न्यायिक दण्डाधिकारी राजीव कुमार, विकास कुमार, न्यायकर्ता श्री, सोभित सौरभ, सहित अन्य न्यायिक पदाधिकारीगण उपस्थित रहें।

# संघ में इजाजत : न्यौता या जाल !

>> विचार

**"वर्ष 2018 में जब भागवत से गोलवलकर के उनकी किताब बंच ऑफ़ थॉट्स में मुसलमानों को शत्रु कहे जाने के बारे में पूछा गया था, तो उन्होंने कहा था कि बातें जो बोली जाती हैं, वह स्थिति विशेष, प्रसंग विशेष के संबंध में बोली जाती हैं, वह शाश्वत नहीं रहती हैं। अब गोलवलकर के विचारों के संकलन के नए संस्करण में आंतरिक शत्रु वाला प्रसंग हटा दिया गया है। कहने की जरूरत नही कि सिर्फ किताब में से ही हटाया गया है।**

**बादल सरोज**

इन दिनों अब मुसलमानों पर हेज उमड़ रहा है। आजादी के बाद का सबसे बड़ा क़ानून बनाकर संपत्ति हड़पो घोटाला वक्फ कब्जा कांड करने के साथ ही देश के इस सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बनाकर बयान दागे जा रहे हैं। यह बात अलग है कि वे शब्दों में कुछ भी हों, भावों में और पंक्तियों के बीच के अर्थ में एक समान हैं। इसी तरह का एक बयान खुद संघ प्रमुख का है, जिसमे उन्होंने कहा है कि मुसलमान भी संघ में शामिल हो सकते हैं। इसी के साथ यह दावा भी किया है कि संघ किसी की पूजा पद्धति या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करता। वे यहीं तक नहीं रुके, इससे आगे बढ़ते हुए यह भी बोले कि संघ केवल हिंदुओं के लिए नहीं है। संघ का दरवाजा हर जाति, संप्रदाय और धर्म के लिए खुला है। चाहे वह हिंदू हो, मुसलमान हो, सिख हो या ईसाई-हर कोई इसमें शामिल हो सकता है। संघ मतलब आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत वाराणसी में यह एकदम नयी पेशकश तब कर रहे थे, जब होली और जुमे को लेकर उन्हीं कुनबे द्वारा घमासान मचाया जा चुका था। यह बात वे उस उत्तरप्रदेश में कह रहे थे, जिसमें ईद की नमाज को कहां, कैसे, कब पढ़ना है, की सख्त हिदायते जारी की जा रही थी, खुले मैदानों की बात अलग रही, घर की छतों तक पर नमाज अदा करना प्रतिबंधित किया जा रहा था। यह बात वे तब कह रहे थे, जब उन्हीं के मंत्री, संत्री, मुख्यमंत्री, यहां तक कि खुद प्रधानमंत्री मुसलमानों के खिलाफ उन्माद भडकाने में पूरे प्राणप्रण से जुटे हुए थे। हालांकि इस एलान के साथ उन्होंने 'शर्तें लागू' का किन्तुक-परंतुक भी जोड़ा है। इन शर्तों में भारत माता की जय का नारा स्वीकार करना और भगवा झंडे का सम्मान करना तो है ही, एक अतिरिक्त चेतावनी भी नत्थी कर दी है कि जो खुद को औरंगजेब का वारिस समझते हैं, उनके लिए संघ में कोई जगह नहीं है। और जैसा कि इस तरह के बयान देने के पीछे का मकसद होता है, इस बार भी था, वही हुआ ; कईयों ने यह मानना शुरू कर दिया कि बताइये बेचारे को यूंही बदनाम करते रहते हैं, देखिये संघ तो मुसलमानों के लिए भी बाहें खोले खड़ा है। भले ही हिंदुत्व की विचारधारा से जुड़ा हो, लेकिन वह ऐसे मुस्लिमों को भी स्वीकार करने को तैयार है, जो भारत की संस्कृति को अपनाते हैं और राष्ट्रवाद में विश्वास रखते हैं। क्या सच में बात इतनी ही सीधी-सादी और सरल है? नहीं ! यह औरंगजेब के नाम पर योजनाबद्ध तरीके से सुलगाई गयी ध्रुवीकरण की भट्टी में खुद श्रीमुख से सूखी लकडियाँ झोंके जाने की कोशिश है। क्या भारत में ऐसा कोई मुसलमान है, जिसने अपने आपको औरंगजेब का वारिस बताया हो? कोई नहीं। अविभाजित भारत को भी जोड़ लें, तो ऐसा कोई है, जिसने औरंगजेब को अपना पुरखा या किसी भी तरह का नायक बताया हो? हाँ, वंशावली के आधार पर देखा जाए, तो औरंगजेब की एक सचमुच की वारिस और निकटतम जैविक रिश्तेदार जरूर हैं और वे राजस्थान में भाजपा सरकार में उपमुख्यमंत्री पद की शोभा अवश्य बढ़ा रही हैं। बहरहाल बयानों की शिगूफेबाजी को अलग रखते हुए असल मुद्दे पर आते हैं कि जैसा कि भागवत साहब ने फरमाया है, क्या वैसा संघ में हो सकता है? क्या कोई मुसलमान या अहिंदू आरएसएस का सदस्य बन सकता है? बिल्कुल नहीं ! पहली बात तो यह है कि खुद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कहना है कि उसकी कोई औपचारिक सदस्यता नहीं होती। जो लोग आरएसएस की शाखाओं में भाग लेते हैं, उन्हें स्वयंसेवक कहा जाता है। अब स्वयंसेवक कौन बन सकता है? संघ के मुताबिक़ कोई भी हिंदू पुरुष स्वयंसेवक बन सकता है। यहां हिन्दू पुरुष पर गौर फरमाने की आवश्यकता है, क्योंकि यह वह संगठन है, जो दावा तो अखिल ब्रह्माण्ड के हिन्दुओं को एकजुट और संगठित करने का करता है, लेकिन जिसकी सदस्य महिलायें झ हिन्दू महिलायें भी - नहीं बन सकतीं। इसकी वेब साईट के एफएक्यू यानि 'फ्रीक्वेंटली आस्क्ड क्वेश्चंस' मतलब 'अक्सर पूछे जाने वाले सवालों' के अध्याय में लिखा गया है कि "उसकी स्थापना हिंदू समाज को संगठित करने के लिए की गई थी और व्यावहारिक सीमाओं को देखते हुए संघ में महिलाओं को सदस्यता नहीं दी जाती है, सिर्फ हिन्दू पुरुष ही इसमें शामिल हो सकते हैं, इसके स्वयंसेवक बन सकते है। सौवें साल में भी संघ महिलाओं के प्रवेश के बारे में कोई पुनर्विचार करने को तैयार नहीं है। बस इतना भर कहा गया है कि अपने शताब्दी वर्ष में महिला समन्वय कार्यक्रमों के ज़रिए वो भारतीय चिंतन और सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाना चाहता है। बहरहाल फिलहाल चूँकि भागवत साहब ने अपने संघ में हिन्दू महिलाओं की नहीं, 'म्लेच्छ' मुसलमानों के दाखिले की बात की है, इसलिए उसी पर संघ की धारणा और नीति पर नजर डालना ठीक होगा। मुसलमानों के बारे में संघ की सोच की झलक इसके दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर की किताब बंच ऑफ़ थॉट्स" में मिलती है । गोलवलकर ने लिखा था, "हर कोई जानता है कि यहां- भारत में - केवल मुट्ठी भर मुसलमान ही दुश्मन और आक्रमणकारी के रूप में आए थे। इसी तरह यहां केवल कुछ विदेशी ईसाई मिशनरी ही आए। अब मुसलमानों और ईसाइयों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। इसी रौ में वे आगे लिखते हैं कि वे मछलियों की तरह सिर्फ गुणन से नहीं बढे, उन्होंने स्थानीय आबादी का धर्मांतरण किया। हम अपने पूर्वजों का पता एक ही स्रोत से लगा सकते हैं, जहां से एक हिस्सा हिंदू धर्म से अलग होकर मुसलमान बन गया और दूसरा ईसाई बन गया। बाक़ी लोगों का धर्मांतरण नहीं हो सका और वे हिंदू ही बने रहे। यही वह किताब है, जिसमें गोलवलकर झ जिन्हें संघ अपना परम पूज्य गुरु मानता है ने मुसलमानों, ईसाइयों और कम्युनिस्टों को राष्ट्र का आंतरिक शत्रु बताया था। सनद रहे कि वर्ष 2018 में जब भागवत से गोलवलकर के उनकी किताब बंच ऑफ़ थॉट्स में मुसलमानों को शत्रु कहे जाने के बारे में पूछा गया था, तो उन्होंने कहा था कि बातें जो बोली जाती हैं, वह स्थिति विशेष, प्रसंग विशेष के संबंध में बोली जाती हैं, वह शाश्वत नहीं रहती हैं। अब गोलवलकर के विचारों के संकलन के नए संस्करण में आंतरिक शत्रु वाला प्रसंग हटा दिया गया है। कहने की जरूरत नही कि सिर्फ किताब में से ही हटाया गया है, एजेंडे में वह पहले से भी कही अधिक प्राथमिकता पर ले आया गया है। क्या इस सबसे भागवत जी ने किनारा कर लिया है? अब उनकी बाँहें और उनके संघ के दरवाजे मुसलमानों और बाकी अहिंदुओं के लिए खुल गए है? क्योंकि अगर ऐसा है, तो फिर इसे अपने संस्थापक के कहे से भी पल्ला झाड़ना होगा। अपने संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की स्वयं आरएसएस द्वारा प्रकाशित आधिकारिक जीवनी में से एक में यह साफ किया गया है कि हेडगेवार स्वतंत्रता संघर्ष से क्यों अलग हुए। जीवनी बताती है कि यह साफ़ है कि गांधीजी हिंदू-मुस्लिम एकता को हमेशा केंद्र में रखकर ही काम करते थे ... लेकिन डाक्टरजी को इस बात में खतरा दिखायी दिया। दरअसल वे हिंदू-मुस्लिम एकता के नए नारे को पसंद तक नहीं करते थे। 1937 में महाराष्ट्र के अकोला में सीपी एंड बरार ( अब महाराष्ट्र ) की हिन्दू महासभा के सावरकर की अध्यक्षता में हुए प्रांतीय अधिवेशन से लौटने पर, कांग्रेस छोड़ने की वजह पूछे जाने पर हेडगेवार का जवाब था क्योंकि कांग्रेस हिंदू-मुस्लिम एकता में विश्वास करती है। उनका मुस्लिम विरोध किस ऊंचाई का था, यह संघ के शुरुआती दिनों में उनके स्वयं के व्यवहार से समझ आ जाता है। उनकी एक जीवनी में बताया गया है कि मस्जिदों के आगे बैंड बाजा बजाने, शोर मचाने की कार्यविधि उन्हीं की खोज थी, जिसे संघ आज तक आजमा रहा है। जब कभी-कभी बैंड ( संगीत ) बजाने वाली टोली मस्जिद के सामने बैंड बजाने में हिचकिचाती थी, तो हेडगेवार "खुद ड्रम ले लेते और शांतिप्रिय हिंदुओं को उत्तेजित कर उनकी मर्दानगी को ललकारते थे।" गौरतलब है कि 1926 तक, मस्जिदों के बाहर ढोल-बाजे बजाना सांप्रदायिक दंगों के उकसाने की मुख्य वज़ह था। हेडगेवार ने हिंदुओं में आक्रमक सांप्रदायिकता उकसाने में निजी तौर पर भूमिका अदा की। इस तथ्य को उनके घनिष्ठ और आरएसएस के संस्थापक सदस्यों मे से एक रहे नागपुर की इस्पात मिल के मालिक अन्नाजी वैद का कथन पुष्ट करता है। उन्होंने बताया है : सन् 1926 में कई जगह हिंदू-मुसलमान दंगे होना प्रारंभ हुआ था। इसलिए हम लोगों ने तय किया कि हर एक मस्जिद के सामने से जुलूस निकलते समय ढोल बजने ही चाहिए। एक बार शुक्रवार के दिन जब वाद्य बजाने वाले एक मस्जिद के दरवाजे पर पहुंचे, तो संगीत बजाना बंद कर दिया। तब डाक्टरजी ने स्वयं ढोल खींच कर अपने गले में बांध कर बजाया। उसके बाद ही बाजा बजना प्रारंभ हुआ। क्या भागवत साहब ने हेडगेवार के इन सब किये-धरों को अनकिया करने का मन बना लिया है और सचमुच में आरएसएस को मुसलमानों और बाकी धर्मों के मानने वालों के लिए खोलने का फैसला कर लिया है? यदि हाँ, तो फिर वे अपने उस संविधान का क्या करेंगे, जिसमे कुछ और ही दर्ज किया हुआ है। गांधी हत्याकांड में प्रतिबंधित होने के बाद भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा रखते हुए और गोपनीयता से दूर रहते हुए और हिंसा से दूर रहते हुए राष्ट्रीय ध्वज को मान्यता देते हुए एक लोकतांत्रिक, सांस्कृतिक संगठन के रूप में कार्य करने की अनुमति हासिल करने के लिए बनाये गये संघ के संविधान में क्या इसकी गुंजाइश है संघ के इस संविधान की शुरुआत ही हिन्दू समाज में अलग-अलग पंथों, आस्थाओं, जाति और नस्लों, राजनीतिक, आर्थिक, भाषायी, प्रांतीय फ़र्कों को समाप्त कर हिन्दू समाज का सर्वोन्मुखी उत्थान" करने के वाक्य से होती है। संघ के साथ जुड़ने का एकमात्र तरीका उसका स्वयंसेवक बनना है और संविधान में स्वयंसेवक बनने के लिए ली जाने वाली शपथ में दर्ज है कि "सर्वशक्तिमान श्री परमेश्वर तथा अपने पूर्वजों का स्मरण कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने पवित्र हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू समाज की अभिवृद्धि कर भारत वर्ष की सर्वांगीण उन्नति करने क लिए मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का घटक बना हूँ ...।" इस संविधान का पहला लक्ष्य ही "हिन्दू समाज के विविध समूहों को साथ लाना, उन्हें धर्म और सस्कृति के आधार पर पुनर्जीवित और पुनः युवतर करने" का है। क्या मुसलमानों, सिखों और बाकियों को शामिल करने के लिए भागवत अपने संघ का संविधान बदलेंगे? वे कुछ नहीं बदलने वाले। अपने इस तरह के दिखावटी बयानों से भी वे अपने एजेंडे को ही आगे बढ़ाने का जाल बिछा रहे होते हैं। ऐसे भ्रामक, निराधार और कभी भी अमल में न लाये जा सकने वाले बयानों के जरिये जहां जनता के एक हिस्से में वे अपने सुधरे, सुथरे और भले रूप की मरीचिका का आभास देना चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर, मुस्लिम समुदाय के बारे ऐसा अहसास दिलाना चाहते हैं, जैसे वे इतनी बड़ी पेशकश को भी ठुकरा कर अपनी संकीर्णता का परिचय दे रहे हों।

**(लेखक 'लोकजतन' के संपादक)**

---

संपादकीय

# बिलों पर कुंडली मार कर बैठना

गृह मंत्रालय में उपसचिव अथवा वरिष्ठ स्तर के अधिकारी तय किए जाते हैं, जो राष्ट्रपति के आधार पर निर्णय लेते हैं और फिर राष्ट्रपति उस फाइल पर हस्ताक्षर करते हैं। बेशक सवोच्च अदालत गृह मंत्रालय के अधिकारियों को निर्देश दे सकती है। दलीलें यहां तक दी गईं कि राष्ट्रपति देश के प्रधान न्यायाधीश और सवोच्च अदालत के अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति करते हैं। एक नौकर नियोक्ता को निर्देश कैसे दे सकता है? दरअसल ऐसे निर्णय भी सरकार और कैबिनेट के स्तर पर लिए जाते हैं और फिर संबद्ध मंत्रालय द्वारा भेजी गई फाइल पर राष्ट्रपति हस्ताक्षर करते हैं। राष्ट्रपति एक मायने में, लिखित रूप से, नियोक्ता हैं और सरकार की कार्यप्रणाली के मुताबिक, नियोक्ता नहीं भी हैं। हमें नहीं लगता कि न्यायपालिका ने संवैधानिक लक्ष्मण-रेखाओं को पार किया है। बल्कि ऐसी हरकत भाजपा सांसदों ने की है। झारखंड से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कहा-'इस देश में जितने गृहयुद्ध हो रहे हैं, उनके जिम्मेदार केवल यहां के चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया जस्टिस संजीव खन्ना साहब हैं।' भाजपा सांसद ने यहां तक आरोप लगाया कि अदालत इस देश को अराजकता की ओर ले जाना चाहती है। अदालत राष्ट्रपति को निर्देश कैसे दे सकती है? आपने नया कानून कैसे बना दिया? किस कानून में लिखा है कि राष्ट्रपति को तीन माह में ही फैसला लेना है? बहरहाल भाजपा नेतृत्व ने यह अच्छा किया कि सांसदों की ऐसी टिप्पणियों से किनारा कर लिया और ऐसे बयानों को खारिज कर दिया। अलबत्ता यहां से राजनीति नया तूल ले सकती थी। सवोच्च अदालत ने भी कोई संज्ञान नहीं लिया और ऐसे बयानों को नजरअंदाज कर दिया। आजकल अधिकतर राज्यपाल 'राजनीतिक' होते हैं, लिहाजा बिलों को दबाते रहते हैं। पारित बिलों पर कुंडली मार कर बैठना उचित और संवैधानिक नहीं है

---

# वैश्विक धरोहर बनती प्राचीन भारतीय पांडुलिपियां

**प्रमोद भार्गव**

महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश पर आधारित श्रीमद्भगवद्गीता और भारत की ललित कलाओं का मूल ग्रन्थ मने जाने वाले भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र को यूनेस्को ने अपने स्मृतिकोश विश्व पंजीयन अभिलेख में शामिल किया है। यह कदम विश्व धरोहर दिवस 21 अप्रैल को उठाया गया है। यह पहल हमारे सनातन शाश्वत ज्ञान और समृद्ध विज्ञान सम्मत संस्कृति को वैश्विक मान्यता देती है। इन दोनों ग्रंथों में मानवता का संदेश देने के साथ जीवन को बेहतर बनाने के मार्ग दिखाए गए हैं। गीता दुनिया का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसके सांस्कृतिक ज्ञान में विश्व कल्याण और सम्पूर्ण जीव-जगत की रक्षा की कामना की गई है। अतएव इन प्राचीन पांडुलिपियों को न केवल सहेजने की जरूरत है, बल्कि इनमें उल्लेखित ज्ञान विज्ञान को खंगालने की भी जरूरत है। भारत में प्राचीन पांडुलिपियां कितनी हैं, इनका सुसंगत अनुमान कठिन है। अनेक पांडुलिपि संग्रह व संरक्षण संस्थान ज्ञान-विज्ञान की पांडुलिपियों में भरे पड़े हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के निदेशक डॉ सुरेंद्रमोहन मिश्र कहते हैं कि लगभग डेढ़ करोड़ पांडुलिपियां उपलब्ध हैं। राज्यसभा सांसद राकेश सिन्हा द्वारा संसद में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में कहा गया था कि ब्रिटेन के संग्रहालय में मुख्य रूप से चार लाख पांडुलिपियां आज भी सुरक्षित हैं। यद्धपि वहां से अब तक 50 हजार पांडुलिपियां मंगाई जा चुकी हैं। इन पांडुलिपियों में खगोल गणित, ज्योतिश, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, रसायन, धातु विज्ञान, खेती-किसानी, अस्त्र-शस्त्र और आवागमन के साधनों से लेकर ईंधन की खोज और मानव मनोविज्ञान तक के धरातल की पड़ताल की गई है। पांडुलिपियों में सामाजिक जीवन के विविध पहलू संरक्षित हैं। प्राचीन भारतीय पांडुलिपियां कितनी महत्वपूर्ण हैं, इस सिलसिले में एक प्रसंग यहां उद्घाटित है। संस्कृत के भोपाल के बड़े विद्वान और संस्कृत विष्वविद्यालय दिल्ली के कुलपति रहे डॉ राधावल्लभ त्रिपाठी को लंदन की इंडिया हाउस लायब्रेरी में उपलब्ध सुंदरकवि द्वारा

रचित 'नाट्य-प्रदीप' पांडुलिपि की आवष्यकता थी। उक्त पुस्तकालय में उपलब्ध सूची की पुस्तकों में इस पांडुलिपि का नाम अंकित है। त्रिपाठी जी के मित्र पाठक जी लंदन जाते-आते रहते थे। अतएव उन्होंने पांडुलिपि के लाने का दायित्व पाठक जी को सौंप दिया। पाठक जी ने लंदन से लौट आने पर त्रिपाठी जी को नाट्य प्रदीप ग्रंथ की पांडुलिपि एक गोल डिब्बी में दी। त्रिपाठी जी अचंभित हुए तब पाठक जी ने बताया कि इस डिब्बी में एक माइक्रो चिप है। इसे माइक्रो फिल्म रीडर के माध्यम से कंप्युटर पर खोलकर प्रिंट आउट निकल आएंगे। भोपाल में तो यह काम संभव नहीं हुआ, तब उन्होंने दिल्ली के राष्ट्रीय कला केंद्र में जाकर प्रिंट निकलवाए। चार-पांच सौ पृष्ठ की नागरी लिपि में हस्तलिखित पांडुलिपि उनके हाथों में थी। उन्हें संदेह हुआ कि नाट्य-प्रदीप तो इतने पृष्ठों की नहीं है, फिर यह क्या ? परंतु भोपाल आने पर जब उन्होंने पांडुलिपि पढ़ना आरंभ की तो उनका संदेह सच निकला। वह नाट्य-प्रदीप की पांडुलिपि नहीं थी। हालांकि पांडुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर शीर्षक व अन्य जानकारियां सूची के अनुरूप ही थीं। दरअसल वह महाकवि दंडी के 'दशकुमारचरित' के तीसरे खंड की अधूरी प्रति थी। त्रिपाठी जी ने इसे ऊंचे पेड़ पर लगा एक फल माना और अध्ययन-मनन में लग गए। अंत में त्रिपाठी जी ने पूरी पांडुलिपि पढ़ने के बाद निष्कर्ष निकाला कि यह पांडुलिपि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की कथा है। कालांतर में उन्होंने इस विक्रमादित्य कथा का गद्यानुवाद करते हुए उपन्यास का रूप दिया। इस उपन्यास को भारतीय ज्ञानपीठ ने छापा है। उपन्यास में खगोलीय घटनाओं और विक्रम संवत के प्रारंभ होने के विज्ञान सम्मत, आख्यान तो हैं ही, विक्रमादित्य के इतिहास नायक होने के तथ्य भी हैं। सच्चाई यह है कि इस औपन्यासिक कथा में ईसा के पहले की शताब्दी के भारत की एक व्यापक प्रस्तुति है। इस पांडुलिपि का प्राप्ती रोचक गाथा उपन्यास की भूमिका में दी है। पांडुलिपि के उपन्यास के रूप में प्रकाशन से यह स्पश्ट होता है कि पुरातन ग्रंथों में इतिहास, भूगोल, युद्ध, विज्ञान, समयमान के चित्रण तो हैं ही, भारतीय इतिहास-नायकों की गाथाएं भी हैं। यही संयुक्त वर्णन कहानियों-किस्सों के रूप में किसी राष्ट्र के विकसित श्रेष्ठतम रूप को सामने लाते हैं। पांडुलिपियों के रूप में सुरक्षित ग्रंथों के शोध और संग्रह निरंतर होते रहे हैं। 1803 में इन ग्रंथों का सूची-पत्र तैयार करने की पहली शुरुआत एशियाटिक सोसायटी ने की थी। इस सोसायटी के चौथे अध्यक्ष एचटी कोलब्रुक ने सूची-पत्र तैयार करने के लिए प्रति वर्ष 5-6 रुपए का अतिरिक्त अनुदान का प्रबंध भी कराया। इसी क्रम में गवर्नर एलफिंस्टन ने जब संस्कृत ग्रंथों का अनुसंधान कराया, तब ज्ञात हुआ कि 1840 में जितने ग्रंथ भारत में पाए गए, उनकी संख्या ग्रीक और लेटिन भाषा के समस्त पश्चिमी और कतिपय एशियाई ग्रंथों से कहीं ज्यादा थी। इसके पूर्व 1830 में फ्रेडरिक ने 350 संस्कृत ग्रंथों की सूची बनाई थी। 1859 में बेल के शोधानुसार इन ग्रंथों की संख्या 1300 हो गई। कालांतर में 1891 आते-आते शियोगेर अलफ्रेस्ट ने जो सूची-पत्र बनाया, उसमें इन संस्कृत पांडुलिपियों की संख्या 32 हजार से ऊपर निकल गई। तदुपरांत भारतीय विद्वान हरप्रसाद शास्त्री ने 40 हजार पांडुलिपियों और 1916 में राहुल सांकृत्यायन ने 50 हजार ग्रंथों की खोज कर सूची-पत्र बना लिया। इन सूची-पत्रों की तैयारी के बाद पांडुलिपि शास्त्र के जर्मन ज्ञाता शिलगल ने इन ग्रंथों का विषयवार वर्गीकरण किया। इसी वर्गीकृत अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ये ग्रंथ केवल एक विषय , एक धर्म या अध्यात्म मात्र पर केंद्रित नहीं हैं, अपितु इस वर्गीकरण से ग्रंथों के प्रकार और उनमें अंतर्निहित दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे तेरह वर्गों में विभाजित किया गया। वैदिक साहित्य अर्थात चार वेद, वेदांग अर्थात शिक्षा, कल्प, निरूक्त, व्याकरण, ज्योतिष और छंद। वेदांगों से आगे पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और काव्यशास्त्र लिखे गए। उपनिषदों के माध्यम से अध्यात्म खगोल और नैतिकता के दर्शन की स्थापना हुई। इसी क्रम में जैन और बौद्ध दर्शन से लेकर, चार्वाक दर्शन तक सामने आए। इनमें प्रकृति से लेकर मानव वृत्तियों के उल्लेखों के मनोवैज्ञानिक दृष्टान्त हैं, परंतु आडंबरों पर प्रहार है। 1981 में भारत की प्राचीनतम बख्शाली पांडुलिपि को प्राचीनतम गणित की पांडुलिपि माना गया है। यह पांडुलिपि खैबर पख्तूनख्वा, पेशावर (पाकिस्तान) के एक किसान को मिली थी। भोजपत्रों पर यह संस्कृत में लिखी गई है। इसके केवल सत्तर पृष्ठ मिले हैं, शेष नष्ट हो गए। इसे नौवीं शताब्दी का लिखा माना जाता है। परंतु जब इसकी लिखावट की ऑक्सफोर्ड विष्वविद्यालय और बोडालियन पुस्तकालय के शोधकर्त्ताओं ने रेडियो कार्बन डेटिंग से परीक्षण किया तो इसे तीसरी-चौथी शताब्दी का होना पाया गया। इस परिणाम से यह निष्कर्ष भी निकाला गया कि ग्वालियर में स्थित मंदिर की दीवार पर उत्कीर्ण शून्य का षिलालेख नौवीं शताब्दी का है, उससे भी पहले की यह पांडुलिपि है। इसमें एक ऐसे बिंदु का उल्लेख किया है, जो 'शून्य' का प्रतिनिधित्व करने वाला अब तक का सबसे प्राचीन प्रतीक है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक मार्कस डू सौतॉय ने प्रतिपादित किया है कि आज हम जिस शून्य का प्रयोग करते हैं, वह प्राचीन भारत में प्रयोग में लाए गए 'बिंदु' से ही विकसित हुआ है। इस पांडुलिपि का आरंभिक लेखन शारदा लिपि में है। यह लिपि 8वीं से 12वीं शताब्दी तक दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों और कश्मीर के भूखंडों में प्रचलित थी। शारदा लिपि संस्कृत के निकट मानी जाती है। ऋग्वेद में इन लिपियों के प्रारंभिक विकास के चरण पणिय और मग समुदाय के लोगों के द्वारा किए जाने के उल्लेख हैं। इस पांडुलिपि में गणितीय नियमों, उनमें आने वाली समस्याओं के हल उदाहरणों सहित उपलब्ध हैं। अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित और क्षेत्रमिति भी इसमें मिलते हैं। वर्गमूल, घनमूल स्वर्ण की गणना के साथ आय, व्यय, ब्याज और सरल समीकरणों का उल्लेख भी इस पांडुलिपि में है। बख्शाली पांडुलिपि में लिखे जाने से बहुत पहले से ही भारतीय मनीषियों ने इन गणितीय वैदिक ज्ञान के सूत्रों को श्रुति परंपरा से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृति में ग्रहण करा दिया था। यही कालांतर में लिखित और मुद्रित रूपों में हमारे समक्ष हैं। सूत्रों को श्रुति परंपरा से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृति में ग्राह्य कराया। यही कालांतर में लिखित और मुद्रित रूपों में हमारे समक्ष हैं। दुनिया ने मान लिया है कि ऋग्वेद के सूक्त और मंत्र सबसे प्राचीन मौखिक और भोजपत्रों पर लिखित आख्यान हैं। तथापि 'भृगुसंहिता' भी एक प्राचीन पांडुलिपि है, जिसकी मूल प्रति होशियारपुर में आज भी सुरक्षित है। इसमें ग्रह नक्षत्रों के आधार पर व्यक्ति का भूत और भविष्य वांचने का दावा किया जाता है। रामधारी सिंह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में ऋग्वेद की ऋचाओं को विभिन्न विद्वानों के मतानुसार दो हजार से पचहत्तर वर्ष तक का प्राचीन माना है। इनमें सबसे उत्साहजनक दृष्टिकोण डॉ अविनाश दत्त का है। वे ऋग्वेद को पचास से पचहत्तर हजार वर्श पुराना मानते हैं। बहरहाल प्राचीन पांडुलिपियों का संरक्षण तो जरुरी है ही, इनका अध्ययन भी जरूरी है।

---

# छात्रों को अद्वितीय नौकरियों पर विचार क्यों करना चाहिए

**विजय गर्ग**

तेजी से विकसित होती दुनिया में, स्नातकों को अनुकूलनशीलता और निरंतर सीखने को गले लगाना चाहिए। सफलता अपने आप को फिर से तैयार करने और उत्सुक रहने पर निर्भर करती है। पिछले ज्ञान को जाने देने से नए दरवाजे खुलते हैं और कई जुनून को जोड़कर और एक बहु-विषयक मार्ग का पीछा करके, छात्र अपने लिए अद्वितीय अवसर पैदा कर सकते हैं। यहां तक कि माता-पिता भी गैर-पारंपरिक कैरियर पथ की पूर्ति और मूल्य के महत्व को समझते हैं। अज्ञात के लिए तैयार करने के लिए, स्नातकों को अपने जुनून पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, उनकी समझ को गहरा करना चाहिए, और उन कनेक्शनों को ढूंढना चाहिए जो उन्हें बाहर खड़ा करते हैं। अपने आप को सच होने और विशिष्टता को गले लगाने से एक पूर्ण और समृद्ध भविष्य होता है। सफलता अनुकूलनशीलता, निरंतर सीखने, अनलर्निंग, किसी की सच्ची कॉलिंग खोजने और वित्तीय ज्ञान को एकीकृत करने में निहित है। हाई स्कूल स्नातक सफलता के लिए अपने स्वयं के अनूठे मार्ग का पालन करके आत्मविश्वास से विकसित दुनिया को नेविगेट कर सकते हैं। मौजूदा क्षेत्रों में विघटनकारी नवाचारों से परे, कई नए कैरियर के रास्ते सामने आए हैं, जो विविध हितों और जुनून वाले छात्रों के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं। निम्नलिखित छात्रों के लिए इन रोमांचक नए युग के करियर में से कुछ हैं: ध्वनि इंजीनियरिंग और संगीत साउंड इंजीनियरिंग का क्षेत्र संगीत और ऑडियो उत्पादन के लिए प्यार वाले व्यक्तियों के लिए एक शानदार अनुभव प्रदान करता है। साउंड इंजीनियर संगीत पटरियों को रिकॉर्ड करने, मिश्रण करने और माहिर करने के साथ-साथ लाइव प्रदर्शन और फिल्म निर्माण के

लिए ऑडियो समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह क्षेत्र रचनात्मक स्वभाव के साथ तकनीकी विशेषज्ञता को जोड़ती है। कृत्रिम होशियारी एआई के उदय ने विभिन्न उद्योगों में संभावनाओं की दुनिया को खोल दिया है। एआई विशेषज्ञ एल्गोरिदम, मशीन लर्निंग मॉडल और बुद्धिमान प्रणालियों के विकास पर काम करते हैं। स्वायत्त वाहनों से लेकर व्यक्तिगत सिफारिश प्रणालियों तक, एआई पेशेवर डेटा और स्वचालन की शक्ति का उपयोग करके भविष्य को आकार देते हैं। डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन डिजिटल युग में, व्यवसाय अपने लक्षित दर्शकों तक पहुंचने के लिए डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। इस क्षेत्र में करियर में आकर्षक सामग्री बनाना, उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण करना और उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों का उपयोग करना शामिल है। डिजिटल विपणक ब्रांड की सफलता को चलाने के लिए रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक कौशल और रणनीतिक सोच को जोड़ते हैं। ड्रोन और रोबोटिक्स रोबोटिक्स का क्षेत्र आश्चर्यजनक गति से आगे बढ़ रहा है जो रोबोट और ड्रोन को डिजाइन करने और प्रोग्रामिंग करने में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए अवसर प्रस्तुत करता है। रोबोटिक्स इंजीनियर विनिर्माण और स्वास्थ्य सेवा से लेकर रसद और मनोरंजन तक के उद्योगों के लिए रोबोट विकसित करते हैं। इस क्षेत्र में इंजीनियरिंग कौशल और नवाचार के लिए एक जुनून के मिश्रण की आवश्यकता होती है। जैसा कि नौकरी का बाजार विकसित होता है, स्नातकों के लिए उनके लिए उपलब्ध नए युग के कैरियर विकल्पों का पता लगाना आवश्यक है। ये क्षेत्र न केवल रोमांचक अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि दुनिया में एक सार्थक प्रभाव बनाने का मौका भी प्रदान करते हैं। प्रौद्योगिकी, नवाचार और रचनात्मकता की शक्ति को गले लगाकर, छात्र एक सफल और पूर्ण कैरियर का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

**(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजा)**

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक और प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा विजय प्रेस, नया टोला पटना से मुद्रित तथा 302, मां तारा कंपलेक्स, नारायण मूर्ति पथ, नागेश्वर कॉलोनी, बोरिंग रोड पटना से प्रकाशित! संपादक सरोज चौधरी, R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

## संक्षिप्त समाचार

### राम नाम संकीर्तन एवं भंडारे के साथ त्री दिवसीय हनुमत कृपा उत्सव का समापन

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के मुख्य बाजार अवस्थित दुर्गा मैदान रोड के समीप तीन दिवसीय हनुमत कृपा उत्सव के तीसरे दिन भगवान श्री राम संकीर्तन के समाप्ति एवं भंडारे के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया ।कार्यक्रम संयोजक रौशन अग्रवाल के नेतृत्व में प्रथम दिन गुंबद आरोहण दूसरे दिन 24 घंटे अखंड हरि कीर्तन एवं तीसरे दिन भंडारे के साथ कार्यक्रम को समाप्त किया गया ।हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।कृष्ण हरे हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे कीर्तन के साथ जम्होर ग्राम भक्तिमय वातावरण से तीन दिनों तक गूंजायमान रहा। आचार्य के रूप में प्रेमचंद पांडेय एवं यजमान के रूप में अप्पू अग्रवाल ने भूमिका निभाई। तो कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में पंचायत समिति सदस्य अनिल अग्रवाल,सोनू अग्रवाल,विक्की अग्रवाल, आशीष अग्रवाल,मोहित अग्रवाल,कौशल अग्रवाल, उमेश महाजन, आर्यन पाण्डेय कुणाल अग्रवाल, पम्मी अग्रवाल की भूमिका सराहनीय रही। भंडारे में सैकड़ो श्रद्धालु भक्तों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। हनुमत कृपा उत्सव का अवलोकन करते हुए जम्होर विकास मंच के संयोजक सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि जिस हनुमान मंदिर में राम नाम संकीर्तन के साथ गुंबद का आरोहण किया जाता है उस मंदिर में किए गए पूजा पाठ विशेष फलदाई होते हैं मंदिर के गर्भ गृह में स्थापित हनुमान जी की प्रतिमा अत्यंत ही आकर्षक एवं मनोहारी है। दर्शन मात्र से ही हृदय में भक्ति की अविरल धारा उमड़ने लगती है। जिस ग्राम में हनुमत कृपा उत्सव मनाई जाती है उस ग्राम के लोग हमेशा खुशहाल एवं प्रसन्नचित रहते हैं ।उन्हें कभी अभाव का सामना नहीं करना पड़त। इस कृपा उत्सव में मात्र शामिल होने से ही हनुमान जी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

### पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय में धूमधाम से मना विश्व पृथ्वी दिवस।

रिपोर्ट– प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय स्थित पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय में प्राचार्य उदय कुमार सिंह की अध्यक्षता में बच्चों ने धूमधाम से विश्व पृथ्वी दिवस मनाया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी अजीत कुमार ने कहा कि यह सुखद संयोग है कि नगर विकास विभाग भी विशेष स्वच्छता पखवाड़ा मना रहा है जिसका भी फलाफल यह है कि पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त कर एवं हरितिमा बढ़ाकर सभ्यता को बचे एवं मानवता स्वच्छ वातावरण में स्वांस लें। उन्होंने इस अवसर पर बच्चों से पृथ्वी को हरा भरा करने एवं हेल्थी की अपील की। विद्यालय के प्राचार्य उदय कुमार सिंह ने कहा कि इस वर्ष का थीम है पावर प्लैनेट आवर प्लैनेट। रिन्यूएबल एनर्जी पर अपनी निर्भरता बढ़ाकर 2030 तक ट्रिपल क्लीन एनर्जी के लक्ष्य को प्राप्त कर लेना है। हेडमास्टर उदय कुमार सिंह ने नगर विकास विभाग के द्वारा बच्चों के बीच पृथ्वी दिवस के थीम पर चित्रकारी की प्रतियोगिता आयोजित कराने के लिए आभार प्रकट किए।इस प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय आए रेणु, सोनम एवं सावन को कार्यपालक पदाधिकारी ने बुक भेंट कर सम्मानित किए।इस अवसर पर स्वच्छता पदाधिकारी आदित्य, टाऊन प्लानर निकिता एवं विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थीं।

### पूरे बिहार में जगह ,जगह मानवाधिकार राष्ट्री अध्यक्ष डॉक्टर ईशान सिन्हा का भव्य रुप से स्वागत व सम्मान मिल रहा है



दिव्य दिनकर

पटना आज पूरे बिहार में पीड़ीत के साथ दिन रात सेवा के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर इंसान सिन्हा खड़े रहते हैं।जी हां हम कर रहे हैं बिहार के वैसे लाल जो पीड़ित जनता के लिए हर संभव मदद के लिए आगे रहते हैं। आज सभी मानवाधिकार के बारे में अवगत कर लोगों को कानून के बारे में जागरूक भी कर रहे हैं। सोमवार 21/4/ 2025 को शरण्य राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं अपराध विरोधी संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ ईशा सिन्हा बिहार के गोपालगंज आरा ,छपरा ,सिवान के बुद्धिजीवी [illegible] गणमान्य लोगों के द्वारा [illegible] स्तरीय सम्मान समारोह में इन्हें मुख्य रुप से सम्मानित किया गया। इनके द्वारा भी प्रशासन डॉक्टर शिक्षक को सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष इंशान सिन्हा के द्वारा मानवाधिकार से जुड़े तमाम बातों से अवगत कराया ,ऐसे में लोग कानून के प्रति जागरूक हो रहे हैं। इनका मधुर संबंध सभी आईएएस, आईपीएस से है। मोके पर ग्रीन मैन जिले के शिक्षक पर्यावरण मित्र सत्यप्रकाश राष्ट्रीय सचिव, श्री विकास कुमार श्रीवास्तव प्रदेश उपाध्यक्ष, श्री शशि कुमार भगत बिहार मेडिकल हे डॉक्टर शिवम, महिला जिला उपाध्यक्ष श्रीमती पूनम यादव प्रदेश उपाध्यक्ष, श्री कुणाल सिंह जिला सचिव, श्री सरवन कुमार कुचायकोट प्रखंड उपाध्यक्ष, श्री विशाल कुमार मेहबा ब्लॉक अध्यक्ष श्री प्रभाकर कुमार इसके अलावे संगठन के अनेक सक्रीय प्रदाथिकारीगण व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

### फिल्मी स्टाइल में कैदी फरार! पेशी पर जा रहा था, तभी हथकड़ी से हाथ छुड़ाया और फिर हो गया रफूचक्कर

**सासाराम** : बिहार में रोहतास जिले के सासाराम व्यवहार न्यायालय के समीप से एक कैदी पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। बताया जा रहा है कि शराब के साथ युवक को पकड़ा गया था। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि जिले के काराकाट थाना क्षेत्र के बाराडीह से उत्पाद विभाग की टीम ने 16 लीटर शराब के साथ आनंद साह को पकड़ा था। सोमवार को ही उसकी गिरफ्तारी हुई थी और मंगलवार जब उसे सासाराम न्यायालय लाया गया तो कानूनी प्रक्रिया के दौरान कैदी आनंद ने उत्पाद अवर निरीक्षक मनीष कुमार को चकमा दे दिया और मौके से फरार हो गया। सूत्रों ने बताया कि उत्पाद विभाग के कर्मी नगर थाना पहुंचे

# दरभंगा-बरौनी-मोकामा के रास्ते,जयनगर और पटना के मध्य नमो भारत रैपिड रेल का परिचालन

**दिनांक 24.04.2025 को जयनगर से पटना के लिए,चलेगी स्पेशल ट्रेन के रूप में तथा दिनांक 25.04.2025 से किया जायेगा नियमित परिचालन**

**हाजीपुरः** यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर दरभंगा-समस्तीपुर-बरौनी-मोकामा के रास्ते जयनगर और पटना के मध्य अत्याधुनिक एवं विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त नमो भारत रैपिड रेल का परिचालन प्रारंभ किया जा रहा है । दिनांक 24.04.2025 को इसका परिचालन जयनगर से स्पेशल ट्रेन के रूप में किया जायेगा तथा दिनांक 25.04.2025 से गाडी सं. 94803/94804 जयनगर-पटना-जयनगर नमो भारत रैपिड रेल का नियमित परिचालन किया जायेगा । यह ट्रेन पटना से यह शनिवार को छोड़कर तथा जयनगर से रविवार को छोड़कर सप्ताह में छः दिन परिचालित की जायेगी । दिनांक 24.04.2025 को गाड़ी सं. 05597 जयनगर-पटना नमो भारत रैपिड रेल स्पेशल ट्रेन के रूप में जयनगर से 11.40 बजे खुलकर 12.25 बजे मधुबनी, 12.55 बजे सकरी, 13.40 बजे दरभंगा, 15.00 बजे समस्तीपुर, 16.15 बजे बरौनी, 17.15 बजे मोकामा, 17.38 बजे बाढ़ रूकते हुए 18.30 बजे पटना जं. पहुंचेगी । दिनांक 25.04.2025 से नियमित परिचालन के रूप में गाड़ी सं. 94803 जयनगर-पटना नमो भारत रैपिड रेल जयनगर से 05.00 बजे खुलकर 05.28 बजे मधुबनी, 05.43 बजे सकरी, 06.15 बजे दरभंगा, 07.25 बजे समस्तीपुर, 08.45 बजे बरौनी, 09.24 बजे मोकामा, 09.41 बजे बाढ़ रूकते हुए 10.30 बजे पटना जं. पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी सं. 94804 पटना-जयनगर नमो भारत रैपिड रेल पटना से 18.05 बजे खुलकर 18.42 बजे बाढ, 18.58 बजे मोकामा, 20.00 बजे बरौनी, 21.00 बजे समस्तीपुर, 22.08 बजे दरभंगा 22.38 बजे सकरी एवं 23.00 बजे मधुबनी रूकते हुए 23.45 बजे जयनगर पहुंचेगी । जयनगर-पटना नमो भारत रैपिड रेल के प्रारंभ होने से निम्नलिखित ट्रेनों के कुछ स्टेशनों पर ठहराव समय में संशोधन किया गया है - 1. दिनांक 25.04.25 से जोगबनी से खुलने वाली गाड़ी सं. 15502 जोगबनी-रक्सौल एक्सप्रेस का दरभंगा में संशोधित आगमन/प्रस्थान समय 06.50/07.20 बजे होगा । 2. दिनांक 26.04.25 से सियालदह से खुलने गाड़ी सं. 13185 सियालदह-जयनगर गंगा सागर एक्सप्रेस का दरभंगा में संशोधित आगमन/प्रस्थान समय 06.37/06.52 बजे होगा । 3. दिनांक 25.04.25 से लालगढ़ से खुलने वाली गाड़ी सं. 15910 लालगढ़-डिब्रूगढ़ अवध आसाम एक्सप्रेस का बरौनी में संशोधित आगमन/प्रस्थान समय 08.55/09.05 बजे होगा । 4. दिनांक 25.04.25 से गाड़ी सं. 63222 पटना-मोकामा मेमू का पटना से संशोधित प्रस्थान समय 18.15 बजे होगा । 5. दिनांक 25.04.25 से गाड़ी सं. 15271 हावड़ा-मुजफ्फरपुर जनसाधारण एक्सप्रेस, 15233 कोलकाता-दरभंगा एक्सप्रेस तथा 15235 हावड़ा-दरभंगा एक्सप्रेस का बरौनी में संशोधित आगमन/प्रस्थान समय 20.30/20.40 बजे, समस्तीपुर में संशोधित आगमन/प्रस्थान समय 22.00/22.05 बजे, मुजफ्फरपुर में संशोधित आगमन/प्रस्थान समय 23.10 बजे तथा दरभंगा में 23.15 बजे होगा ।

# पीएसपी सदस्य संचारी और गैर संचारी बीमारियों से बचाव के प्रति लोगों को करेंगे जागरूक

**आमजनों को बीमारियों के प्रति जागरूक करने में पीएसपी का होगा अहम योगदान**

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह



हसपुरा (औरंगाबाद)। जिले से फाइलेरिया बीमारी को जड़ से मिटाने और इसके उन्मूलन को लेकर स्वास्थ्य विभाग प्रयासरत है। साथ ही पंचायत के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं सहज और सुलभ तरीके से लाभ मिल सके। इसके अलावे हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के अंतर्गत आने वाले गांवों में टीबी, उच्च रक्तचाप, शुगर, कुष्ठ तथा अन्य बीमारियों के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से पीएसपी का गठन किया जा रहा है। इस अभियान का और बेहतर ढंग से क्रियान्वयन हो इसी मुहिम को लेकर बुधवार को औरंगाबाद जिले के हसपुरा प्रखंड के पुलहारा पंचायत स्थित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, किशुनपुर पर रोगी हितधारक मंच (पीएसपी) का गठन किया गया। सबसे पहले पुलहारा पंचायत के उप मुखिया आशुतोष कुमार और सरपंच सुरेंद्र यादव की संयुक्त अध्यक्षता में पीएसपी सदस्यों की बैठक हुई। बैठक का संचालन सामुदायिक हेल्थ ऑफिसर (सीएचओ) अनुपम कुमारी ने किया।

**जागरूकता से ही फाइलेरिया उन्मूलन अभियान होगा सफल**

इस मौके पर पुलहारा पंचायत के उप मुखिया आशुतोष कुमार ने कहा कि जन-जागरूकता से ही कोई भी अभियान को सफल बनाया जा सकता है। इसलिए फाइलेरिया बीमारी के उन्मूलन के लिए जो रोगी हितधारक मंच (पीएसपी) का गठन किया गया है। इससे जुड़े सभी सदस्य काफी तत्परता के साथ अपने-अपने कार्य क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कर फाइलेरिया के साथ-साथ अन्य बीमारियों के प्रति आमजनों को जागरूक करें। ताकि अपने प्रखंड और जिले से फाइलेरिया बीमारी के साथ-साथ अन्य कम्युनिकेबल बीमारी का उन्मूलन हो सके। उन्होंने कहा कि यह रोगी हितधारक मंच के सदस्य सिर्फ फाइलेरिया बीमारी के प्रति ही लोगों को जागरूक नहीं करेंगे,बल्कि क्षेत्र के लोगों संचारी और गैर संचारी बीमारियों के प्रति में आम जनमानस को जागरूक करेंगे। ताकि हमारा समाज स्वस्थ रहे। हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर किशुनपुर के सीएचओ अनुपम कुमारी ने कहा कि सभी पीएसपी सदस्यों से फाइलेरिया बीमारी के साथ-साथ मलेरिया, टीबी और कालाजार के प्रति लोगों को जागरूक होना होगा। इस फाइलेरिया उन्मूलन अभियान में मुखिया, पंच, सरपंच, वार्ड सदस्य और अन्य जनप्रतिनिधियों की भूमिका काफी अहम होगी। वे स्थानीय स्तर पर जागरूकता फैलाने में आमजनों को मदद करेंगे। साथ ही फाइलेरिया मरीजों के अधिकारों तथा बचाव के उपायों के बारे में लोगों को जागरूक करेंगे। बैठक में सरपंच सुरेंद्र यादव ने कहा कि पंचायत के गांवों में फाइलेरिया से ग्रसित हाइड्रोसिल के मरीजों की पहचान कर उन्हें ऑपरेशन के लिए प्रेरित करें।

**पेशेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफॉर्म में सीएचओ व जनप्रतिनिधियों की भूमिका होगी अहम**

औरंगाबाद के हसपुरा प्रखंड के पुलहारा पंचायत स्थित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, किशुनपुर पर गठित पेशेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफॉर्म में सामुदायिक हेल्थ अधिकारी (सीएचओ) के साथ–साथ उप मुखिया, वार्ड सदस्य के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भूमिका काफी अहम होगी। इस मुहिम को सफल बनाने में सीफार संस्था के द्वारा टेक्निकल सपोर्ट किया जा रहा है। इस अवसर पर जीएनआरपी स्वीटी कुमारी, आशा फैसिलिटेटर चित्रा कुमारी, फइलेरिया मरीज यमुना यादव, सरयू साव, धंवती कुंवर, पुनीता देवी, सीता गोप, आशा सुनीता कुमारी, चंचला कुमारी, इंदू कुमारी, शारदा देवी और सरिता देवी तथा सिफार के जिला समन्वयक अमित कुमार व प्रोजेक्ट एसोसिएट अनिल कुमार सिंह मौजूद रहे।

# रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष सतीश कुमार सिंह के नेतृत्व में बाबू वीर कुंवर सिंह की जयंती के अवसर पर विजयोत्सव समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया

**जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए नागरिकों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि कार्यक्रम भी आयोजित किया गया - सतीश कुमार सिंह**

रिपोर्ट– प्रमोद कुमार सिंह

भाजपा जिला महामंत्री सह भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष सतीश कुमार सिंह के नेतृत्व में शहर के ओवर ब्रिज के नजदीक पंचदेव मंदिर प्रांगण में स्वतंत्रता सेनानी बाबू वीर कुंवर सिंह की जयंती के अवसर पर विजयोत्सव समारोह कार्यक्रम तथा जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए नागरिकों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया था। बताते चले की स्वतंत्रता सेनानी बाबू वीर कुंवर सिंह की जयंती के अवसर पर जिले के कई समाजसेवियों ने उनके चित्र पर माल अर्पण कर इन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि एवं नमन करते हुए उन्हें याद किया सर्वप्रथम इस कार्यक्रम में औरंगाबाद जिले का पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह ने बाबू वीर कुंवर सिंह के चित्र पर पुष्प चढाकर उन्हें नमन किया और उनके दिए हुए मार्गदर्शन पर चलने का संदेश दिया किसी कड़ी में रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष सतीश कुमार सिंह ने भी बाबू कुंवर सिंह के चित्र पर माल अर्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें हृदय से नमन करते हुए याद किया। बताते चले की 1857 के भारतीय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बाबू वीर कुंवर सिंह ने अपना बलिदान देने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। और आगे इस बाबू वीर कुंवर सिंह के चित्र पर माल्यार्पण करने के दौरान सतीश कुमार सिंह ने कहा कि कल जम्मू कश्मीर में हुए आतंकी हमले में मारे गए नागरिकों के प्रति हम गहरा दुख प्रकट करते हैं और उनकी आत्मा की शांति के लिए भगवान सब विनती मांगता हूं और उनके परिवार के प्रति संकल्पित हु। और इस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले स्वतंत्रता सेनानी बाबू वीर कुंवर सिंह के जयंती के कार्यक्रम अवसर पर रेड क्रॉस के अध्यक्ष उदय गुप्ता , लॉर्ड बुद्धा पब्लिक स्कूल के निदेशक धनंजय शर्मा, रामानुज पांडे, दीपक कुमार ,पिंटू कुमार, प्रिन्स कुमार,राजू पासवान ,धीरज कुमार ,सुरेंद्र कुमार ,आदित्य कुमार समाजसेवी सहित भाजपा समर्थक एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

## पहलगाम में हुए आतंकी हमले को लेकर विद्यार्थी परिषद ने निकाला आक्रोश मार्च

दिव्य दिनकर




जमालपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जमालपुर इकाई के तत्वावधान में नगर मंत्री अंकित मंडल के नेतृत्व में बंगल मे हुए हिंदू पर अत्याचार और पहलगाम मैं हुए हिंदुओं पर आतंकी हमले के विरोध में आक्रोश मार्च निकालकर विरोध प्रदर्शन किया। मौके पर मौजूद विभाग संयोजक सुभाष मंडल ने कहा कि धर्म पूछकर निरपराध पर्यटकों को गोली मारने वाले मजहबी दरिंदों, ये तस्वीर हम भारतीय ना हम भूलेंगे, न तुम्हें माफ करेंगे, न छोड़ेंगे। तुम्हारी ना-पाक कब्रों तक तुम्हें ढूंढकर इस वहशीपन की वो सजा देगें, जिसे तुम्हारे देसी और परदेसी खैरख्वाह और आका याद रखेंगें । आक थू तुम्हारी नामर्दी पर, वहीं दूसरी ओर बंगाल मे भी कुछ ऐसी ही घटनाएं हो रही है। ममता बनर्जी की सरकार थोड़ा सा भी हिन्दु पर कुछ नहीं बोल रही है। हिन्दु का घर उजाड़ा जा रहा है और मुख्यमंत्री मौन साधी हुई हैं। तीन जुलाई से शुरू होने जा रही श्री अमरनाथ यात्रा से पहले मंगलवार को जम्मू-कश्मीर में वर्ष 2019 के पुलवामा हमले के बाद सबसे बड़ी वारदात को अंजाम दिया है। सेना की वर्दी में आए दहशतगर्दों ने दक्षिण कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम की बायसरन घाटी में पर्यटकों से पहले उनका धर्म पूछा और परिचय पत्र देखकर ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दीं। हमले में 26 लोगों की मौत हो गई, जिनमें ज्यादातर पर्यटक थे। 26 मृतकों में दो विदेशी और दो स्थानीय शामिल हैं। हमले में 17 लोग घायल हुए हैं जो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। वही दूसरी ओर प्रदेश सह मंत्री आयुषी गुप्ता ने कहा कि लोगों से उनका धर्म पूछा, परिचय पत्र देखे फिर मार डाला। मोके पर जिला सोशल मीडिया प्रभारी विकाश कुमार, प्रदेश कार्यकारणी साकेत सम्राट, पूर्व कार्यकर्ता शंकर सिंह, अनुराग, रवि, आदित्या, आलोल, राज चौधरी, सचिन कुमार, अमन राज अंकित, अतुल आलोक, भावेश चौधरी मौजूद थे।

### सबसे उत्तम आसन है आश्वासन और सबसे अच्छा योग है ह्यसहयोग,- डॉ. सर्वेश्वर

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

पटना / बिहटा दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान की ओर से लई रोड, बिहटा, पटना में 22-28 अप्रैल 2025 तक सात-दिवसीय श्री शिव महापुराण कथा का भव्य आयोजन किया जा रहा है, जिसका समय शाम 4.30 से रात्रि 8.30 बजे तक है। कथा के दूसरे दिवस दिव्य गुरु श्री आशुतोष महाराज जी के शिष्य डॉ. सर्वेश्वर जी ने समुद्र मंथन प्रसंग का वर्णन करते हुए बताया कि जब समुद्र मंथन से हलाहल कालकूट विष निकला तो जगत के कल्याण के लिए भगवान शिव ने उसे अपने कण्ठ में धारण कर लिया। जिसके कारण उनका एक नाम नीलकण्ठ भी पड़ गया। स्वामी जी ने कथा का मर्म समझाते हुए बताया कि शिव का नीलकण्ठ स्वरूप हमें त्याग व सहनशीलता का गुण अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा देता है। शिव भक्त होने के नाते हमारा भी ये कर्त्तव्य है कि हम भी विषपान करना सीखें। अर्थात निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर जगत के कल्याण में अपना योगदान दें। ह्यमैंह्व से ह्यहमह्व तक का सफर तय करें। लेकिन अफसोस, आज मानव तो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की पीठ में छुरा घोंपते हुए भी संकोच नहीं करता। इन्सान तो क्या, हमने तो बेजुबान पशु-पक्षियों को भी नहीं छोड़ा। जीभ के क्षणिक स्वाद के लिए आज रोजाना हजारों जीव काट दिए जाते हैं। आज दुनिया भर में लाखों बूचड़खाने खुल गए हैं, जिनमें नित नई आधुनिक मशीनों द्वारा कुछ मिनटों में ही लाखों जानवरों को मौत के घाट उतार दिया जाता है, वह भी बड़ी बेरहमी से। यूँ तो हम महादेव के भक्त हैं परंतु शायद हम ये भूल जाते हैं कि महादेव का एक नाम पशुपतिनाथ भी है। अर्थात जो पशुओं के स्वामी हैं। स्वयं ही सोचिये पशुओं की हत्या कर क्या हम अपने पशुपतिनाथ को प्रसन्न कर पाएंगे? प्रभु का सच्चा भक्त ऐसा नहीं होता। वह तो परपीड़ा को समझ अपने क्षुद्र स्वार्थों का परित्याग कर देता है। उसके लिए तो सबसे श्रेष्ठ आसन है ह्यआश्वासनह्व जो वो दीन दुःखियों को देता है; सबसे उत्तम योग है ह्यसहयोगह्व जो वो यथाशक्ति प्राणीमात्र का करता है और सबसे लम्बी श्वास है ह्यविश्वासह्व जो वह रोती अखियों को प्रदान करता है। इसलिए आवश्यकता है अपने भीतर दया, प्रेम, त्याग व करुणा जैसे गुणों को विकसित करने की। और ये तब ही सम्भव है जब ब्रह्मज्ञान के माध्यम से हम नीलकण्ठ का दर्शन अपने घट में प्राप्त करेंगे। इस अवसर पर कथा पंडाल में महाशिवरात्रि महोत्सव भी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें भक्तों ने नृत्य कर खूब आनंद प्राप्त किया।

### एनटीपीसी नबीनगर द्वारा निर्मित स्वास्थ्य केंद्र का उद्घघाटन जिला पदाधिकारी ने किया

**एनटीपीसी नबीनगर ने किया अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण**

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद- एनटीपीसी नबीनगर द्वारा निर्मित अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घघाटन जिला पदाधिकारी श्री श्रीकांत शास्त्री ने किया। बताते चलें कि नबीनगर प्रखंड के अंकोरहा में स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण एनटीपीसी नबीनगर ने अपने सामुदायिक विकास कार्यक्रम के तहत करवाया है। इस लोकार्पण कार्यक्रम में पॉवर प्लांट के प्रयोजना प्रमुख एवं कार्यकारी निर्देशक श्री एल के बेहेरा एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी, औरंगाबाद डॉ विनोद कुमार सिन्हा भी उपस्तिथ रहे। उद्घाटन के बाद औरंगाबाद जिलाधिकारी श्री श्रीकांत शास्त्री ने श्री एल. के. बेहेरा एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ विनोद कुमार सिन्हा के साथ भवन का निरीक्षण किया और आशा व्यक्त की कि यह भवन ग्रामीणों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। सारी जरुरी सुविधाओं से युक्त इस नवनिर्मित भवन को एनटीपीसी नबीनगर ने बिहार सरकार को सौंप दिया है, जहां अब अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, अंकोरहा का संचालन किया जाएगा। इस नए स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण एनटीपीसी नबीनगर द्वारा ग्रामीण समुदायों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया है। उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी नबीनगर अपने सामुदायिक विकास कार्यक्रम एवं नैगम सामाजिक दायित्व (उरफ) के तहत परियोजना से सटे क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधारभूत संरचना के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रही है।

### जो पार्टी या गठबंधन हमें सम्मान देगी उसी के साथ चुनाव में होगा गठबंधन : हंसल सिंह




दिव्य दिनकर

भागलपुर/कहलगांव विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत सबौर प्रखंड के झुरखुरिया सरोज वाटिका विवाह भवन झुरखुड़िया में आप सबकी आवाज राष्ट्रीय पार्टी के तत्वावधान में प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। आसा पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव प्रसेनजीत सिंह उर्फ हंसल सिंह के नेतृत्व में आयोजित प्रेस वार्ता में पार्टी के आगामी कार्यक्रमों को लेकर चर्चा किया गया। आगामी 25 अप्रैल को आप सबकी आवाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद सिंह के भागलपुर दौरे की सफलता के साथ-साथ संगठन के विस्तार, आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी की तैयारी, पार्टी की विचारधारा, अन्य दलों के साथ गठबंधन इत्यादि विषयों पर आसा पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने अपनी बात रखी। आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पार्टी के गठबंधन से जुड़े सवालों पर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव प्रसेनजीत कुमार सिंह उर्फ हंसल सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद सिंह के निर्देशानुसार जिस भी पार्टी अथवा गठबंधन की विचारधारा हमारी पार्टी की विचारधारा से मेल खाएगी और हमें उचित सम्मान देगी उसी के साथ हमारा गठबंधन होगा। लगभग डेढ़ सौ से ज्यादा सीटों पर हमारी तैयारी जोरशोर से चल रही है। पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष जयकांत प्रसाद सिंह ने संगठन विस्तार, कार्यकताओं का सम्मान और जन समस्याओं से जुड़े बातों पर अपनी राय रखी। नारी शक्ति प्रकोष्ठ की उपाध्यक्ष किरण राजहंस ने राज्य में महिला उत्पीड़न और राजनीति में महिलाओं के जुड़ाव पर विस्तार से चर्चा की। प्रेस वार्ता में प्रदेश उपाध्यक्ष कन्हैया सहाय, जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र मंडल, जिला महासचिव संजीव पासवान, कहलगांव प्रखंड अध्यक्ष सुमित कुमार, गोराडीह प्रखंड महासचिव उमेश पासवान, नीरज राय, युवा नेता चिराग सिंह उपस्थित थे।

## राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति ने पहलगाम में आतंकवादी हमले की निंदा की

एजेंसी

**नई दिल्ली।** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। राष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट किया, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ आतंकवादी हमला चौंकाने वाला और दर्दनाक है। यह एक नृशंस और अमानवीय कृत्य है जिसकी स्पष्ट रूप से निंदा की जानी चाहिए। निर्दोष नागरिकों, खासकर पर्यटकों पर हमला करना बेहद भयावह और अक्षम्य है। जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी हार्दिक संवेदना है और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करती हूं। उपराष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट किया, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकवादी हमले से मैं बहुत दुखी हूं। हिंसा के ऐसे कृत्य निंदनीय हैं और इनकी कड़ी निंदा की जानी चाहिए। दुख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं पीड़ित परिवारों के साथ हैं।

## ट्रैफिक पुलिस के एएसआई को टक्कर मार कर फरार हुआ वाहन चालक धरा गया

**नई दिल्ली।** दक्षिण पश्चिम जिले के वसंत कुंज साउथ व जिले की एंटी स्नैचिंग सेल की संयुक्त टीम ने ट्रैफिक पुलिस के एएसआई को टक्कर मारकर फरार हुए एक कार चालक को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए चालक की पहचान हरियाणा निवासी लियाकत अली के रूप में हुई है। पुलिस ने अपराध में इस्तेमाल स्विफ्ट कार को जब्त कर लिया है। फिलहाल पुलिस आरोपित से पूछताछ कर रही है। दक्षिण पश्चिम जिले के डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि 29 मार्च को इंडियन स्पाइनल सेंटर अस्पताल से सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति को किसीअज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी है। पुलिस अस्पताल पहुंची तो जांच में घायल की पहचान अरविंद कुमार के रूप में हुई है। पूछताछ में घायल अरविंदने बताया कि वह दिल्ली पुलिस की ट्रैफिक यूनिट में बतौर एएसआई कार्यरत हैं। घटना वाले दिन वह महिपालपुर के पास वाहनों की जांच कर रहे थे। उसी दौरान एक कार ने उन्हें टक्कर मार दी। वसंत कुंज साउथ थाना पुलिस ने एएसआई के बयान पर मामला दर्ज किया।डीसीपी के अनुसार मामले को गंभीरता से लेते हुए स्थानीय पुलिस के अलावा जिले की एंटी स्नैचिंग सेल को लगाया गया। पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास लगेसीसीटीवी फुटेज को खंगाल कर कार का नंबर निकाला और आरोपित लियाकत अली को गिरफ्तार कर लिया।

## युवक की चाकू घोपकर हत्या

**नई दिल्ली।** शाहदरा जिले के जगतपुरी इलाके में सोमवार रात 22 साल के युवक की चाकू घोपकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए नजदीकी अस्पताल के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है। पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शाहदरा जिले के डीसीपी प्रशांत गौतम ने बताया कि सोमवार रात 10:39 बजे जगतपुरी इलाके में एक युवक के खून से लथपथ पड़े होने की सूचना मिली। सूचना मिलते ही जगतपुरी थाना पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और घायल को हेडगेवार अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। डीसीपी ने बताया कि मृतक की पहचान जगतपुरी के बाल्मीकि बस्ती निवासी साजन कुमार के रूप में हुई है। क्राइम और फोरेंसिक टीम से घटनास्थल का निरीक्षण कराया गया है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को खंगाला जा रहा है, ताकि हत्यारे की पहचान जल्द हो सके। जांच के लिए जगतपुरी थाना पुलिस के अलावा जिले के स्पेशल स्टाफ और एएटीएस को भी लगाया गया है।

## बीड़ी देने से मना करने पर दो भाइयों को चाकू से गोदा, एक ही मौत

**नई दिल्ली।** दक्षिण पूर्वी जिले के पुल प्रहलादपुर इलाके में को बीड़ी देने से मना करने पर हुए विवाद में दो सगे भाइयों को चाकू से गोदने का मामला सामने आया है। हमलावरों ने पीड़ितों को बचाने के लिए आए उनके दोस्त को भी चाकू मारकर घायल कर दिया। वारदात के बाद हमलावर मौके से फरार हो गए। मामले की सूचना घायल के भाई ने पुलिस को दी और घायलों को नजदीकी ईएसआई अस्पताल में भर्ती किया। जहां डॉक्टरों ने घायल 21 वर्षीय सोहेब को मृत घोषित कर दिया जबकि उसके भाई मोहसिन की हालत गंभीर बनी हुई है। वह आईसीयू में भर्ती है। सूचना के बाद पुल प्रहलादपुर थाना पुलिस अस्पताल पहुंची और मृतक की मां सबुक्ता के बयान पर केस दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने प्राथमिक जांच के बाद देर रात फिरोज उर्फ मुन्ना, इम्तियाज और सौदागर खान को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपितों की निशानदेही पर दो चाकू भी बरामद किए हैं। दक्षिण पूर्वी जिले के डीसीपी रवि कुमार सिंह ने बताया कि मृतक सोहेब अपने परिवार के साथ जे ब्लॉक, प्रेम नगर, लाल कुआं पुल प्रहलादपुर इलाके में रहता था। वह लोहे के कंटेनर को कार्यालय या फिर घर में बदलने का काम करता था। परिवार में भाई 23 वर्षीय मोहसिन, मां सबुक्ता, पिता सलीम, भाई सहजाद शामिल है। बदमाशों ने मोहसिन को भी चाकू मारा है, जो अस्पताल में भर्ती है। पुलिस को दिए बयान में सोहेब की मां ने बताया कि करीब 11 बजे वह अपने घर में मौजूद थी। इसी दौरान सोहेब घर आया और उसे बताया कि मुन्ना और सनी ने उसे पास के पार्क में थप्पड़ मारा है।

# थक कर लड़खड़ाती दुनिया को चाहिए भारतीयता पर आधारित मॉडलः मोहन भागवत

एजेंसी

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि यह दुनिया दो विकल्पों की दुनिया से थक और लड़खड़ा चुकी है और तीसरे मध्यम मार्ग की तलाश में भारत की ओर देख रही है। ऐसे में हमें दुनिया को भारतीयता पर आधारित मॉडल देने होंगे। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता से दूर होने के लिए मन और विचार से भी भारतीयता को अपनाना होगा। डॉ. भागवत ने आज दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रकल्प अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (सीईआईएल) के नवनिर्मित केंद्रीय कार्यालय 'यशवंत' का उद्घाटन किया। इसके बाद डॉ. भागवत ने बाल भवन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में केंद्र और दिल्ली सरकार के मंत्रियों सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सरसंघचालक डॉ. भागवत ने नए कार्यालय के उद्घाटन की

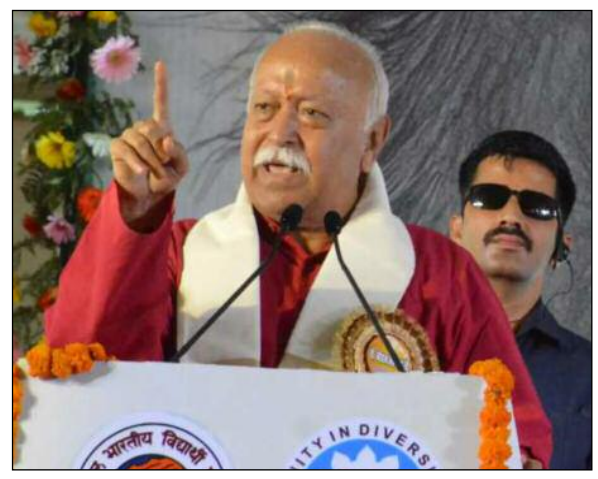

शुभकामना देते हुए संघ प्रेरित छात्र संगठन को अपने ध्येय वाक्य ज्ञान, शील और एकता का ध्यान कराया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद के 58 लाख कार्यकर्ता हैं। इसके बाद भी विद्यार्थी संगठन को विस्तार की दृष्टि से अभी काफी कुछ करना है। वहीं भावनात्मक एकता के अभाव को देखते हुए परिषद के लिए काफी काम बाकी है। ज्ञान एकता के भाव से पैदा होता है और भारत की सनातन परंपरा की दृष्टि एकता की ही है। इसके साथ शील होना जरूरी है, नहीं तो ज्ञान भी किसी काम नहीं आता है। उल्लेखनीय है कि यशवंतराव केलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता थे। उन्हें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के वास्तुकार के रूप में जाना जाता है। 'यशवंतराव केलकर' की संगठन क्षमता की तुलना डॉ केशव बलिराम हेडगेवार से करते हुए संघ प्रमुख डॉ. भागवत ने कहा कि उनसे प्रेरणा लेते हुए कार्यकर्ताओं को काम करना चाहिए। उनके जाने के बाद हमें उनके ही जैसा कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता घटक की तरह होता है और वह सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करता है। उसमें संभावना बीच रूप में मौजूद होती है। छात्र कार्यकर्ताओं को भी संगठन का प्रतिनिधि बनना चाहिए और अपने आचरण से इसके ध्येय को सार्थक करना चाहिए।

## पहलगाम हमले पर सोनिया गांधी ने जताया दुख, कहा- 'पूरा देश आतंक के खिलाफ एकजुट'

एजेंसी

**नई दिल्ली।** जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए बर्बर आतंकवादी हमले ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। इस हमले में निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाया गया, जिसमें 26 लोगों की जान गई और कई घायल हुए। इस वीभत्स घटना पर कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने गहरा शोक और चिंता व्यक्त की है। सोनिया गांधी ने देररात एक आधिकारिक बयान जारी कर कहा कि वह इस नृशंस हमले से स्तब्ध और बेहद दुखी हैं। उन्होंने इसे कायरतापूर्ण कृत्य बताते हुए इसकी कड़ी निंदा की और कहा कि हिंसा का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा, मैं उन परिवारों के दुख को समझती हूं जिन्होंने अपने प्रियजनों को इस अमानवीय हमले में खो दिया है। मेरी गहरी संवेदनाएं उनके साथ हैं। सोनिया गांधी ने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए यह भी कहा कि आतंक के खिलाफ पूरा देश एकजुट है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमें इन विभाजनकारी ताकतों को हराने के लिए सामूहिक संकल्प और सामाजिक सहमति के

साथ आगे बढ़ना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है और शांति बहाली के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष ने आगे कहा कि यह हमला एक बार फिर इस बात की याद दिलाता है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में किसी भी तरह की ढिलाई नहीं बरती जा सकती। देशवासी एकजुट होकर इन ताकतों को परास्त करेंगे।

## दिल्ली विधानसभा की समृद्ध विरासत को लोगों तक पहुंचाने के लिए होगा लाइट एंड साउंड शो

एजेंसी

**नई दिल्ली।** दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि विधानसभा की समृद्ध विरासत को लोगों तक पहुंचाने के लिए विधानसभा परिसर में एक भव्य लाइट एंड साउंड शो आयोजित किया जाएगा। विधानसभा के इतिहास पर एक डॉक्यूमेंट्री का भी निर्माण किया जाएगा। भविष्य में यहां एक संग्रहालय भी स्थापित किया जाएगा, जिसमें विधानसभा की समृद्ध विरासत को संरक्षित कर प्रदर्शित किया जाएगा। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता की अध्यक्षता में एक बैठक में विशेषज्ञों और अधिकारियों ने विधानसभा भवन के संरक्षण और संवर्धन के लिए एक समग्र विकास योजना तैयार करने के लिए चर्चा की। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि दिल्ली विधानसभा को एक जीवंत विरासत स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। उन्होंने सुझाव दिया कि जनता को विधानसभा परिसर के भ्रमण का अवसर प्रदान किया जाए। विशेषकर सप्ताहांत में ताकि वे अपने लोकतंत्र की ऐतिहासिक नींव से सीधे जुड़ सकें। इस पहल के तहत इंदिरा गांधी

राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) तीन सप्ताह के भीतर एक अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा। परियोजना की प्रगति की निगरानी के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा, जिसमें आईजीएनसीए, राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली विधानसभा सचिवालय तथा विभिन्न विशेषज्ञों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। बैठक में विशेषज्ञों ने सुझाव दिया गया कि आधुनिक संरक्षण तकनीकों को पारंपरिक मूल्यों के साथ जोड़ते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाए, ताकि भवन की मूल संरचना की आत्मा को बरकरार रखते हुए देश-विदेश के लोगों को एक समृद्ध अनुभव प्रदान किया जा सके। बैठक में पारंपरिक स्थापत्य तकनीकों के संरक्षण की आवश्यकता पर भी बल दिया गया, जिससे हमारे पूर्वजों की कलात्मकता और शिल्प को सम्मान मिल सके। इस पहल का उद्देश्य विधानसभा परिसर को राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विकसित करना है, जो देश-विदेश के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बने।इस बैठक में आईजीएनसीए के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के डीन (प्रशासन) डॉ रमेश सी गौर और राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक डॉ. बी.आर. मणि आदि शामिल थे।

## ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने वक्फ कानून निरस्त होने तक आंदोलन का ऐलान किया

एजेंसी

**नई दिल्ली।** ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के तत्वावधान में राजधानी दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में वक्फ बचाओ सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें उपस्थित सांसदों, उलेमा, बुद्धिजीवियों ने एक मत से वक्फ कानून को निरस्त करने की मांग की। उनका कहना है कि यह कानून संविधान की मूल भावनाओं की अवहेलना करता है, इसलिए यह उन्हें किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं है। उनका कहना है कि जब तक इस कानून को निरस्त नहीं किया जाता है, तब तक यह आंदोलन चलेगा और देश के कोने-कोने में इस कानून के खिलाफ आवाज बुलंद की जाएगी।

वक्फ बचाओ सम्मेलन को संबोधित करते हुए ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी ने कहा कि वक्फ संशोधन कानून को लेकर मुस्लिम वर्ग के साथ-साथ देश के दीगर अल्पसंख्यक समुदायों और बहुसंख्यक हिंदू समाज के विभिन्न वर्गों से हमें भरपूर समर्थन मिल रहा है। यह इस बात का सबूत है कि हमारे देश में अभी भी आम लोगों में

भाईचारा कायम है। उन्होंने वक्फ कानून 2025 का समर्थन करने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया और कहा कि हमें जरूर कामयाबी मिलेगी। सम्मेलन में बीमारी की वजह से भाग न ले सके जमीअत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी का संदेश पढ़कर सुनाया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि वक्फ संशोधन कानून 2025 हमें स्वीकार्य नहीं है और इसकी लड़ाई हम सड़क से लेकर अदालत तक लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें अदालत से बड़ी उम्मीद है और अदालत इस कानून पर अगली सुनवाई पर अपना फैसला सुनाएगी और मुझे उम्मीद है कि वह हमारे हक में होगा।इस मौके पर एआईएमआईएम के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सऊदी अरब के दौरे का उल्लेख करते हुए कहा कि जब हमारे प्रधानमंत्री का विमान सऊदी अरब की वायु सीमा में पहुंचा, तो उनका स्वागत एफ-16 विमान ने किया, हमें बड़ी खुशी हुई।

## आपदा को टालना मुनासिब नहीं लेकिन नुकसान को कम किया जा सकता है : प्रो संतोष

**नई दिल्ली।** आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ एवं इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिक्योरिटी एंड सेफ्टी मैनेजमेंट (आईआईएसएसएम) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रो संतोष कुमार ने कहा कि यह सच है कि आपदा को टाला नहीं जा सकता है लेकिन सजगता से आपदा से होनेवाले जान-माल के नुकसान को कम जरूर किया जा सकता है।प्रो संतोष नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में देशभर से जुटे आपदा प्रबंधन के विशेषज्ञों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपदा प्रभावित पहाड़ी क्षेत्रों में हम 3 - 4 हजार करोड़ का निवेश तो गर्व से करते हैं लेकिन आपदा प्रबंधन पर सौ करोड़ खर्च करने में कंजूसी कर जाते हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ सरकार के भरोसे रहकर आपदा प्रबंधन नहीं किया जा सकता लेकिन सरकार को साथ लेकर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के सहयोग से ऐसा किया जा सकता है।प्रो संतोष ने कहा कि प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन को प्राप्त करने के लिए आपदा प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन पर सरकार के साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। आईआईएसएसएम इस दिशा में संकल्पित है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य राजेन्द्र सिंह ने बताया कि मौजूदा सरकार ने आपदा प्रबंधन के बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की है। यही कारण है कि अब आपदा के समय राहत कार्य बहुत तेज गति से हो रहा है।

अवकाश प्राप्त आईएएस अनिल सिन्हा ने कहा कि प्राइवेट सेक्टर में आपदा प्रबंधन को लेकर बहुत काम नहीं हुआ है। आईआईएसएसएम इस दिशा में बहुत अच्छा काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि नगर पालिका स्तर तक आपदा प्रबंधन की सुविधाओं को बढ़ावा देने की जरूरत है। प्रशिक्षण कार्यक्रम को दक्षिण कोरिया स्थित संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय के प्रमुख संजय भाटिया ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की आपदा को टालने के लिए उसके रिस्क को कम करना चाहिए। इसके लिए आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काम करने वालों को समय- समय पर प्रशिक्षण लेते रहना चाहिए। इस दिशा में कई संस्थाएं काम कर रही हैं। मानवता की रक्षा के लिए सभी को मिलजुल कर काम करने की जरूरत है।

## आरएसएस ने की पहलगाम आतंकवादी हमले की निंदा

एजेंसी

**नई दिल्ली ।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की निंदा करते हुए इसे अत्यंत निंदनीय और संतापजनक बताया है। दत्तात्रेय होसबाले ने एक बयान में कहा, हम घटना में मृत हुए सभी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं। यह हमला देश की एकता व अखंडता पर प्रहार करने का दुस्साहस है। उन्होंने सभी राजनीतिक दलों और संस्थाओं से अपील की कि वे सारे मतभेदों को भुलाकर इस हमले की भर्त्सना करें। होसबाले ने सरकार से अनुरोध किया कि वह सभी पीड़ितों और उनके परिवारों की सहायता के लिए आवश्यक व्यवस्था करे। साथ ही, उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकार इस हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को दंडित करने के लिए शीघ्र उचित कदम उठाए। उल्लेखनीय है कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए नृशंस आतंकी हमले की व्यापक निंदा की जा रही है। हमले में 27 लोगों की मौत हुई है। हमले में निर्दोष पर्यटकों के मारे जाने से प्से पूरे देश में शोक की लहर है।

## भारत करेगा विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप की मेजबानी, 26 सितंबर से 5 अक्टूबर तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में होगा आयोजन

एजेंसी

**नई दिल्ली।** भारत पहली बार प्रतिष्ठित विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप की मेजबानी करेगा। इसका आयोजन 26 सितंबर से 05 अक्टूबर 2025 तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में किया जाएगा। इस संबंध में जैसलमेर हाउस स्थित भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) के कार्यालय में आयोजन की समीक्षा बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता भाजपा राष्ट्रीय महिला मोर्चा की अध्यक्ष और भारतीय पैरालंपिक समिति की मुख्य संरक्षक वानति श्रीनिवासन ने की। बैठक के दौरान पीसीआई अध्यक्ष देवेन्द्र झाझरिया, महासचिव जयवंत जीएच, उपाध्यक्ष चंद्रशेखर आर. एवं एसपी सांगवान, मुख्य कोच सत्यनारायण, पीसीआई निदेशक सत्य बाबू, संयुक्त आयोजन सचिव किरुबाकर राजा मौजूद रहे। चर्चा में बुनियादी ढांचे की तैयारी, एथलीट की तैयारी, अंतरराष्ट्रीय समन्वय और व्यापक पहुंच और भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रचार रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस अवसर पर श्रीनिवासन ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और केंद्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री मनसुख मंडाविया के अटूट समर्थन के साथ, भारत के पैरा-एथलीटों ने लगातार देश को गौरव दिलाया है। आगामी मेगा इवेंट की तैयारियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी सुविधानुसार किसी तिथि पर चैंपियनशिप के लोगो का आधिकारिक रूप से अनावरण करें। भारतीय पैरालंपिक समिति ने

विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप उन्हें अपनी अदम्य भावना और उत्कृष्टता दिखाने के लिए एक और शानदार मंच प्रदान करेगी। बैठक के बाद, प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री मनसुख मंडाविया से मुलाकात की और उन्हें वानति श्रीनिवासन के निरंतर समर्थन और गतिशील नेतृत्व के लिए आभार व्यक्त किया और विश्व स्तरीय चैंपियनशिप की मेजबानी करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की, जो दुनिया भर के एथलीटों और खेल प्रेमियों की पीढ़ियों को प्रेरित करेगी।

## मेयर ने दक्षिणी महरौली में डॉ भीमराव आम्बेडकर पॉलीक्लिनिक का किया उद्घाटन

एजेंसी

**नई दिल्ली।** दिल्ली के मेयर महेश कुमार खीची ने दक्षिणी महरौली विधानसभा में डॉ भीमराव आम्बेडकर पॉलीक्लिनिक का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि इसका हर वर्ग को लाभ मिलेगा।महेश कुमार खीची ने क्षेत्र के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि महरौली की जनता को अच्छी सुविधा देने के लिए पॉलीक्लिनिक का शुभारंभ किया गया है। इससे जनता को फायदा होगा। जनता इसमें कम खर्च में सारी सुविधा का लाभ उठा सकती है। खीची ने कहा कि बाबा साहेब के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए इस प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं, ताकि देश के लोगों तक बाबा साहेब के विचार पहुंच सकें। उन्होंने कहा कि इस क्लिनिक के खुलने से आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ेगा। उनको यहां कम दाम में अच्छा इलाज मिल सकेगा। खीची ने कहा कि दिल्ली में भाजपा ट्रिपल इंजन की सरकार बनाने के लिए आआपा के पार्षदों को तोड़ने का काम कर रही है। इस अवसर पर महरौली के चेयरमैन किशन जागड़, निगम पार्षद रेखा महेंद्र चौधरी भी उपस्थित रहीं। उल्लेखनीय है कि दिल्ली महापौर और उप महापौर पद के उम्मीदवारों के नामांकन प्रक्रिया का आखिरी दिन था, जिसमें आम आदमी पार्टी ने इन चुनावों में अपना उम्मीदवार खड़ा नहीं करने का फैसला किया है।

## योग से तनाव और उच्च रक्तचाप को कम किया जा सकता है : एचआर नागेंद्र

एजेंसी

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के योग सलाहकार एचआर नागेंद्र ने कंस्टीट्यूशन क्लब में रोटरी बेंगलुरु ग्लोबल योगा की ओर से आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इस विश्व योग दिवस का आदर्श वाक्य वन अर्थ वन फैमिली है। उन्होंने कहा कि योग के जरिए मानसिक तनाव को कम करने के साथ ही रक्तचाप को नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि इस बार 21 जून को विश्व योग दिवस के अवसर पर 20 करोड़ से ज्यादा लोग योग कार्यक्रम में भाग लेंगे।इस मौके पर कन्फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटीज के अध्यक्ष प्रो. प्रिय रंजन त्रिवेदी ने कहा कि हम सभी को पृथ्वी को बचाने के प्रयास करने होंगे और इसके लिए प्लास्टिक का उपयोग न करने का संकल्प लेना होगा। उन्होंने कहा कि वह सभी विश्वविद्यालयों में योग को कोर्स के रूप में शामिल करवाने का हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने उम्मीद जताई कि वर्ष 2030 तक भारत अंग्रेजी दवाओं के जाल से मुक्त हो जाएगा। कार्यक्रम के आयोजक डॉ योगी देवराज ने कहा कि इस बार 6 व 7 दिसंबर को बेंगलुरु में चौथे अंतरराष्ट्रीय योग सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने

कहा कि पिछले योग सम्मेलन में 51 देशों के तीन हजार लोगों ने हिस्सा लिया था। इस बार उनका लक्ष्य 108 देशों के लोगों को शामिल करना है। योगी देवराज ने आगे कहा कि बेंगलुरु में होने वाले योग सम्मेलन में योग पर विश्व कोश के दस संस्करण जारी किए जाएंगे। ये संस्करण प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों रूपों में उपलब्ध होंगे। इस कार्यक्रम में सी एम त्यागराज, डॉ अनिल थपलियाल, डॉ धर्मेन्द्र मिश्रा, मार्कंडेय राय के अलावा बड़ी संख्या में साधु संत व गण्यमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में दिल्ली विश्व विद्यायल के हंसराज कालेज की प्रिंसिपल रमा, मैक्स अस्पताल की डॉ एसएन वासु, वीर चक्र से सम्मानित देवेंद्र पाल, डॉ सारिका गुप्ता और काजल सूरी को सम्मानित किया गया।

## एनडीएमसी क्षेत्र में दो हजार से अधिक पौधे और करीब 5 लाख झाड़ियां लगाई जाएंगी : चहल

एजेंसी

**नई दिल्ली ।** नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) के उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल ने मंगलवार को पौधरोपण कार्यक्रम के दौरान कहा कि एनडीएमसी अपने क्षेत्र में 2,039 पौधे और लगभग 4.82 लाख झाड़ियां लगाने जा रही है। यह अभियान जुलाई के पहले या दूसरे सप्ताह में मानसून की शुरुआत के साथ शुरू किया जाएगा। चहल ने बताया कि एनडीएमसी ने पिछले वर्ष एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत 11,096 पौधे और 13,68,148 झाड़ियां लगाई थीं।

उन्होंने आगे बताया कि इस साल एनडीएमसी क्षेत्र में हरियाली बढ़ाने और जहां आवश्यकता है, वहां पौधरोपण के लिए विस्तृत सर्वेक्षण के बाद लक्ष्य तय किए गए हैं। इस वर्ष का अभियान अकबर रोड, शंकर रोड, सरदार पटेल मार्ग जैसे प्रमुख मार्गों और कॉलोनी पार्कों में चलेगा। इसके अलावा नेहरू पार्क, लोधी गार्डन,

संजय झील और तालकटोरा गार्डन जैसे प्रमुख उद्यानों को भी इस मुहिम में शामिल किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस वर्ष इमली, जामुन, पीपल, बरगद, चंपा, बांस, नीम और अशोक जैसे 10 प्रकार के पौधों को लगाने की योजना है। इसके साथ ही चांदनी, हेमालिया, कैलेंडुला, तिकोना और मौर्य जैसी सजावटी और देशी झाड़ियों को भी चुना गया है, जो सौंदर्य और जैव विविधता को बढ़ाएंगी। कुलजीत सिंह चहल ने आगे बताया कि एनडीएमसी वर्तमान में अपने क्षेत्र में 1,450 एकड़ हरित क्षेत्र का रखरखाव करती है। इसमें 6 बड़े पार्क–सेंट्रल पार्क, लोधी गार्डन, तालकटोरा गार्डन, नेहरू पार्क और संजय झील शामिल हैं। इसके अलावा 122 कॉलोनी पार्क, 6 नर्सरी, 981 सीपीडब्ल्यूडी पार्क, 52 स्कूलों के हरित परिसर, 51 गोलचक्कर, 14 बाज़ार उद्यान और लगभग 15,000 सड़क किनारे के पेड़-पौधे भी एनडीएमसी के तहत आते हैं।

## फ्लिपकार्ट आईपीओ से पहले अपना मुख्यालय सिंगापुर से भारत में करेगा स्थानांतरित

एजेंसी

**नई दिल्ली।** वॉलमार्ट के स्वामित्व वाली ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट भारत में घर वापसी की तैयारी कर रही है। देश की प्रमुख ई-कॉमर्स कंपनियों में से एक फ्लिपकार्ट कई सालों तक सिंगापुर में परिचालन करने के बाद अब अपना मुख्यालय सिंगापुर से वापस भारत ला रही है। क्योंकि वह अगले साल भारतीय शेयर बाजार में आईपीओ लाने की तैयारी कर रही है। फ्लिपकार्ट ने एक बयान में कहा कि वह अपना मुख्यालय सिंगापुर से भारत में स्थापित करेगी। इस कदम को देश में संभावित सार्वजनिक सूचीबद्धता की दिशा में एक कदम के रूप में देखा जा सकता है। इसकी मूल कंपनी वॉलमार्ट 17 साल पुरानी कंपनी को सार्वजनिक करने का लक्ष्य बना रही है। वर्तमान में फ्लिपकार्ट का मुख्यालय सिंगापुर में स्थित है। कंपनी ने कहा कि भारत में जन्मी और विकास करने वाली कंपनी के रूप में यह बदलाव हमारे ग्राहकों, विक्रेताओं, भागीदारों और समुदायों की सेवा करने में हमारे ध्यान और तत्परता को और बढ़ाएगा, ताकि देश की बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था और उद्यमिता में योगदान जारी रखा जा सके। अब भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है और घरेलू तकनीकी फॉर्म में निवेशकों के दिलचस्पी बढ़ रही है, जिसके कारण फ्लिपकार्ट ने भारत वापस लौटने का फैसला किया है।

## वित्त मंत्री सीतारमण की सैन फ्रांसिस्को में कारोबारी दिग्गजों से मुलाकात, निवेश व तकनीकी सहयोग पर चर्चा

**नई दिल्ली।** केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोमवार को सैन फ्रांसिस्को में कई वरिष्ठ कारोबारी नेताओं, अधिकारियों और व्यापार जगत के दिग्गजों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल इंडिया, निवेश और शिक्षा में भारत-अमेरिका सहयोग के अवसरों पर चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के हूवर इंस्टीट्यूशन में 'विकसित भारत 2047 की नींव' विषय पर मुख्य भाषण दिया। इस दौरान उन्होंने प्रोफेसर स्टीव डेविस के साथ एक फायरसाइड चैट में हिस्सा लिया। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इन दिनों अमेरिका और पेरू की 11 दिनों की आधिकारिक दौरे पर हैं। दौरे की शुरुआत में उन्होंने कैलिफोर्निया के इस शहर में भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ बातचीत की। सोमवार को उन्होंने कई बिजनेस लीडर्स और कॉरपोरेट एक्जीक्यूटिव्स से मुलाकात की। इस दौरान वित्त मंत्री ने सिलिकॉन वैली की वेंचर कैपिटल फर्म a165 के जनरल पार्टनर अंजनेय मिधा और टेक्नोलॉजी कंपनी VMware के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) रघु रघुराम से मुलाकात की। वित्त मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर दी गई जानकारी में बताया कि बैठक के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तकनीक के क्षेत्र में हो रहे अभूतपूर्व परिवर्तन पर चर्चा की।

## सोनीपत की मंडियों में तीन लाख 28 हजार 403 टन गेहूं की आवक

**सोनीपत।** हरियाणा में सोनीपत में सांय तक जिला की विभिन्न 24 मंडियों व खरीद केंद्रों में तीन लाख 28 हजार 403 टन गेहूं की आवक हो चुकी है। यह जानकारी उपायुक्त मनोज कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि कुल आवक में से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने एक लाख चार हजार 251 टन, हैफेड एक लाख 36 हजार 259 टन, हरियाणा वेयर हाउसिंग 68 हजार 710 टन और फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया (एफसीआई) द्वारा दस हजार 782 टन गेहूं एवं आमजन के द्वारा (कमर्शियल गेहूं) 8401 टन गेहूं की खरीद की गई है। इसी प्रकार बरोदा खरीद केन्द्र पर 2680 टन, भैंसवाल 3750 टन, बिचपड़ी 1055 टन, दातौली 4846 टन, फरमाणा 7594 टन, गन्नौर 29585 टन, गोहाना 116276 टन, हुल्लाहेड़ी 1208 टन, कासंडी 5110 टन, कथूरा 7095 टन, खानपुर 7577 टन, खरखौदा मण्डी में 46340 टन, मोहाना 9574 टन, मुण्डलाना 6705 टन, मुरथल खरीद केन्द्र पर 8403 टन, नाहरा 6290 टन, पुगथला 9000 टन, पुरखास 6970 टन, रूखी खरीद केन्द्र पर 8750 टन, सनपेड़ा 9074 टन तथा सोनीपत 29432 टन गेहूं की आवक हुई है।

## आईएमएफ ने घटाया भारत का विकास अनुमान

**नयी दिल्ली ।** अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने कहा कि वैश्विक अनिश्चितता और व्यापार तनाव के कारण चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर जनवरी में अनुमानित 6.5 प्रतिशत की तुलना में कम होकर 6.2 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। विश्व आर्थिक परिदृश्य के अपने दूसरे अपडेट में, आईएमएफ ने कहा कि बढ़ते व्यापार संघर्ष का वित्त वर्ष 27 की विकास संभावनाओं पर भी असर पड़ सकता है, जिसमें भारत की वृद्धि दर पहले अनुमानित 6.5 प्रतिशत की तुलना में 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है। आईएमएफ ने कहा, भारत के लिए, 2025 में विकास की संभावना अपेक्षाकृत अधिक स्थिर है, जो निजी खपत, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, द्वारा समर्थित है, लेकिन यह दर जनवरी 2025 के डब्ल्यूईओ अपडेट की तुलना में 0.3 प्रतिशत कम है, जो व्यापार तनाव और वैश्विक अनिश्चितता के उच्च स्तर के कारण है। आईएमएफ का संशोधन इस महीने की शुरुआत में विश्व व्यापार संगठन और यूएनसीटीएडी द्वारा इसी तरह की डाउनग्रेडिंग के बाद आया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने भी अप्रैल में अपने नीतिगत दृष्टिकोण में फरवरी में अनुमानित 6.7 प्रतिशत से वृद्धि पूर्वानुमान को घटाकर 6.5 प्रतिशत कर दिया है।

# श्रीनगर जाने वाली फ्लाइट्स के किराये पर सरकार की नजर, एयरलाइन कंपनियों को सख्त निर्देश

एजेंसी

**नई दिल्ली।** नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एयरलाइन कंपनियों को यह सुनिश्चित करने को कहा है कि श्रीनगर मार्ग पर हवाई किराये में कोई वृद्धि न हो। मंत्रालय ने कहा कि श्रीनगर के लिए अतिरिक्त उड़ानें भी संचालित की जाएंगी।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने आज जारी बयान में कहा कि केंद्रीय नागर विमाननमंत्री राममोहन नायडू ने कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर प्रभावित पर्यटकों और पीड़ितों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए त्वरित कदम उठाए हैं। नागर विमानन मंत्री ने व्यक्तिगत रूप से गृहमंत्री से बात की और संबंधित अधिकारियों के साथ निकट समन्वय बनाए रखते हुए चौबीस घंटे स्थिति की निगरानी कर रहे हैं। राम राममोहन नायडू ने तत्काल राहत उपायों के रूप में श्रीनगर से 4 विशेष उड़ानें जिसमें दो

दिल्ली और दो मुंबई के लिए व्यवस्था की गई है। साथ ही इसके बाद की निकासी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त उड़ानों को तैयार रखा गया है। उन्होंने सभी एयरलाइन ऑपरेटरों के साथ एक तत्काल बैठक बुलाते हुए किराया में बढ़ोतरी के खिलाफ सख्त निर्देश जारी करते हुए एयरलाइनों को नियमित किराया स्तर बनाए रखने को कहा गया है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस संवेदनशील समय के दौरान किसी भी यात्री पर बोझ न पड़े।

इसके अलावा नायडू ने सभी एयरलाइन कंपनियों को निर्देश दिया है कि वे राज्य सरकारों और स्थानीय प्राधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए, मृतक व्यक्तियों को उनके गृह राज्यों तक पहुंचाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें। नागर विमानन मंत्रालय पूरी तरह सतर्क है और प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उल्लेखनीय है कि दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में एक प्रमुख पर्यटक स्थल पर आतंकवादियों ने हमला किया था। इस हमले में कम से कम 26 लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए हैं।

## मजबूती का सिक्सर, लगातार छठे दिन बढ़त के साथ बंद हुए सेंसेक्स और निफ्टी

एजेंसी

**नई दिल्ली।** घरेलू शेयर बाजार लगातार छठे दिन बढ़त के साथ हरे निशान पर बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत भी मजबूती के साथ हुई थी। हालांकि, बाजार खुलते ही बिकवाली के दबाव की वजह से कुछ देर के लिए शेयर बाजार के दोनों सूचकांक लाल निशान में भी गिर गए, लेकिन थोड़ी ही देर बाद लिवाली शुरू हो जाने के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने दोबारा हरे निशान में अपनी जगह बना ली। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.24 प्रतिशत और निफ्टी 0.17 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।आज दिन भर के कारोबार के दौरान एफएमसीजी, रियल्टी और पीएसयू बैंक सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसी तरह मेटल, फार्मास्यूटिकल, ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर आईटी, एनर्जी, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, टेक, ऑयल एंड गैस तथा कैपिटल गुड्स सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज आमतौर पर खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.81 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.82 प्रतिशत उछल कर आज के कारोबार का अंत किया।

आज शेयर बाजार में आई मजबूती के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में सवा लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 427.24 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 425.85 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 1.39 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया।

## एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 15 लाख करोड़ रुपये के पार

एजेंसी

**नई दिल्ली।** निजी क्षेत्र के एचडीएफसी बैंक के शेयर में करीब दो फीसदी की तेजी आई, जिससे इसका बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) 15 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया है। ये उपलब्धि हासिल करने वाली यह देश की तीसरी कंपनी बन गई। एचडीएफसी बैंक के अलावा देश की दो कंपनियां ही यह उपलब्धि हासिल कर सकी हैं।

एचडीएफसी बैंक का शेयर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर 1.78 फीसदी चढ़कर 1,961.90 रुपये पर बंद हुआ। दिन के कारोबार में इसका शेयर 2.23 फीसदी उछलकर 1,970.65 रुपये पर पहुंच गया था, जो इसका रिकॉर्ड उच्चतम स्तर है। इसी तरह नेशनल स्?टॉक एक्?सचेंज (एनएसई) पर शेयर 1.70 फीसदी बढ़कर 1,960 रुपये पर पहुंच गया। बैंक के शेयर में नौ अप्रैल से 11.12 फीसदी की तेजी आई है। इस दौरान बैंक के बाजार पूंजीकरण में 1,50,289.64 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है, जो 15,01,289.37 करोड़ रुपये हो

गया। उल्लेखनीय है कि अभी तक केवल रिलायंस इंडस्ट्रीज और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने ही 15 लाख करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण को पार किया है। एचडीएफसी बैंक ने शनिवार को बताया था कि वित्?त वर्ष 2024-25 की जनवरी-मार्च तिमाही में उसका समेकित शुद्ध लाभ सात फीसदी बढ़कर 18,835 करोड़ रुपये हो गया है। हालांकि, बैंक ने आवास और कॉर्पोरेट ऋण खंडों में मूल्य निर्धारण से जुड़े मुद्दों पर चिंता जताई, जिससे बैंक की ऋण वृद्धि प्रभावित हो रही है।

## क्रिक कॉमर्स और ई-कॉमर्स' प्लेटफॉर्म के खिलाफ खुदरा दुकानदार करेंगे देशव्यापी आंदोलन

एजेंसी

नई दिल्ली। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने 'क्रिक कॉमर्स और ई-कॉमर्स के काम करने के तौर-तरीकों से देश के पारंपरिक खुदरा दुकानदारों को हो रहे नुकसान पर चिंता व्यक्त करते हुए उनके विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन चलाने का संकल्प लिया है। कैट के बैनर तले राजधानी नई दिल्ली में कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में क्रिक कॉमर्स और ई-कॉमर्स का क्रूर चेहरा विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कॉन्क्लेव में सर्वसम्मति से यह ऐलान किया गया। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि भारत का दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता पारंपरिक खुदरा व्यापार, आज उन कंपनियों के निशाने पर है, जो खुलेआम कानूनों का उल्लंघन कर रही हैं। बाजार को विकृत कर रही हैं और छोटे व्यापारियों को योजनाबद्ध तरीके से बर्बाद कर रही हैं। खुदरा कारोबारियों ने क्रिक कॉमर्स व ई-कॉमर्स जैसी कंपनियों के खिलाफ विरोध का बिगुल बजा दिया है। खुदरा दुकानदार क्रिक कॉमर्स और ई-कॉमर्स

प्लेटफॉर्म के तौर-तरीकों के खिलाफ देशव्यापी विरोध-प्रदर्शन करेंगे, क्योंकि उनका मानना है कि ये कंपनियां खुदरा व्यापार को नुकसान पहुंचा रही हैं। कैट महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने बताया कि ऑल इंडिया मोबाइल रिटेलर्स एसोसिएशन (एमरा), ऑल इंडिया कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर्स फेडरेशन (आईसीपीडीएफ) और ऑर्गनाइज्ड रिटेलर्स एसोसिएशन (ओरा) के साथ मिलकर विदेशी फंड से संचालित ई-कॉमर्स कंपनियों और तथाकथित भारतीय क्रिक कॉमर्स प्लेटफार्मों के खिलाफ आंदोलन करने का ऐलान किया है। कारोबारी संगठन कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.सी. भरतिया ने कहा कि 1 मई से पूरे देश में एक निर्णायक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया जाएगा, जिसमें हर राज्य और शहर की व्यापारिक संस्थाएं हिस्सा लेंगी।

## तंबाकू किसानों का पंजीकरण प्रमाणपत्र अब तीन साल के लिए होगा वैध

एजेंसी

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार ने तंबाकू उत्पादकों को बड़ी राहत दी है। सरकार ने कहा कि तंबाकू किसानों का पंजीकरण प्रमाणपत्र यानी लाइसेंस अब एक साल के बजाय तीन साल के लिए वैध होगा। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी एक बयान में कहा कि भारत सरकार ने व्यापार करने में आसानी के लिए वर्जीनिया तम्बाकू उत्पादक के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र और खलिहान के संचालन के लिए लाइसेंस को 01 साल के बजाय तीन साल के लिए नवीनीकृत करने का निर्णय लिया है, ताकि वर्जीनिया तंबाकू उत्पादक के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र और खलिहान के संचालन के लिए लाइसेंस के अनिवार्य वार्षिक नवीनीकरण के बोझ को कम किया जा सके। इसका मतलब है कि पंजीकरण/लाइसेंस हर साल

नवीनीकरण की मौजूदा प्रथा के बजाय 3 साल की अवधि के लिए वैध होंगे। लाइसेंस अवधि को एक से तीन साल तक बढ़ाने से देश के लगभग 91,000 खलिहानों को कवर करने वाले 83,500 किसानों को आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा जैसे राज्यों में अपने पंजीकरण के नवीकरण में मदद मिलेगी। वर्जीनिया तंबाकू के लिए पंजीकरण और लाइसेंस आवश्यक भारत में वर्जीनिया तंबाकू को संसद के एक अधिनियम अर्थात तंबाकू बोर्ड अधिनियम, 1975 और उसके तहत अधिसूचित नियमों द्वारा विनियमित किया जा रहा है। तंबाकू बोर्ड अधिनियम, 1975 और उसके तहत अधिसूचित नियमों के अनुसार वर्जीनिया तंबाकू की खेती करने के इच्छुक प्रत्येक उत्पादक को उत्पादक के रूप में पंजीकरण प्रमाणपत्र और खलिहान के संचालन के लिए लाइसेंस प्राप्त करना होगा। तदनुसार तंबाकू बोर्ड वार्षिक आधार पर पंजीकरण/लाइसेंसिंग की सुविधा प्रदान कर रहा है।

भारत दुनिया में गैर-निर्मित तंबाकू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है। (2023 के दौरान मूल्य के संदर्भ में) और भारतीय राजकोष में आय अर्जित कर रहा है। वित्?त वर्ष 2024-25 के दौरान तंबाकू निर्यात ने भारतीय राजकोष में 1979 मिलियन अमेरिकी डॉलर (16,728 करोड़ रुपये) का योगदान दिया है।

## केंद्र ने आरबीआई के डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ाया

एजेंसी

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार ने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के डिप्टी गवर्नर टी. रबी शंकर का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया है। सरकार ने दूसरी बार उन्हें एक साल का और सेवा विस्तार दिया है, जो 3 मई से प्रभावी होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने विस्तारित अवधि के लिए टी. रबी शंकर की पुनर्नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। एसीसी ने 3 मई से एक साल या अगले आदेश तक उनकी फिर से नियुक्ति को अपनी मंजूरी दे दी है। इस सम्बन्ध में 21 अप्रैल को एक सरकारी आदेश जारी किया गया है।

टी. रबी शंकर को मई, 2021 में तीन साल की अवधि के लिए आरबीआई के डिप्टी गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने केंद्रीय बैंक में विभिन्न पदों पर काम किया है। शंकर कार्यकारी निदेशक की अपनी पिछली भूमिका में आरबीआई में भुगतान और निपटान प्रणाली विभाग, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, फिनटेक और जोखिम निगरानी विभाग की देख-रेख कर रहे थे। उन्होंने इससे पहले सरकारी बॉन्ड बाजारों और ऋण प्रबंधन के विकास के लिए आईएमएफ सलाहकार (2005-11) के रूप में भी काम किया है। अब एक साल मई, 2026 तक के लिए उनका कार्यकाल बढ़ा दिया गया है।

## कोयला मंत्रालय ने आरएसआर मोड के जरिए सतत कोयला परिवहन पर हितधारक परामर्श बैठक आयोजित की

एजेंसी

**नई दिल्ली।** कोयला मंत्रालय ने नई दिल्ली में रेल-समुद्र-रेल (आरएसआर) मोड के जरिए सतत कोयला परिवहन के अवसरों की खोज विषय पर एक हितधारक परामर्श बैठक आयोजित किया। इस परामर्श बैठक का उद्देश्य कोयला लॉजिस्टिक्स मूल्य श्रृंखला में प्रमुख भागीदारों के बीच आम सहमति और तालमेल बनाना था, ताकि अधिक कुशल, लचीले और सतत भविष्य के लिए बहुअयामी परिवहन को बढ़ावा दिया जा सके। कोयला मंत्रालय ने जारी बयान में कहा कि कोयला सचिव विक्रम देव दत्त ने अपने संबोधन में आरएसआर मॉडल को एक दूरदर्शी पहल बताया, जो देश के व्यापक लक्ष्यों जैसे कि रसद दक्षता को बढ़ाने, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के अनुरूप है। उन्होंने आरएसआर आवाजाही के

सफल कार्यान्वयन के लिए बुनियादी ढांचे को सुव्यवस्थित करने, संचालन को अनुकूलित करने और प्रक्रियात्मक बाधाओं को दूर करने के लिए मंत्रालयों, राज्य सरकारों, बिजली उत्पादन कंपनियों (जेनकोस), कोयला उत्पादकों, बंदरगाह अधिकारियों और रसद प्रदाताओं के बीच घनिष्ठ समन्वय का आह्वान किया। मंत्रालय के मुताबिक इस परामर्श बैठक में रेल मंत्रालय, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (एमओपीएसडब्लू), विद्युत मंत्रालय, राज्य सरकारों, कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल), कैप्टिव और वाणिज्यिक खनिकों, जेनकोस और पत्तन संचालकों के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न हितधारकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। चर्चाओं के दौरान हितधारकों ने इंटरमॉडल कनेक्टिविटी को बढ़ाने, पत्तनों पर मशीनीकृत कोयला हैंडलिंग बुनियादी ढांचे को तैनात करने, रेक उपलब्धता में सुधार करने और पत्तन शुल्क को युक्तिसंगत बनाने पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक सुझाव साझा किए। बैठक में वित्त वर्ष 2030 तक रेल-समुद्र-रेल (आरएसआर) मोड के जरिए 120 मिलियन टन कोयले के परिवहन के अनुमान के साथ कोयला मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2026 तक इस मार्ग से 65 मिलियन टन कोयले की ढुलाई करने का लक्ष्य रखा है।

## ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफार्म जुपी ने वित्त वर्ष 2023-24 में कमाए 1123 करोड़ रुपये

एजेंसी

**नई दिल्ली।** ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म जुपी ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए अपने वार्षिक परिणाम घोषित किए हैं। कंपनी ने इस अवधि में 1,123 करोड़ रुपये का शुद्ध राजस्व अर्जित किया और 146 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया है। 2018 में जुपी के स्थापना के बाद यह पहला अवसर है जब जुपी ने लाभ कमाया है। यहां आयोजित प्रेसवार्ता में जुपी के संस्थापक और सीईओ दिलशेर सिंह माल्ही ने कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 हमारे लिए एक ऐतिहासिक साल रहा। स्थापना के बाद से पहली बार कंपनी लाभ में आई है और तेज़ी से गेमिंग के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रही है। उन्होंने कहा कि जुपी ने ऑनलाइन स्किल-बेस्ड लूडो की शुरुआत की, जिसने ऑनलाइन गेमिंग जगत में एक नई श्रेणी बनाई। उस समय जब रम्मी

और फैंटेसी स्पोर्ट्स का बोलबाला था, जुपी ने कौशल आधारित देश के घर घर में खेले जाने वाले खेल लूडो और सांप सीढ़ी खेलों को ऑनलाइन माध्यम से आगे बढ़ाया। कंपनी की सफलता यह साबित करती है कि संस्कृति से जुड़े गेम सीमाओं और उम्र की सीमा से परे जाकर लोगों को जोड़ते हैं। दिलशेर ने कहा कि जुपी का फोकस हमेशा से नवाचार, नियमों का पालन और जिम्मेदार गेमिंग का रहा है। इसलिए जुपी भारत के गेमिंग बाजार में एक मजबूत और भरोसेमंद नाम बनाता है। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में देश में खेले जा रहे पारंपरिक खेलों को भी इस ऑनलाइन गेमिंग में लाने की योजना है। केन्द्र द्वारा बनाए गए नियमों और 28 प्रतिशत जीएसटी पर उन्होंने कहा कि वर्ष की दूसरी छमाही में 28 प्रतिशत जीएसटी लागू होने के कारण गेमिंग उद्योग को संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद जुपी लूडो ने अपनी तेज़ अनुकूलन क्षमता, संचालन में लचीलापन और प्रोडक्ट-केंद्रित दृष्टिकोण के कारण अपनी गति बनाए रखी।

## भारतीय मानक ब्यूरो ने मानकीकरण में 500 इंटर्नशिप की पेशकश की

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय मानक निकाय भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने मानकीकरण के क्षेत्र में अपने साझेदार संस्थानों के 500 छात्रों के लिए इंटर्नशिप के अवसरों की घोषणा की। यह घोषणा हाल ही में आयोजित बीआईएस मानकीकरण अध्यक्षों और एमओयू भागीदार संस्थानों के नोडल संकाय के वार्षिक सम्मेलन में की गई। उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि यह इंटर्नशिप चार वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रमों, पांच वर्षीय एकीकृत डिग्री पाठ्यक्रमों, स्नातकोत्तर डिग्री और डिप्लोमा कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों को दी जाएगी। आठ हफ्ते की इंटर्नशिप में दो प्रमुख उद्योगों में पूर्व-मानकीकरण कार्य, बीआईएस कार्यालयों के सहयोग से क्यूसीओ (गुणवत्ता नियंत्रण आदेश) अनुपालन सर्वेक्षण और बड़े पैमाने की इकाइयों, एमएसएमई और प्रयोगशालाओं का साइट दौरा शामिल होगा। मंत्रालय के मुताबिक छात्र विनिर्माण और परीक्षण प्रक्रियाओं, कच्चे माल, इन-प्रोसेस नियंत्रण और उत्पाद की गुणवत्ता और अनुरूपता मूल्यांकन के अन्य पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन करेंगे। सम्मेलन में 58 साझेदार संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

# लखटकिया हुआ सोना, देश-दुनिया में सोना ने बनाया मजबूती का नया रिकॉर्ड

एजेंसी

**नई दिल्ली।** वैश्विक अर्थव्यवस्था को लेकर बनी चिंता के कारण देश और दुनिया में सोने की कीमत में तेजी का दौर लगातार जारी है। भारत के मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में सोना आज अपने सर्वोच्च स्तर 1,00,116 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंच गया। इसी तरह अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोना आज पुराने सभी रिकॉर्ड्स को ध्वस्त करते हुए 3,500 डॉलर प्रति औंस के करीब पहुंच गया। आज दिनभर के कारोबार के दौरान सोना पहली बार तीन प्रतिशत जीएसटी जोड़ने के बाद 1 लाख रुपये के स्तर को पार करके 1,00,116 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक पहुंचने में सफल रहा। वहीं, वायदा बाजार में एमसीएक्स पर सोना 1.76 प्रतिशत उछल कर 98,991 रुपए के स्तर पर कारोबार करता नजर आया। सोने की तरह वायदा बाजार में एमसीएक्स पर चांदी 0.62 प्रतिशत की छलांग लगा कर 95,840 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार करता नजर आया। वहीं, जीएसटी समेत चांदी की कीमत 98,715 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर रही। भारतीय बाजार की तरह अंतरराष्ट्रीय बाजार

में भी सोना आज मजबूती के नए शिखर पर पहुंच गया। इस चमकीली धातु ने आज 3,434.37 डॉलर प्रति औंस के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। दिन के कारोबार में सोना मजबूती का नया रिकॉर्ड बनाते हुए 3,499.87 डॉलर प्रति औंस के स्तर तक पहुंच गया। इसी तरह यूएस गोल्ड फ्यूचर्स भी 1.7 प्रतिशत की मजबूती के साथ 3482.40 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर कारोबार करता नजर आया। कैपेक्स गोल्ड एंड इन्वेस्टमेंट्स के सीईओ राजीव दत्ता का कहना है कि अमेरिका और चीन के बीच जारी टैरिफ वॉर की वजह से निवेशकों के बीच सेफ इन्वेस्टमेंट के रूप में सोने की मांग लगातार बढ़ी है। इसी तरह डॉलर इंडेक्स में आई गिरावट ने भी सोने की मांग को बढ़ा दिया है। डॉलर इंडेक्स फिलहाल 3 साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंचा हुआ है, जिससे निवेशकों के बीच सोने का आकर्षण बढ़ गया है। इसके अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल के बीच ब्याज दर को लेकर चल रही खींचतान की वजह से भी अमेरिकी बाजार में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। इसके कारण निवेशक वॉल स्ट्रीट की तुलना में गोल्ड मार्केट में निवेश करना ज्यादा बेहतर समझ रहे हैं।

## हॉकी इंडिया ने ज्ञान विनिमय सत्र के लिए ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के छात्रों की मेजबानी की

एजेंसी

**नई दिल्ली।** हॉकी इंडिया ने सोनीपत स्थित ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के छात्रों के एक समूह का नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में एक संवाद सत्र के लिए स्वागत किया। जीतेंद्रनाथ मिश्रा (पीएच.डी., भारतीय विदेश सेवा, सेवानिवृत्त) और डिप्लोमैटिक प्रैक्टिस के प्रोफेसर के नेतृत्व में इस दौरे का उद्देश्य शासन और कूटनीति में खेलों की भूमिका के बारे में समझ को गहरा करना था। सत्र के दौरान हॉकी इंडिया के अधिकारियों ने छात्रों से संवाद किया और कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। इनमें संघ का आंतरिक शासन, भारत की वैश्विक हॉकी में उपस्थिति, अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) के साथ संबंध, लिंग समानता के लिए समर्थन, गरीब खिलाड़ियों के लिए सहायता और भारतीय हॉकी में जमीनी स्तर पर विकास शामिल थे। इस प्रकार की पहलों के माध्यम से हॉकी इंडिया शैक्षिक कार्यक्रमों का समर्थन करता है जो समाज में खेलों की भूमिका पर चर्चा और सीखने को बढ़ावा देते हैं।

## बाबा दीप सिंह बास्केटबॉल टूर्नामेंट में लेडी श्री राम कॉलेज ने की विजयी शुरुआत

**नई दिल्ली।** लेडी श्री राम कॉलेज और रामजस कॉलेज ने पीएसपीबी बाबा दीप सिंह बास्केटबॉल टूर्नामेंट में अपने अभियान की विजयी शुरुआत की है। महिला वर्ग में लेडी श्री राम कॉलेज ने किरोड़ी मल को 38-28 से हराया और प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड लेडी श्रीराम कॉलेज की अन्वी को मिला। रामजस कॉलेज ने हंसराज कॉलेज को 39-28 से हराया और रामजस कॉलेज की अनीका प्लेयर ऑफ द मैच बनीं। पुरुष वर्ग में हंसराज कॉलेज ने रामजस कॉलेज को 54-40 से हराया और हंसराज कॉलेज के अनुभव प्लेयर ऑफ द मैच बने। किरोड़ी मल कॉलेज ने दयाल सिंह कॉलेज को 54-51 से हराया और प्लेयर ऑफ द मैच किरोड़ी मल कॉलेज के अनस बने। श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज ने भारत अकादमी को 69 -63 से हराया और जिसई टीम के नितिन हुडा को प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड मिला। हॉकी प्रतियोगिता के चौथे दिन पुरुष वर्ग में मैच में इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस ने किरोड़ी मल कॉलेज को 7-0 से हराया।इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस की तरफ पुलकित शर्मा ने 4 गोल और गुरमुख सिंह, भूपिंदर एवं चिरंजीव ने एक-एक गोल किए। प्लेयर ऑफ द मैच का अवार्ड इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट के पुलकित शर्मा को मिला।

## मुजारबानी ने बंगलादेश को दूसरी पारी में 255 पर समेटा, जिम्बाब्वे को मिला 174 का लक्ष्य

**सिलहट।** ब्लेसिंग मुजारबानी (छह विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर जिम्बाब्वे ने पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन बंगलादेश की टीम को दूसरी पारी में 255 के स्कोर पर समेट दिया है। पहली पारी में मिली बढ़त के आधार पर जिम्बाब्वे को जीत के लिए 174 रन बनाने है। बंगलादेश ने कल के चार विकेट पर 194रन से आगे खेलना शुरू किया। सुबह के सत्र की शुरुआत में ही ब्लेसिंग मुजारबानी ने कप्तान नजमुल शान्तो (60) को आउट कर जिम्बाब्वे के लिए अच्छी शुरुआत की। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मेहदी हसन मिराज (11) को भी मुजारबानी ने अपना शिकार बनाया। जिम्बाब्वे की घातक गेंदबाजी के आगे आज बंगलादेश ने 61 रन जोड़ कर अपने छह विकेट गवां दिये। रिचर्ड एनगरवा ने तैजुल इस्लाम (एक) को आउट किया। हसन महमूद (12), खालिद अहमद (शून्य) को वेलिंग्टन मसाकाद्जा का शिकार बने। इस दौरान जाकेर अली एक छोर थामे रन बनाते रहे और उन्होंने अपना अर्धशतक पूरा किया। मुजारबानी ने 80वें ओवर की दूसरी गेंद पर जाकेर अली (58) को आउटकर बंगलादेश की पारी को 255 के स्कोर पर समेट दिया। जिम्बाब्वे को जीत के लिए 174 रन बनाने है।

## आईपीएल ने भारत में क्रिकेट के प्रति जुनून को दी हवा

**लखनऊ।** इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने क्रिकेट के दीवाने देश भारत में क्रिकेट के प्रति जुनून को हवा दी है और दीवानगी का आलम यह है कि 47 फीसदी भारतीय दर्शक स्टेडियम में जाकर लाइव मैच देखना चाहते हैं जिसके लिये शहर ही नहीं बल्कि अन्य प्रदेश अथवा विदेश यात्रा करने वालों की भी कोई कमी नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार 50 फीसदी भारतीय क्रिकेट मैच के बाद शहर देखने के लिए अपनी यात्रा 3-4 दिन बढ़ाना चाहते हैं। क्रिकेट देखने के लिए यात्रा की सूची में ऑस्ट्रेलिया और भारत में सबसे ऊपर मुंबई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 80 फीसदी भारतीय इस सीजन में आईपीएल मैच लाइव देखना चाहते हैं। लीडिंग ग्लोबल ट्रैवल ऐप स्काईस्कैनर ने अपनी 'पिच परफेक्ट जर्नीज' रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारतीयों की यात्रा में क्रिकेट की अहम भूमिका रहने वाली है।

# पूर्व ऑस्ट्रेलियाई ओपनर कीथ स्टैकपोल का 84 वर्ष की उम्र में निधन

एजेंसी

**मेलबर्न।** पूर्व ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट ओपनर कीथ स्टैकपोल का 84 वर्ष की उम्र में हार्ट अटैक से निधन हो गया है। उन्होंने अपने करियर में 43 टेस्ट मैच खेले और 7 शतक लगाए थे। स्टैकपोल ने ना सिर्फ बल्ले से बल्कि गेंद से भी टीम के लिए योगदान दिया और बाद में एक लोकप्रिय टीवी व रेडियो कमेंटेटर भी बने।

**मिडिल ऑर्डर से ओपनर बनने तक का सफर**

स्टैकपोल ने 1966 में इंग्लैंड के खिलाफ मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज और लेग स्पिन गेंदबाज के रूप में टेस्ट डेब्यू किया था। लेकिन 1969 की शुरुआत में उन्हें ओपनिंग की जिम्मेदारी दी गई, जहां उन्होंने बिल लॉरी के साथ मजबूत जोड़ी बनाई। कीथ स्टैकपोल ने अपना पहला टेस्ट शतक साउथ अफ्रीका के खिलाफ केपटाउन में लगाया था, जबकि



उनका सर्वोच्च स्कोर 207 रन इंग्लैंड के खिलाफ 1970 में गाबा (ब्रिस्बेन) में आया। इंग्लैंड के खिलाफ उनका प्रदर्शन बेहद शानदार रहा—उन्होंने 55.21 की औसत से रन बनाए और तीन शतक जमाए। 1972 की एशेज सीरीज में वे इयान चैपल के उपकप्तान थे और सबसे ज्यादा 485 रन बनाए थे। इसके चलते उन्हें 1973 में विज्डन क्रिकेटर ऑफ द ईयर भी चुना गया।

**अनोखे अंदाज में टेस्ट करियर का अंत**

1974 में न्यूजीलैंड के खिलाफ ऑकलैंड में उन्होंने अपने करियर का आखिरी टेस्ट खेला, जिसमें वे दोनों पारियों में खाता भी नहीं खोल पाए। पहली ही गेंद पर फुल टॉस पर आउट होकर उन्होंने लिखा था– मैंने गेंद को सिर के पास एक गज की दूरी पर देखा और पीछे हट गया, लेकिन बैट के किनारे से लगकर गेंद स्लिप में चली गई। शायद टेस्ट क्रिकेट का पहला मौका था जब कोई बिना गेंद ज़मीन पर गिरे आउट हो गया!

**पहले वनडे में भी निभाई थी भूमिका**

स्टैकपोल ने 1971 में खेले गए पहले-द्विपक्षीय वनडे मैच में भी हिस्सा लिया था, जहां उन्होंने एमसीजी में 3 विकेट लेकर 40 रन दिए थे।

**संपूर्ण करियर और बाद का योगदानः** स्टैकपोल ने फर्स्ट-क्लास क्रिकेट में 10,100 रन बनाए और 148 विकेट लिए। संन्यास के बाद वे टीवी और रेडियो कमेंट्री की दुनिया में एक जाना-माना नाम बन गए।

## ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीगः तमिल लायंस, भोजपुरी लेपर्ड्स और पंजाबी टाइगर्स की रोमांचक जीत

एजेंसी

**गुरुग्राम।** गुरुग्राम यूनिवर्सिटी में जारी ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग (जीआई-पीकेएल) के खेले गए पुरुष वर्ग के मुकाबलों में तमिल लायंस, भोजपुरी लेपर्ड्स और पंजाबी टाइगर्स ने शानदार जीत दर्ज की। 13 दिवसीय यह लीग पिछले सप्ताह शुरू हुई थी और इसका फाइनल मुकाबला 30 अप्रैल को आयोजित होगा। लीग के पांचवें दिन हरियाणा के वरिष्ठ भाजपा नेता भानी राम मंगला ने उपस्थिति दर्ज कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया और बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया। दिन के पहले मुकाबले में तमिल लायंस ने मराठी वल्चर्स को कड़े मुकाबले में 41-38 से मात दी। तमिल लायंस की ओर से 23 रेड प्वाइंट और तीन सुपर टैकल किए गए, जबकि मराठी वल्चर्स ने 20 रेड प्वाइंट और चार ऑल-आउट के साथ कड़ा मुकाबला किया। अंतिम क्षणों में तमिल की रक्षात्मक मजबूती ने उन्हें तीन अंकों की रोमांचक जीत दिलाई।

दूसरे मुकाबले में भोजपुरी लेपर्ड्स ने तेलुगु पैंथर्स को 43-41 से हराया। मैच बेहद कड़ा रहा, जिसमें तेलुगु पैंथर्स ने अधिक रेड प्वाइंट (27) बटोरे, लेकिन भोजपुरी लेपर्ड्स की टैकलिंग (16 अंक) और निर्णायक ऑल-आउट ने उन्हें जीत दिलाई। दोनों टीमों ने एक-एक सुपर रेड किया, लेकिन भोजपुरी की संतुलित रणनीति ने उन्हें इस हाई-वोल्टेज मुकाबले में जीत दिलाई। दिन के अंतिम मुकाबले में पंजाबी टाइगर्स ने दमदार प्रदर्शन करते हुए हरियाणवी शार्क्स को 64-47 से शिकस्त दी।

## प्रीमियर लीगः इंजरी टाइम में नून्स के गोल से मैनचेस्टर सिटी ने एस्टन विला को 2-1 से हराया

एजेंसी

**मैनचेस्टर।** इंग्लिश प्रीमियर लीग में रात खेले गए रोमांचक मुकाबले में मैनचेस्टर सिटी ने मातेउस नून्स के इंजरी टाइम में किए गए गोल की बदौलत एस्टन विला को 2-1 से हराकर चैंपियंस लीग की दौड़ में अपनी उम्मीदों को मजबूती दी।

**अंतिम लम्हों में छिना विला का जीत का सपना**

मैच ड्रॉ की ओर बढ़ रहा था जब मार्कस रैशफोर्ड के पेनल्टी गोल ने पहले हाफ में बर्नार्डो सिल्वा के शुरुआती गोल को बराबर कर दिया था। लेकिन 94वें मिनट में जेरमी डोकू के शानदार क्रॉस पर नून्स ने गोल दागते हुए सिटी को जीत दिला दी।

**अंकतालिका में तीसरे स्थान पर पहुंची सिटी**

इस जीत के साथ मैनचेस्टर सिटी ने दो स्थान की छलांग लगाते हुए 61 अंकों के साथ तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। हालांकि, उनके पीछे की तीन टीमें एक-एक मैच कम खेली हैं। वहीं, एस्टन विला 57 अंकों के साथ सातवें स्थान पर कायम है और उसकी एतिहाद स्टेडियम में हार की यह लगातार 15वीं शिकस्त है।

**बर्नार्डो सिल्वा ने दिलाई शुरुआती बढ़त**



मैच के 7वें मिनट में उमर मर्मूश ने विला के राइट बैक मैटी कैश को छकाकर गेंद बर्नार्डो सिल्वा को दी, जिन्होंने गोलकीपर एमिली मार्टिनेज के हाथों को चीरते हुए गेंद को नेट में पहुंचा दिया।

**रैशफोर्ड ने पेनल्टी से दिलाई बराबरी**

विला की वापसी 18वें मिनट में हुई जब वीएआर जांच के बाद सिटी के डिफेंडर रूबेन डायस को जैकब रैम्से को पीछे से टक्कर मारने का दोषी पाया गया। इस पर मिली पेनल्टी को मार्कस रैशफोर्ड ने बड़ी सहजता से गोल में बदलते हुए स्कोर 1-1 कर दिया।

## धर्मशाला में चार मई को खेले जाने वाले मैच की टिकटों की ऑनलाइन बिक्री शुरू

एजेंसी

**धर्मशाला।** अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम धर्मशाला में होने वाले आईपीएल के तीन मैचों में से अब तक चार मई को खेले जाने वाले पहले मैच की टिकटें बिकना शुरू हुई हैं। पंजाब और लखनऊ के बीच मैच की टिकटों की ऑनलाइन बिक्री एक दिन चलने के बाद शाम तक कमिंग सून में पहुंच गई है। अब दर्शकों को टिकट खरीदने के लिए इंतजार करना पड़ रहा है।

जबकि पंजाब व दिल्ली व मुंबई के साथ होने वाले मुकाबलों के टिकट अभी तक ऑनलाइन मिलना शुरू नहीं हुए हैं। दूसरी ओर ऑफलाइन कांउटर धर्मशाला में लगाए जाने को लेकर भी कोई सहमति नहीं बन पाई है। ऑनलाइन डिस्ट्रिक ऐप्प में 1200 रुपए से टिकट के दाम शुरू हो रहे हैं। इसके बाद 1500, 3500 और 6000 रुपए से लेकर 20 हज़ार तक दाम पेवेलियन टैरेस और क्लब लॉज के टिकटों के होंगे। इसमें वेस्ट स्टैंड-तीन 1200, ईस्ट स्टैंड-एक 1500, नॉर्थ-एक लेवल-एक व लेवल दो के दो हजार दाम रखे गए हैं। उधर,



वेस्ट स्टैंड-दो 1500 रुपए, नॉर्थ वेस्ट स्टैंड 1500 रुपए, ईस्ट स्टैंड-दो 1500, वेस्ट स्टैंड-एक छह हज़ार, नॉर्थ-एक स्टैंड, 1500, नॉर्थ-दो स्टैंड 1500, ईस्ट स्टैंड-श्री छह हज़ार, नार्थ पैवेलियन 3500, एचपीसीए सचिव अवनीश परमार ने बताया कि टिकटों की ऑनलाइन बिक्री शुरू हो गई है। ऑफलाइन टिकट कांउटर को लेकर फ्रेंचाइजी से बात की जाएगी, जिसके बाद कांउटर लगाया जाएगा।

## 28वीं राष्ट्रीय सीनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में मप्र के पोल वोल्ट खिलाड़ी देव मीणा ने जीता स्वर्ण पदक

एजेंसी

**भोपाल।** दक्षिण भारतीय राज्य केरल के कोच्चि शहर में 21 से 24 अप्रैल तक आयोजित 28वें राष्ट्रीय फेडरेशन सीनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप 2025 में मप्र राज्य एथलेटिक्स अकादमी के पोल वोल्ट खिलाड़ी देव मीणा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उन्होंने प्रतियोगिता में 5.35 मी की छलांग लगाकर नया राष्ट्रीय रिकार्ड अपने नाम किया। देव ने अपना ही राष्ट्रीय रिकार्ड 5.32मी को तोड़कर 5.35 मी. की छलांग लगाते हुये नया राष्ट्रीय रिकार्ड कायम किया है। 28वें राष्ट्रीय फेडरेशन सीनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप 2025 में पोल वोल्ट के मुकाबले खेले गए। इसमें मप्र के देव मीणा ने 5.35 मीटर की छलांग लगाकर स्वर्ण पदक





जीता। वहीं तमिलनाडु के एम. ग्वाथम ने 5.15 मी छलांग लगाकर रजत और तमिलनाडु के ही रीगन जी. ने 5.10 मी छलांग लगाकर कांस्य पदक अपने नाम किया।

**खेल मंत्री सारंग ने बधाई**

प्रदेश के खेल मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने पोल वोल्ट खिलाड़ी देव मीणा को बधाई दी है। उन्होंने देव मीणा की सराहना करते हुये बताया कि उन्होंने अपना ही राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़कर नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया है। देव प्रदेश के नये स्टार बन गये है। उन्होंने 5.35 मी की छलांग लगाकर नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया है। खेल एवं युवा कल्याण संचालक राकेश गुप्ता ने भी देव को बधाई दी है। उन्होंने विभाग द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रशिक्षक की भी सराहना की है, जिनकी देखरेख में देव के कठिन परिश्रम कर लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे है और नये रिकार्ड बना रहे हैं। ईसाइ धर्म गुरू पोप फ्रांसिस का निधन हो जाने के कारण भारत सरकार ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय शोक घोषित किया है।

## आईपीएल न खेल पाने का मलालः क्रिकेटर मोहसिन खान

एजेंसी

**मुरादाबाद।** चोट की वजह से आईपीएल के मौजूदा संस्करण से बाहर हुए संभल के तेज गेंदबाज मोहसिन खान मुम्बई में सर्जरी कराकर घर लौट आए हैं। मोहसिन ने मीडिया कर्मियों से कहा कि आईपीएल न खेल पाने का मलाल तो है, लेकिन अब सिर्फ मैदान से दूर हैं। उनका दिल अब भी टीम के साथ जुड़ा हुआ है। टीम उनके लिए परिवार की तरह है।

टीम ने मुश्किल दौर में भी उनका साथ दिया है। वह रिकवर होकर उसी जोश के साथ मैदान में लौटेंगे। आईपीएल-2025 में चोटिल हुए तेज गेंदबाज मोहसिन खान ने बीते 09 अप्रैल को मुंबई में सर्जरी कराई। अब वह अपने गृह जनपद संभल लौट चुके हैं। डॉक्टरों ने उन्हें पांच महीने तक मैदान से दूर रहने और आराम करने की सलाह दी है। मोहसिन खान को आईपीएल-2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स की ओर से खेलना था। फ्रेंचाइजी ने उन्हें चार करोड़ रुपये में रिटेन किया था। इससे पहले आईपीएल-2022 की नीलामी में मोहसिन को फ्रेंचाइजी ने 20 लाख रुपये में अपनी टीम में शामिल किया था। मोहसिन ने 2022 से 2024 तक कुल 23 मैच खेले और इसमें से कई मैचों में उन्होंने मैच जिताऊ प्रदर्शन किया। इन 23 मैचों में उन्होंने कुल 27 विकेट अपने नाम किए। मोहसिन खान के इस शानदार प्रदर्शन पर फ्रेंचाइजी ने इस वर्ष मेगा नीलामी में उन्हें चार करोड़ रुपये में रिटेन किया था।

# ओल्मो के गोल से बार्सिलोना ने मल्लोर्का को हराया

एजेंसी

**बार्सिलोना।** बार्सिलोना ने ला लीगा खिताब की ओर एक और मजबूत कदम बढ़ाते हुए मंगलवार देर रात मल्लोर्का को 1-0 से हराया। इस जीत के साथ ही शीर्ष पर काबिज बार्सिलोना ने दूसरे स्थान पर मौजूद रियल मैड्रिड पर अपनी बढ़त सात अंकों की कर ली है।

**ओल्मो ने दिलाई अहम जीत, रियल पर दबाव**

स्पेन के इंटरनेशनल डानी ओल्मो के गोल ने बार्सिलोना को जीत दिलाई और मौजूदा चैंपियन रियल मैड्रिड पर दबाव बढ़ा दिया। रियल का अगला मुकाबला बुधवार को गेटाफे के खिलाफ है। हांसी फ्लिक की टीम अब संभावित 'क्वाड्रपल' (चार खिताब) की ओर देख रही है।

**कई स्टार प्लेयर्स को मिला आराम, फाती को मिला पहला स्टार्टः** होने वाले कोपा डेल रे फाइनल से पहले कोच फ्लिक ने कई प्रमुख खिलाड़ियों को आराम दिया। अक्टूबर के बाद पहली बार अंसु



फाती को शुरुआत करने का मौका मिला। वहीं हेक्टर फोर्ट को डिफेंस के बाएं ओर और फेरान टोरेस को चोटिल लेवांडोव्स्की की जगह आक्रमण में उतारा गया।

**पहले हाफ में कई मौके, लेकिन गोल नहीं**

बार्सिलोना ने पहले हाफ में एक के बाद एक मौके बनाए, लेकिन खिलाड़ी लामिन यामाल और फोर्ट के प्रयासों को भी मल्लोर्का के गोलकीपर लियो रोमान ने शानदार तरीके से रोका।

**दूसरे हाफ में ओल्मो ने तोड़ी खामोशी**

दूसरे हाफ की शुरुआत में बार्सिलोना ने पासिंग मूव से खेलते हुए ओल्मो के जरिए बढ़त हासिल की। इसके बाद फाती और यामाल ने बढ़त दोगुनी करने की कोशिश की, लेकिन रोमान की जबरदस्त गोलकीपिंग के आगे बार्सिलोना को एक और गोल नहीं मिल सका।

**रोमान की शानदार वापसी, लेकिन टीम को नहीं मिला पॉइंट**

यह 2025 में मल्लोर्का के लिए रोमान का पहला लीग मैच था और उन्होंने 10 शानदार सेव किए। उन्होंने यामाल, एरिक गार्सिया और लोपेज़ के प्रयासों को रोका। स्टॉपेज टाइम में अब्दोन प्रात्स पर गार्सिया की टक्कर पर मल्लोर्का ने पेनल्टी की मांग की, लेकिन रेफरी ने खारिज कर दिया।

**अब 'एल क्लासिको' पर टिकी निगाहें**

बार्सिलोना के पास अब लीग में पांच मुकाबले बचे हैं, जिनमें 11 मई को रियल मैड्रिड के खिलाफ एल क्लासिको सबसे अहम होगा। इस मुकाबले से खिताब की तस्वीर और साफ हो सकती है।

## आईपीएल मैचों में वाहन पार्किंग की समस्या से मीडियाकर्मी भी परेशान

**लखनऊ।** इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के लखनऊ में हो रहे मुकाबलों में उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ (यूपीसीए) और पुलिस प्रशासन के बीच तालमेल के अभाव में पार्किंग की समस्या विकराल हो रही है और इससे मैच कवर करने वाले मीडियाकर्मी भी खासे परेशान हैं। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में सात मैचों में से चार मुकाबले खेले जा चुके हैं जबकि दिल्ली और लखनऊ के बीच मैच मंगलवार को खेला गया। इसके बाद भी यहां दो और मैच खेले जाने हैं। इन मैचों को देखने को अपने निजी वाहनों से आने वाले दर्शकों को पार्किंग के लिये निर्धारित स्थान से खासी दूरी तय कर स्टेडियम तक आना पड़ रहा है जबकि इससे पहले जगह जगह डायवर्जन के कारण पार्किंग स्थल तक पहुंचने में दो से चार किमी तक की दूरी भीड़ के बीच रेंग रेंग कर तय करनी पड़ रही है।

## आईपीएल 2025: दिल्ली कैपिटल्स ने लखनऊ सुपरजायंट्स को 8 विकेट से हराया

एजेंसी

**लखनऊ।** लखनऊ के इकाना स्टेडियम में खेले गए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 40वें मैच में दिल्ली कैपिटल्स ने केएल राहुल और अभिषेक पोरेल के अर्धशतकों की मदद से लखनऊ सुपरजायंट्स को 8 विकेट से हरा दिया है।लखनऊ ने एडेन मार्करम के अर्धशतक के दम पर 20 ओवर में छह विकेट पर 159 रन बनाए, जवाब में दिल्ली ने 17.5 ओवर में दो विकेट पर 161 रन बनाकर मैच जीत लिया। दिल्ली के लिए राहुल ने 42 गेंदों पर तीन चौकों और तीन छक्कों की मदद से नाबाद 57 रन बनाए, जबकि पोरेल ने 36 गेंदों पर पांच चौकों और एक छक्के की मदद से 51 रन की पारी खेली। वहीं, कप्तान अक्षर पटेल ने 20 गेंदों पर 34 रन की दमदार पारी खेली। जबकि करुण नायर सिर्फ 15 रन का योगदान दे सके। लखनऊ सुपरजायंट्स के लिए दोनों



सफलताएं एडन मारक्रम को मिलीं। इससे पहले, लखनऊ ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट के नुकसान पर 159 रन बनाए। लखनऊ के लिए एडन मारक्रम ने 52 रन और मिचेश मार्श ने 45 रन की पारी खेली। इनके अलावा, आयुष बडोनी ने 36 और डेविड मिलर ने 14 रन बनाए। शेष कोई बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू सका। जबकि कप्तान ऋषभ पंत एक बार फिर बल्ले से विफल रहे और बिना कोई खाता खोले पवेलियन लौटे।

दिल्ली कैपिटल्स की ओर से मुकेश कुमार ने सबसे अधिक 4 विकेट अपने नाम किए। जबकि दुष्मथ चमीरा और मिशेल स्टार्क को एक-एक सफलता मिली।

# ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले अजमीना ने पिता को किया याद, बोलीं- पापा के लिए खेल रही हूं

एजेंसी

**पर्थ।** भारतीय महिला हॉकी टीम की युवा मिडफील्डर अजमीना कुजुर जल्द ही सीनियर टीम में डेब्यू करने जा रही हैं। उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली पांच मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया है। 23 वर्षीय अजमीना ने इस मौके पर अपने पिता को याद करते हुए कहा कि वह अब अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए खेल रही हैं और यही उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा है।भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह पांच मैचों की सीरीज 26 अप्रैल से पर्थ हॉकी स्टेडियम में शुरू होगी। इसमें भारत दो मुकाबले ऑस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ और तीन मुकाबले ऑस्ट्रेलिया की सीनियर टीम के खिलाफ खेलेगा। इस दौरे के लिए अजमीना को सीनियर टीम में मौका मिला है और वे इस मौके को पूरी तरह भुनाने के लिए तैयार हैं। ऑस्ट्रेलिया पहुंचने के बाद अजमीना ने एक बयान में कहा, मैं आभारी हूं कि मुझे अब टीम में शामिल किया गया है। दो साल पहले कैंप में थी लेकिन टीम में नहीं आ पाई थी। अब जब मौका मिला है तो अपना 100 प्रतिशत दूंगी।

हालांकि, अजमीना पहली बार भारतीय सीनियर टीम के लिए फील्ड हॉकी खेलने जा रही हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंच का अनुभव उनके पास पहले से है। 2024 में एफआईएच महिला



हॉकी5एस वर्ल्ड कप में उन्होंने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया था। उस टूर्नामेंट में भारत उपविजेता रहा था। अजमीना ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन गोल किए थे। अजमीना ने बताया, हॉकी5एस वर्ल्ड कप में अमेरिका को हराना सबसे खास लम्हा था। इससे हमारा आत्मविश्वास बहुत बढ़ा, क्योंकि अमेरिका ने इससे पहले ओलंपिक क्वालिफायर में हमारी सीनियर टीम को हराया था। उस जीत से ऐसा लगा कि हमने सीनियर टीम का सम्मान वापस दिलाया।

ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले से ताल्लुक रखने वाली अजमीना 11 साल की उम्र से हॉकी खेल रही हैं। उन्होंने बताया कि उनके पिता और भाई हॉकी खेलते थे। इसी से उनका भी खेल की तरफ रुझान बढ़ा। हालांकि, कोविड-19 महामारी के दौरान 2021 में उनके पिता का निधन हो गया था। अजमीना ने भावुक होते हुए कहा, अब मैं अपने पापा के लिए खेल रही हूं। उन्हें गर्व महसूस करना है मेरे लिए। यही मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा है। अजमीना इस सीरीज में अपने प्रदर्शन से टीम में अपनी जगह पक्की करना चाहती हैं। उन्होंने कहा, मैं अपनी फिटनेस और मिडफील्ड में पासिंग पर खास ध्यान दे रही हूं। इस दौरे पर हर मौके को भुनाना है ताकि एफआईएच हॉकी प्रो लीग में भी टीम का हिस्सा बन सकूं।

# 105 कमरों वाला शापित होटल रयुगयोंग

**वैसे तो उत्तर कोरिया अपने अजीबोगरीब कानूनों और मिसाइलों के परीक्षण के वजह से पूरी दुनिया में मशहूर है। लेकिन इसके साथ ही यहां ऐसी कई चीजें हैं, जो लोगों को हैरान करती हैं। इन्हीं में से एक है पिरामिड जैसे आकार और नुकीले सिरे वाली एक गगनचुंबी इमारत, जो एक होटल है। इस होटल का आधिकारिक नाम रयुगयोंग है, लेकिन इसे यू-क्यूंग के नाम से भी जाना जाता है।**

उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयोंग में 330 मीटर ऊंचे इस होटल में कुल 105 कमरे हैं। लेकिन आज तक कोई भी व्यक्ति यहां ठहरा नहीं है। बाहर से बेहद ही शानदार, लेकिन वीरान से दिखने वाले इस होटल को 'शापित होटल' या 'भुतहा होटल' के नाम से जाना जाता है। इस होटल को '105 बिल्डिंग' के नाम से भी जाना जाता है। कुछ साल पहले अमेरिकी मैगजीन ईस्क्वाइयर ने इस होटल को 'मानव इतिहास की सबसे खराब इमारत' करार दिया था। इस होटल के निर्माण में बहुत पैसे खर्च हुए हैं। जापानी मीडिया के मुताबिक, उत्तर कोरिया ने इसके निर्माण पर कुल 750 मिलियन डॉलर यानी करीब 55 अरब रुपये खर्च किए थे। यह रकम उस समय उत्तर कोरिया की जीडीपी की दो फीसदी थी। लेकिन फिर भी आज तक यह होटल शुरू नहीं हो पाया। वैसे तो इस होटल को दुनिया के सबसे ऊंचे होटल के रूप में बनाया जा रहा था, लेकिन अब इसकी एक अलग ही पहचान बन गई है। दुनिया इस होटल को अब 'धरती की सबसे ऊंची वीरान इमारत' के तौर पर जानने लगी है। इस खासियत की वजह से इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है। कहते हैं कि अगर यह होटल तय समय पर पूरी तरह से बन गया होता, तो यह दुनिया की सातवीं सबसे ऊंची इमारत और सबसे ऊंचे होटल के तौर पर जाना जाता है। इस इमारत का निर्माण कार्य साल 1987 में शुरू हुआ था। बीबीसी के मुताबिक, तब यह उम्मीद जताई गई थी कि यह होटल दो साल में बनकर तैयार हो जाएगा। लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। कभी इसे बनाने के तरीके के साथ दिक्कत हुई, तो कभी निर्माण सामग्री के साथ समस्या आ गई। इसके बाद साल 1992 में आखिरकार इस होटल के निर्माण कार्य को रोकना पड़ा। क्योंकि उस समय उत्तर कोरिया आर्थिक रूप से काफी कमजोर हो गया था।

हालांकि, साल 2008 में इसे बनाने का काम फिर से शुरू हुआ। पहले तो इस विशालकाय होटल को व्यवस्थित करने में ही करीब 11 अरब रुपये खर्च हो गए। इसके बाद फिर निर्माण कार्य शुरू हुआ। पूरी इमारत में शीशे के पैनल लगाए गए और बाकी के छोटे-मोटे काम कराए गए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, साल 2012 में उत्तर कोरिया के प्रशासन ने ये एलान किया था कि होटल का काम 2012 तक पूरा हो जाएगा, लेकिन यह हो नहीं पाया। इसके बाद भी कई बार उम्मीदें लगाई गईं कि होटल इस साल शुरू होगा, उस साल शुरू होगा, लेकिन हकीकत तो यही है कि आज तक यह होटल खुल नहीं पाया है। कहते हैं कि अभी भी इस होटल का काम आधा-अधूरा ही है।

**वैसे तो हम सब आईलैंड का नाम सुनते ही सोच लेते है कि वहां जाना रोमांच से भरा होगा। विश्व में कई ऐसे आईलैंड भी मौजूद है, जहां साल भर लोगों का आना-जाना लगा रहता है, लेकिन दुनिया में एक आइलैंड ऐसा भी है जहां सिर्फ सांपों का बसेरा है, यहां इंसानों का आना-जाना मना है। इस आइलैंड का नाम स्नेक आईलैंड है, जिसे इल्हा दा क्यूइमादा ग्राडें भी कहा जाता है। वैसे तो ब्राजील का यह आइलैंड बहुत खूबसूरत है, लेकिन यह सिर्फ 43 हेक्टेयर का एक छोटा आकार का द्वीप है। द्वीप में हरीभरी चट्टानें बड़ी तदाद में मौजूद है जो इसकी खूबसूरती को और बढ़ाता है। आइए जानें क्या है इस आईलैंड में खास**

## स्नेक आईलैंड - इल्हा दा क्यूइमादा ग्राडें

# यहां इंसानों का आना-जाना मना है

इस आइलैंड की खास बात यह है कि यहां पाए जाने वाले सांप विश्व में कहीं नहीं पाए जाते। दुनिया के सबसे जहरीले सांपों का बसेरा भी इसी आइलैंड पर है। ऐसा कहा जाता है कि इस आइलैंड से इंसान का जिंदा लौटकर वापस जाना लगभग नामुमकिन है। बता दें कि आइलैंड पर ब्राजीलियाई नौसेना को जाने की अनुमति दी गई हैं। दरअसल, सांप की बढ़ती संख्या को देखते हुए यहां लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध हैं। जानकारों की माने तो स्नेक आइलैंड पर वाइपर, गोल्डन लांसहेड जैसे खतरनाक प्रजाति वाले सांप भी मिलते हैं। वाइपर सांप उड़ने में सक्षम होते हैं, इसलिए इन्हें खतरनाक माना गया है। कहा जाता है कि इन सांपों का जहर इतना खतरनाक है, जो इंसान का मांस तक गाला सकता है, इस बात से आप यह अनुमान लगा सकते है की यहां मौजूद सांप कितने खतरनाक है। यहां अलग- अलग प्रजाति के 4 लाख से भी ज्यादा सांप रहते है। यहां पाए जाने वाले सांप बेहद दुर्लभ है। इनकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में लाखों रुपए तक हैं। इस कारण कई तस्कर यहां आकर अवैध रुप से सांपों को पकड़ते है और उन्हें अंतराष्ट्रीय बाजार में बेच देते है।

### सांपों वाले इस द्वीप का राज

जब समुद्र का जल स्तर भूमि से ढकनें लगा था, तब सांप इस द्वीप पर फंस गए थे, यह द्वीप ब्राजील से जुड़ा हुआ था। वहां के मौजूदा प्राकृतिक स्थिति में सांप ढल गए और धीरे-धीरे सांपों की संख्या बढ़ती चली गई, और फिर लोगों के लिए यहां रह पाना मुश्किल हो गया,तब से ही इसे स्नेक आइलैंड कहा जाने लगा।

### कौन सा सांप है IUCN की रेड लिस्ट में शामिल

स्नेक आईलैंड में रहने वाले सांप की एक प्रजाति जिसें गोल्डन लांसहेड कहा जाता है, वह IUCN (प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ) की रेड लिस्ट में शामिल है। बता दें इस सांप की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 18 लाख रुपए तक है।

### आइलैंड का महत्व

इस आइलैंड में सांपों के बसे होने के कारण यहां इंसान घुसपैठ नहीं कर सकते, इसलिए यह आइलैंड़ जनवरों के लिए सुरक्षित है। इसके साथ ही प्रकृति की संरचना के लिए भी यह आइलैंड बहुत महत्वपूर्ण है।

### क्या होती है IUCN की रेड लिस्ट

IUCN एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो प्रकृति के संरक्षण के लिए काम करती है। IUCN की रेड लिस्ट में जिन जानवरों को रखा गया,उनकी संख्या पूरे दुनिया में बहुत कम है,और अगर इसी तरह से उनकी संख्या कम होती गई, तो एक दिन वो लुप्त हो जाएंगे। जैसे डायनासोर अब पृथ्वी पर नहीं रहे।

# इस कुएं को कहा जाता है नरक का द्वार, आजतक कोई नहीं जान पाया इसका रहस्य

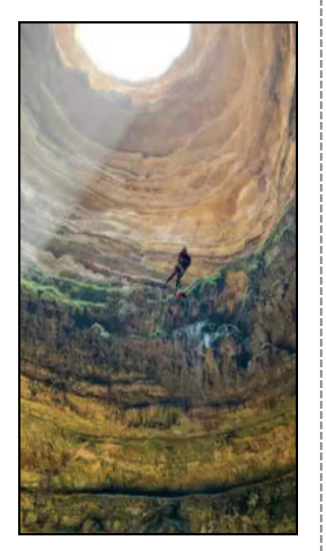

हमारी पृथ्वी पर ऐसी तमाम चीजें हैं जिनके रहस्य को आजतक कोई नहीं जान पाया.आज हम आपको एक ऐसे ही कुएं के बारे में बताने जा रहे हैं जिसे नरक का द्वार कहा जाता है.दुनियाभर के वैज्ञानिकों के लिए ये कुआं आज भी रहस्य बना हुआ है क्योंकि इसके बारे में किसी को ज्यादा जानकारी नहीं है. नरक का द्वार कहा जाने वाला ये कुआं यमन के बरहूत में स्थित है.इसे नरक का रास्ता भी कहा जाता है.इस जगह को दुनियाभर में इसी नाम से जाना जाता हैतमाम लोगों का कहना है कि इस रहस्यमयी गड्ढे के अंदर पहले शैतानों को कैद किया जाता था.वहीं कुछ लोग ये भी मानते हैं कि इस कुएं के अंदर आज भी भूत रहते हैं.इन सब के बावजूद वैज्ञानिकों की एक टीम ने इसके अंदर प्रवेश किया है.

बता दें कि ये स्थान यमन के एक रेगिस्तान के बीच में स्थित है.इस जगह पर एक बहुत बड़ा कुआं है.लंबे समय से ये कुआं रहस्यमयी बना हुआ था.हाल ही में इस कुएं के भीतर ओमान के 8 लोगों की एक टीम ने प्रवेश किया. इसके भीतर प्रवेश करने के बाद उन्होंने ये जानने की कोशिश की कि वास्तविकता में इस कुएं के अंदर क्या है? लंबे समय से यहां के स्थानीय लोग इस बात को कहते आ रहे थे कि इस जगह पर जिन और भूत रहते हैं.गौरतलब बात है कि स्थानीय लोगों के अंदर इस जगह को लेकर इतना डर है कि वो इसके बारे में बात करने से भी डरते हैं.

संबंधित कहानियां

जब वैज्ञानिकों की टीम ने कुएं के अंदर प्रवेश किया तो उनको किसी भी प्रकार का जिन और भूत उसमें देखने को नहीं मिला.हालांकि कुएं के अंदर सांप और गुफाओं वाले मोती जरूर मिले.बता दें कि ये गड्ढा करीब 30 मीटर चौड़ा है और इसकी गहराई 100-250 मीटर तक है. ओमान केव एक्सप्लोरेशन की टीम ने इसके अंदर प्रवेश करने के बाद उसे अच्छे से एक्सप्लोर किया.

ओमान की जर्मन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर मोहम्मद अल किंदी बताते हैं कि गुफा के भीतर कई सांप थे, पर उन्होंने किसी पर हमला नहीं किया.गुफा की दीवारों पर कई बनावट भी दिखीं थीं.वैज्ञानिकों का कहना है कि ये गड्ढा लाखों साल पुराना है.इसमें काफी रिसर्च की जरूरत है.हालांकि गड्ढे के एकदम नीचे रोशनी नहीं पहुंचती है.जिसके चलते वहां गहरा अंधेरा है.

# गुलाब जामुन का पेड़

**गरमी की छुट्टियां होते ही अंशज अपने ननिहाल बीकानेर आ गया। पिछली बार जब वह आया था, तब छोटा था और इस बार कुछ बड़ा और समझदार हो गया है। छोटा था, तब उसे हर काम कहना पड़ता था। अब कुछ जरूरी काम वह बिना कहे ही करने लगा है। ननिहाल में पहुंचते ही उसने नाना-नानी के पैर छुए। मम्मी हंसकर बोलीं, अब तुम सचमुच बड़े हो गए हो।**

अंशज को भूख लग गई थी। वह सोचने लगा कि उसे क्या कहना चाहिए और किसे कहना चाहिए। बड़े जो होते हैं, वे भूख लगी है ऐसे सीधे-सीधे कभी किसी से कहते नहीं हैं।

अंशज ने अपनी मम्मी से पूछा, मम्मी, मैं बड़ा हूं या छोटा?

मम्मी ने कहा, क्यों? ऐसे क्यों पूछ रहा है?

अंशज ने अपनी मम्मी के कान में धीरे से बोला, मुझे भूख लगी है और मैं छोटा हूं। बड़े तो ऐसा बोलते नहीं ना कि भूख लगी है।

मम्मी हंसने लगीं और बोलीं, चल, मैं तुझे खाने को कुछ देती हूं। अंशज को उसकी मम्मी प्यार से अंशी कहती थीं।

नाना और नानी को अंशी की बात जब उसकी मम्मी ने बताई, तो वे भी हंसने लगे। नानाजी हाथ में मिठाई का डिब्बा लाए और बोले, ले अंशी, तेरे लिए। अंशज ने जैसे ही नानाजी के हाथ में रसगुल्लों का डिब्बा देखा, तो उछल पड़ा। अरे नानाजी, रसगुल्ले। मैं सारे खा जाऊंगा। वैसे तो मुझे गुलाब जामुन बहुत पसंद हैं। आज रसगुल्ले ही ठीक हैं। अंशज डिब्बा नानाजी के हाथ से लेने लगा, तो मम्मी ने उसे टोका, नहीं अंशी, ऐसे तुम कपड़े गंदे कर लोगे। मैं तुम्हें खिलाती हूं। अंशज तो यही चाहता था। उसकी तो नानाजी के घर आते ही मौज लग गई। अंशज ने बड़े-बड़े तीन रसगुल्ले खाए। वह तो चार भी खा सकता था, पर मम्मी ने बीच में ही कह दिया, अभी बस इतने ही, बाकी बाद में। ये कहीं भागे नहीं जा रहे हैं।

नानीजी बोलीं, बीकानेर के तो रसगुल्ले और भुजिया नमकीन बहुत प्रसिद्ध हैं।

अंशज तुरंत बोला, देखो नानीजी, मैं छोटा हूं और कह सकता हूं, रसगुल्ले तो खा लिए, पर भुजिया-नमकीन कहां हैं?

नानीजी ने कहा, अरे भुजिया और नमकीन सब मिलेगा। मैं तुम्हारे मामा से कह दूंगी वह तुम्हारे लिए गुलाब जामुन भी ले आएगा। अब तो खुश हो?

अंशज ने भुजिया और नमकीन का भी आनंद लिया। शाम को घर लौटते हुए उसके मामा गुलाब जामुन लाना नहीं भूले।

मामाजी से अंशज ने पहला सवाल किया, मामाजी, आप गुलाब जामुन कहां से लाए?

मामाजी ने मुसकराते हुए कहा, अरे, तुम्हें नहीं पता? मेरे ऑफिस में गुलाब जामुन का पेड़ है। जितने चाहे तोड़कर घर ले आओ। मेरे साहब बहुत अच्छे हैं। उन्होंने तो यहां तक बोला है कि तुम अपने भांजे के लिए गुलाब जामुन के बीज ले जाना और उसके घर लगवा देना।

सच! पर उन्हें कैसे पता चला कि मुझे गुलाब जामुन पसंद हैं?

जब तुम्हारी नानी मुझे गुलाब जामुन लाने के लिए कह रही थीं, तब इतने जोर से बोल रही थीं कि मेरे पास बैठे साहब ने भी सुन लिया था। अब बीच में मम्मी बोलीं, अच्छा है ना, वह तुम्हारे लिए गुलाब जामुन के बीज देंगे, फिर तुम भी गुलाब जामुन का पेड़ लगा लेना। हां मम्मी, कितना अच्छा होगा। फिर जब मेरी इच्छा होगी तब फटाक से गुलाब जामुन तोड़ा और मुंह में। कितना मजा आएगा। मामाजी बोले, वह मजा तो जब आएगा, तब आएगा, अभी तो मजा लो। यह लो खाओ गुलाब जामुन।

अगले दिन नानाजी ने अंशज को बताया कि कल सब उसके साथ मजाक कर रहे थे। असल में गुलाब जामुन का कोई पेड़ होता ही नहीं। हां, गुलाब का पौधा और जामुन का पेड़ जरूर लगाया जाता है।

अंशज ने नानाजी से कहा, नानाजी, फिर तो हो गया काम। हम गुलाब का पौधा और जामुन का पेड़ एक साथ लगा देंगे, फिर तो गुलाब जामुन हो जाएंगे ना?

नानाजी हंसने लगे और अपनी गरदन हिलाकर कहा, नहीं-नहीं। अंशज बोला, कोई बात नहीं नानाजी! और सुन रही हो नानीजी, मैं जब पूरी तरह बड़ा हो जाऊंगा, तब गुलाब जामुन के पेड़ का आविष्कार करूंगा।

अंशज की मम्मी बोलीं, हां, यह हुई ना बात। तुम अभी से इसके बारे में सोचने लग जाओ। सोचना यह है कि क्या हो सकता है और क्या नहीं हो सकता है।

नानाजी हंसते हुए बोले, दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो नहीं हो सकता है। सब कुछ हो सकता है। नानीजी कहां चुप रहने वाली थीं, वह भी बोलीं, जरूर हो सकता है बेटा, असंभव भी संभव हो सकता है। मेरा अंशज जरूर आसमान से तारे तोड़कर लाएगा। अंशज ने बस इतना कहा, देखना, मैं हर असंभव को संभव करूंगा। मुझे बस पूरा बड़ा होने दो।

## 20 साल और 10 फिल्में...

# नुसरत भरुचा

## 100 करोड़ छापने वाली वो एक्ट्रेस, जिसे बड़ी पिक्चरों में नहीं मिल रहा काम, छलका दर्द

बॉलीवुड एक्ट्रेस नुसरत भरुचा इस वक्त अपनी फिल्म छोरी को लेकर लोगों से वाहवाही बटोर रही हैं. अपनी एक्टिंग के जरिए एक्ट्रेस ने हर बार लोगों का दिल जीता है. हाल ही में एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू के दौरान अपनी अभी तक की फिल्मी जर्नी के बारे में बात की है. नुसरत ने अपने करियर में सही मुकाम हासिल न करने पर बॉलीवुड की खामियों के बारे में बात की है. हालांकि, एक्ट्रसे ने कई सारी कमाल की फिल्मों में काम किया है.प्यार का पंचनामा, सोनू की टीटू की स्वीटी से लेकर और भी कई सारी ऐसी फिल्में हैं, जिसमें नुसरत ने कमाल की परफॉर्मेंस दी है. हालांकि, 20 सालों में भी एक्ट्रेस को वो मुकाम हासिल नहीं हो पाया है, जिसकी वो चाह रखती हैं. एक्ट्रेस ने बताया कि हिट फिल्मों के बाद बड़े बैनर के साथ काम करने के

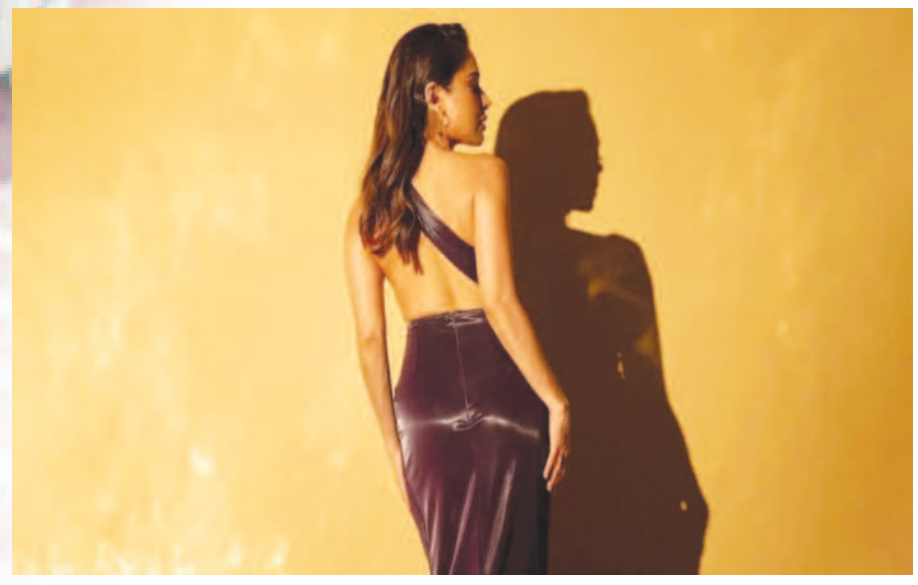

लिए उन्हें काफी मशक्कत करना पड़ा है. अपनी बातचीत के दौरान एक्ट्रेस ने इंडस्ट्री में सेलेक्टेड टैलेंट को काम देने की तरफ भी इशारा किया है.

**20 साल में की 10 फिल्में**

हाल ही में नुसरत ने पिंकविला से बातचीत के दौरान कहा कि मैं 20 साल में 10 तस्वीरें ले आई, फिर भी मैं उन्हीं जगहों पर खड़ी हूं, जहां मैं पहले थी. एक्ट्रेस ने फिल्में मिलने को लेकर श्रद्धा कपूर का उदाहरण लिया और कहा कि मुझे ऐसी बड़ी फिल्में नहीं मिलती. श्रद्धा के पास हमेशा प्रोजेक्ट होते हैं और बड़े प्रोजेक्ट होते हैं. एक्ट्रेस ने डायरेक्ट तो नहीं कहा, लेकिन उन्होंने इस तरफ इशारा किया कि इंडस्ट्री में ब्रांडिंग और रिश्ते ज्यादा मायने रखते हैं.

**फिल्में मिलना है मुश्किल**

नुसरत ने टीवी शो के जरिए इंडस्ट्री में कदम रखा था. हालांकि, उन्हें उनकी फिल्म प्यार का पंचनामा में लोगों ने बहुत पसंद किया था. लोग के बीच पसंद बनने के बावजूद उन्हें फिल्मों के लिए मेहनत करनी पड़ी. एक्ट्रेस ने बताया कि किसी भी डायरेक्टर से मिल पाना या उनका नंबर मिलना उन लोगों के लिए काफी मुश्किल का काम है, जो कि इस इंडस्ट्री से नहीं हैं. नुसरत ने खुलासा किया कि उन्होंने कबीर खान को काम के लिए मैसेज किया था.

# श्वेता तिवारी

## के BOSS से भिड़ेंगी बेटी पलक! मां को जिसने दिया मौका, उसी के लिए बन रहीं खतरा!

44 साल की श्वेता तिवारी अक्सर सुर्खियों में रहती हैं. यूं तो बहुत कम ही ऐसा होता है, जब बात उनके प्रोजेक्ट्स की हो. क्योंकि लोग उनकी फिटनेस देखकर ज्यादा इम्प्रेस रहते हैं. टीवी की पॉपुलर एक्ट्रेस लंबे वक्त से किसी शो में नहीं दिखी हैं. हालांकि, आखिरी बार वो 'सिंघम अगेन' में नजर आईं थी. अजय देवगन की टोली में एक पुलिसवाली बनी थीं, जो पूरी टीम के साथ जा जाकर केस सुलझा रही थीं. अब अपनों के खिलाफ एक्ट्रेस श्वेता तिवारी की बेटी उतर आई हैं. पलक तिवारी की 1 मई को फिल्म आ रही है, जिसमें वो भूतनी तो नहीं बन रहीं, लेकिन उनका भूतनी वाला रूप दिखा है. श्वेता तिवारी 'सिंघम अगेन' से पहले भी रोहित शेट्टी के साथ काम कर चुकी हैं. वो वेब सीरीज 'इंडियन पुलिस फोर्स' में दिखाई दी थीं. हालांकि, उसमें विवेक ओबेरॉय की पत्नी का किरदार निभाया था. लेकिन अजय देवगन ने तो उन्हें पुलिसवाली बना दिया. अब उनकी बेटी बॉस सिंघम से ही भिड़ने का प्लान कर चुकी हैं.

**श्वेता तिवारी के बॉस से भिड़ेंगी उनकी बेटी**

अजय देवगन की फिल्म Raid 2 1 मई को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है. फिल्म का पहला पार्ट सालों पहले आया था, जब अमय पटनायक के रोल में वो छा गए. अब एक नए ऑपरेशन के लिए अजय देवगन तैयार हो गए हैं. फिल्म का ट्रेलर काफी जबरदस्त है. पहले फिल्म का किसी से क्लैश नहीं हो रहा था. लेकिन अब उनकी संजय दत्त की फिल्म 'भूतनी' से टक्कर होने वाली है. दरअसल पहले यह फिल्म 18 अप्रैल को आने वाली थी, लेकिन आखिर में इसकी रिलीज को आगे बढ़ा दिया गया. संजय दत्त की इस फिल्म से पलक तिवारी भी वापसी कर रही हैं.

श्वेता तिवारी को 'सिंघम अगेन' में अजय देवगन ने ही बड़ा मौका दिया था. वो पिक्चर में उनके सीनियर बने थे. बॉस की बात को फॉलो करते हुए श्वेता तिवारी फिल्म में विलेन्स को ढूंढती हैं. हालांकि, उस फिल्म में स्क्रीन टाइम काफी कम था. वहीं संजय दत्त के साथ पलक हैं. देखना होगा 1 मई वाली बाजी उनकी बेटी जीतती हैं या फिर अजय देवगन की फिल्म.

**पलक तिवारी के प्रोजेक्ट्स**

**श्वेता तिवारी की बेटी पलक ने सलमान** खान की फिल्म से हिंदी डेब्यू किया था. वो 'किसी का भाई किसी की जान' में दिखी थीं. लेकिन यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर पिट गई. अब सलमान खान के भाई और दोस्त संजय दत्त की फिल्म में आ रही हैं.

## रिपोर्ट करें या ब्लॉक...फर्जी सोशल मीडिया अकाउंट्स को लेकर सोनू निगम ने फैंस से की गुजारिश

बॉलीवुड के मशहूर सिंगर सोनू निगम ने एक से एक बेहतरीन गाने गाए हैं. उनकी आवाज का जादू आज भी फीका नहीं पड़ा है. लेकिन इस वक्त सिंगर सोनू अपने गानों की वजह से नहीं बल्कि अपने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए सुर्खियों का हिस्सा बने हुए हैं. सोनू निगम ने सोशल मीडिया पर चल रही धोखेबाजी को लेकर एक पोस्ट करते हुए अपने सभी फैन्स से गुजारिश की हैं कि वो इससे बचें और सावधान रहें. सिंगर के मुताबिक उनके नाम का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है.सोनू निगम ने गंभीरता के साथ कहा है कि उनके और उनकी मैनेजमेंट टीम का खुद को सदस्य बताते हुए कुछ लोग धोखाधड़ी कर रहे हैं. सिंगर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट शेयर किया और लिखा, जरूर...मुझे पता चला है कि कोई ऑनलाइन मेरी पहचान का गलत इस्तेमाल कर रहा है. इस बात को नोट कर लें कि मेरी टीम किसी भी कारण के चलते किसी से भी संपर्क नहीं कर रही है. अगर कोई मेरी मैनेजमेंट टीम से होने का दावा करता है और आपसे कॉन्टेक्ट करता है, तो आप उससे सावधान रहें.

सिंगर ने आगे अपने पोस्ट में लिखा कि वो पिछले आठ साल से ट्वीटर या एक्स अकाउंट पर नहीं हैं. कुछ अकाउंट हैं, जिन्हें लोग मेरा समझते हैं वो किसी और के द्वारा चलाए जा रहे हैं और विवादित चीज़ें मेरे नाम से पोस्ट करते हैं. अगर आपको मेरे नाम से कोई फर्जी अकाउंट या मैसेज दिखे तो रिपोर्ट या उसे ब्लॉक करें. उन लोगों का शुक्रिया जिन्होंने मुझे इस इशू के बारे में बताया. साथ ही सोनू निगम ने अपने सभी फैन्स को थैंक्स भी कहा.

सोनू निगम से पहले मशहूर सिंगर श्रेया घोषाल का एक्स अकाउंट भी हैक हो गया था. हालांकि, श्रेया ने प्लेटफॉर्म की मदद से अपने अकाउंट को सिक्योर कर लिया था. सोनू से पहले कई सितारे इस तरह के पोस्ट शेयर कर चुके हैं. जहां सेलिब्रिटी के नाम का इस्तेमाल करते हुए लोगों से पैसे ठगे जाते हैं.

## 18 साल पहले आई वो फिल्म, जिसमें सलमान और गोविंदा की फीस से परेशान हो गए थे डायरेक्टर

साल 2007 में फिल्म 'पार्टनर' रिलीज हुई थी, जिसमें गोविंदा और सलमान खान लीड रोल में थे. इनकी जोड़ी को खूब पसंद किया गया और बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्म सुपरहिट साबित हुई थी. फिल्म के सभी गाने भी हिट थे, लेकिन 'सोनी दे नखरे' में जो वाइब्स लोगों को आई उसने सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया था. बताया जाता है कि इस गाने की शूटिंग में डेविड धवन को सबसे ज्यादा परेशानी आई थी.स्क्रीनप्ले राइटर आलोक उपाध्याय, जिन्होंने डेविड धवन के साथ कई फिल्में की हैं, उन्होंने फिल्म पार्टनर से जुड़ा अपना अनुभव शेयर किया है. इंडियन एक्सप्रेस के मुताबिक, आलोक उपाध्याय ने बताया कि सलमान खान और गोविंदा की ज्यादा फीस से डेविड धवन परेशान से हो गए थे.

**'सोनी दे नखरे' की शूटिंग में आई थी मुश्किलें ?**

राइटर आलोक उपाध्याय ने बताया कि किस तरह डेविड धवन शूटिंग के दौरान परेशान हो गए थे और फिर उन्होंने बाद में किस बात का ध्यान रखा था. आलोक उपाध्याय ने कहा, कमर्शियल सिनेमा के फिल्ममेकर के तौर पर डेविड धवन सभी की उम्मीदों पर खरे उतरते हैं. शूटिंग के दौरान उनके दिमाग में एडिटिंग और दूसरे पहलू जैसी चीजें भी चलती रहती थीं. वो सिनेमा के बारे में सबकुछ जानते हैं और फिल्म बनाते समय उनका लक्ष्य रहता है कि फिल्म अच्छी कमाई करे और उसे वो उसी तरह से बनाते भी हैं. लीड सितारों से उनका व्यवहार जैसा भी हो लेकिन जब वो कैमरे के सामने होते हैं तो डेविड बहुत ही स्ट्रिक्ट इंसान हैं.

आलोक उपाध्याय ने आगे कहा, आपको फिल्म पार्टनर का एक वाक्या बताता हूं, जिसमें सलमान खान और गोविंदा लीड एक्टर्स थे. फिल्म के गाने 'सोनी दे नखरे' की शूटिंग हो रही थी, और कोरियोग्राफर ने 2-3 लंबे शॉट्स लिए थे. डेविड साहब मेरे पास आए और उन्होंने कहा कि एक एक्टर ने 10 करोड़ चार्ज किए और दूसरे ने 5 करोड़ चार्ज किए हैं. ऐसे में ये 15 करोड़ खड़े हैं और इसलिए उनके सिर्फ पैर दिखाओ या इनका सिर्फ क्लोजअप ही लो.

**कोरियोग्राफर से क्या बोले थे डेविड धवन ?**

आलोक उपाध्याय ने आगे कहा, डेविड साहब ने कोरियोग्राफर को बुलाया और कहा-आप 50 रुपये के फूल के बर्तन, 10 रुपये की सजावट की शूटिंग कर रहे हैं. मेरी फिल्म इन चीजों से पैसा नहीं कमा पाएगी. जो 15 करोड़ के दो खड़े हैं, उनके क्लोज-अप मारो. वे दोनों कैमरे के सामने चेहरा बना सकते हैं और इसी पर पब्लिक ताली-सीटी बजाएगी, जिससे मेरी फिल्म पैसा भी कमाएगी.